सूर्य

और तुम देखोगे लोगों को ईश्वरधर्म में समूह के समूह प्रवेश होते हुए
(सूरः अल्नसर- कुरान)

चंद्रमॉ

चंद्रमॉ और सूर्य में मानव प्रतिबिंब (तस्वीर) का रहस्य! जो कि नासा (NASA),और अनेकों विश्वस्नीय संस्थाओं से प्रकाशित हुआ है

दीन-ए-इलाही

''यह पुस्तक प्रत्येक धर्म, प्रत्येक सम्प्रदाय ओर प्रत्येक मनुष्य के लिये विचारयोग्य और अन्वेषणयोग्य है। और अध्यात्मवाद् विरोधियों के लिये एक चैलेंज है।''

लेखक

सत्पुरूष आर० ए० गोहर शाही

सतपुरुष आर० ए० गोहर शाही

लेखक दीन-ए-इलाही

व र ऐतन्नास यद्‌खुलून फ़ीदीनिल्लाहे अफ़वाजा (सूरः अल्नसर--- कुरान)
अनुवाद : और तुम देखोगे लोगों को ईश्वरधर्म में समूह के समूह प्रवेश होते हुए।

ईश्वरधर्म

(दीन-ए-इलाही)

ईश्वर के गुप्त रहस्य

इस कृत के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं।

यह पुस्तक ईश्वर के खोजियों और ईश्वर से प्रेम करने वालों के लिये एक उपहार है।

सूचना वर्णन कर्ताओं (ज़ाकरीन) के लिये:

यह पुस्तक सत्यप्रियों, न्यायप्रकृति लोगों और ईश्वर के इच्छुकों तक पहुँचानी है।
सृष्टिकालीन द्वयवादी इस को नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे।

समाहर्ता

मु० यूनुस अल्गोहर (लंदन) ..... अमजद अली गोहर (अबुधाबी)

मेहदी फाउंडेशन इंटर नेशनल

Contact: amjadgohar75@yahoo.com, younus38@hotmail.com,shahi_gulam@yahoo.com

यह वह **गोहर शाही** हैं जिन्होंने तीन वर्ष तक सिहवन शरीफ़ की पहाड़ियों और लाल बाग़ में ईश्वर के इश्क़ की ख़ातिर चिल्ला कशी करी। ईश्वर को पाने की ख़ातिर दुनिया छोड़ी, फिर ईश्वर के आदेश ही से पुनः दुनिया में आये। लाखों दिलों में ईश्वर का भजन (ज़िक्र) बसाया और लोगों को ईश्वर के प्रेम की ओर प्रवृत्त (राग़िब) किया। प्रत्येक धर्म वालों ने गोहर शाही को मसजिदों, मंदिरों, गुरूद्वारों और गिर्जा घरों में आध्यात्मिक अभिभाषण के लिए आमंत्रित किया और हृदयभजन (ज़िक्र क़ल्ब) प्राप्त किया अगणित स्त्री पुरूष इनकी शिक्षा से गुनाहों से दूर (ताएब) हुए और ईश्वर की ओर झुक गये। अगणित असाध्य रोगी इनके आध्यात्मिक उपचार से स्वस्थ हुए, फिर ईश्वर ने इनका चेहरा चंद्रमाँ पर दिखाया, फिर शिव लिंग (हज्र अस्वद) में भी इनकी तस्वीर (प्रतिबिंब) प्रकट हुई, पूरी दुनिया में इनकी ख्याति हो गई। परंतु चक्षु विहीन विद्वानों (मौल्वियों) को और सन्तों (वलियों) से ईर्ष्या एवं द्वेष रखने वाले मुसलमानों को यह व्यक्ति पसन्द न आया, इनकी पुस्तकों की लिखावटों में ग़बन करके इनपर अधर्म (कुफ़्र) और वध्य (वाजिबुल क़त्ल) के धर्माज्ञा (फ़तवे) लगाये। मानचेस्टर में इनके निवास स्थान पर पेट्रोल बम फेंका, कोटरी में अभिभाषण के मध्य इन पर हैण्ड ग्रेण्ड बम से आक्रमण किया गया। लाखों रूपये इनके शीर्ष का मूल्य रखा गया। पाँच प्रकार के प्रचंड झूटे मुक़दमे, देश के अंदर इनको फँसाने के लिये स्थापित किये गये। नवाज़ शरीफ़ की वजह से सिंध सरकार भी सम्मिलित हो गई थी दो केस क़त्ल, अवैध अस्त्र, अवैध अधिकार की धारा भी लगाई गई। अमरीका में भी एक स्त्री से अत्याचार और अकारण बंधक का मुक़दमा बनाया गया। अनैतिक पत्रिकारिता (ज़र्द सहाफ़त) ने इन्हें संसार में खूब बदनाम किया, परंतु अन्त में न्यायालयों ने सुनवाई और तहक़ीक़ात के बाद समस्त मुक़दमे झूटे मानते हुए ख़ारिज कर दिये और ईशवर ने अपने इस मित्र को हर विपत्ति से बचाये रखा।

इन मुक़दमों के बारे में हाई कोर्ट की रिपोर्ट अवलोकन हो कि ‘‘गोहर शाही को साम्प्रदायिक्ता (फ़िरक़ा वारियत) के कारण से बार बार फँसाया जाता है’’

ORDER SHEET

IN THE HIGH COURT OF SINDH HYDERABAD CIRCUIT

Cr.B.A.No.159 of 1999.

APPELLANT
PETITIONER
PLAINTIFF/DECREE HOLDER
APPLICANT

VERSUS

RESPONDENT
DEFENDENT
OPPONENT
JUDGEMENT DEBTOR

Serial No.	Date	Order with signature of Judge
		1. FOR ORDERS ON MA NO.238/99.(If granted). 2. FOR ORDERS ON MA NO.239/99. 3. FOR ORDERS ON MA NO.240/99. 4. FOR HEARING.
		18.03.1999.
		Mr.Qurban Ali Choohan Advocate for the applicant Mr.Behadur Ali Baloch A.A.G.
		1. Granted.
		2. Granted subject to all just exceptions.
		3. Granted as the bail application No.88/99 has also been moved by the present applicant.
22/3/99		4. Learned counsel submits that the present bail application has been moved seeking bail before arrest of the applicant/accused with regard to his alleged involvement in crime No.18/99 for which an F.I.R. was lodged on 16.03.1999 by Police Station City at Hyderabad. It is alleged that the applicant on the day of incident viz. 19.02.1999 in the day

time produced a T.T. Pistol bearing No.BBP-13410 of 30 bore and licence bearing No.5105339 dated 04.02.1999 issued by District Magistrate Sanghar in the name of accused Mohammad Nadeem who has been nominated in crime No.10/99 pending with Police Station City Hyderabad. Thereafter upon verification by the police authorities it transpired that the said licence was a forged one and was not issued in the name of accused Mohammad Nadeem. The F.I.R. was accordingly registered against the applicant U/s.420, 468, 471 PPC read with Section 13-D Arms Ordinance.

Learned counsel submits that the lodging of the FIR is a further attempt by the political and religious foes of the applicant to have him implicated in xxx false and concocted case, as earlier attempts have failed and in two other cases the applicant was granted bail before arrest by this Court. Learned counsel submits that for all the offences above mentioned the maximum sentence is seven years along with fine and consequently do not come within the prohibitory clause of Section 497 Cr.P.C. The learned counsel vehemently argued that unless this bail application is granted and the applicant is given protection by this Court he would be immediately arrested by the police as he has been prevented from approaching the trial Court for seeking bail.

I have gone through the F.I.R. as well as the

memo of this application. In the first instance, it appears that nowhere in the FIR it is mentioned as to why the applicant/accused visited the Police Station City on 19.02.1999 along with the weapon in question and its licence. Secondly, no reasons have been given in the FIR as to why the same was lodged after almost one month of the day of incident. In the earlier bail application No.88/99 I have granted interim protective bail to the applicant on the basis that the FIR in the said case appeared to have been lodged due to enmity and jealousy between the applicant and religious sects as well as political parties. The lodging of the FIR in the present case also appears to have been motivated by the same factors.

In the circumstances, the applicant is granted pre-arrest bail in a sum of Rs.1,00,000/- in the form of security or cash and P.R. bond in the like amount to the satisfaction of Additional Registrar of this Court. Notice to A.A.G. for 24.03.1999.

5. Today I have received a pamphlet allegedly from xx the applicant seeking justice from the Prime Minister of Pakistan regarding his persecution at the hands of various xxxxx religious sects and Ulemas. Alth-ough the pamphlet has not been signed by the applicant, copies have been forwarded to all High Courts of Pakistan as well as Supreme

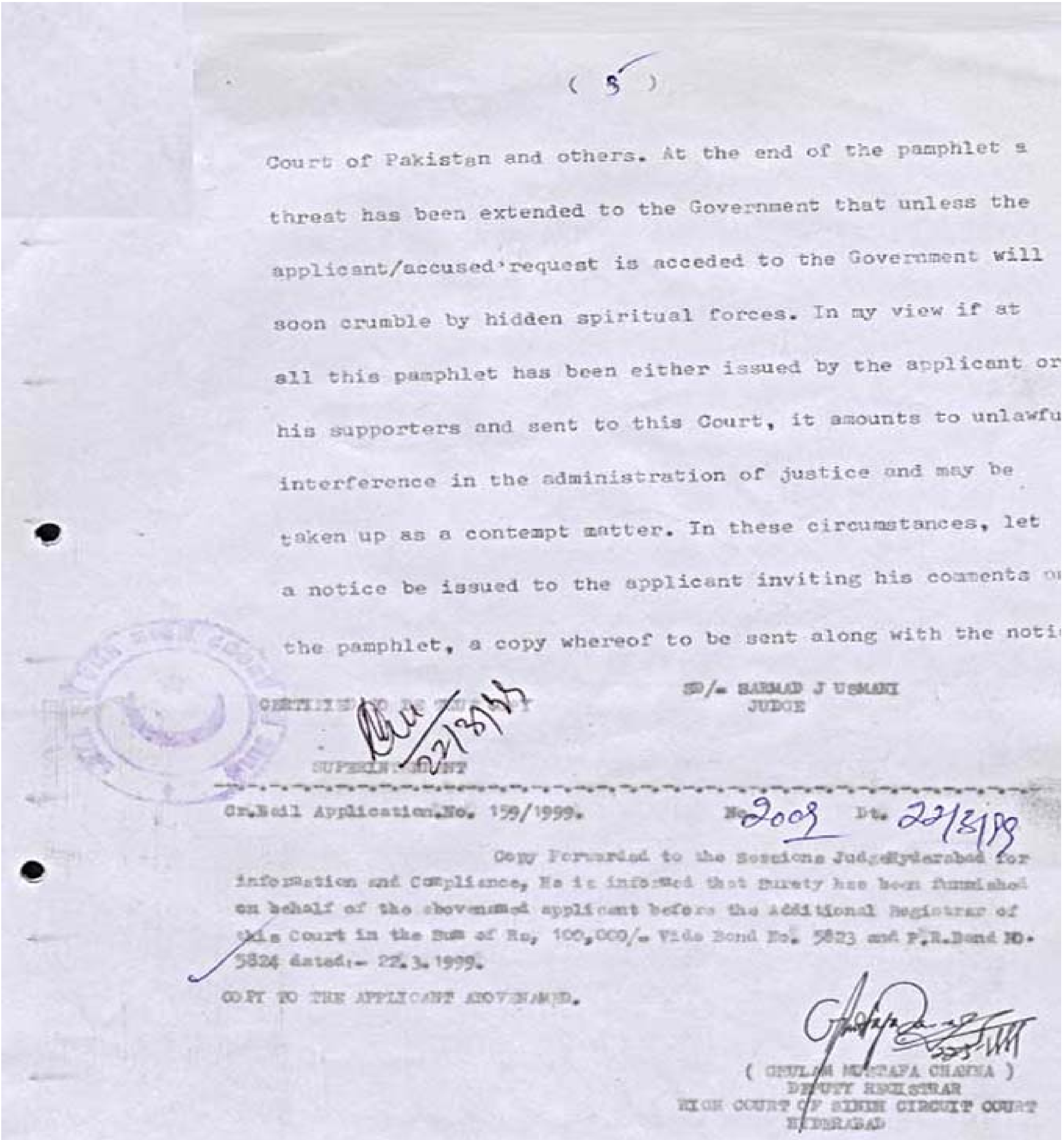

(5)

Court of Pakistan and others. At the end of the pamphlet a threat has been extended to the Government that unless the applicant/accused' request is acceded to the Government will soon crumble by hidden spiritual forces. In my view if at all this pamphlet has been either issued by the applicant or his supporters and sent to this Court, it amounts to unlawfu interference in the administration of justice and may be taken up as a contempt matter. In these circumstances, let a notice be issued to the applicant inviting his comments o the pamphlet, a copy whereof to be sent along with the noti

SD/- SARMAD J USMANI
JUDGE

CERTIFIED TO BE TRUE COPY
22/3/99
SUPERINTENDENT

Cr.Bail Application No. 159/1999. No. 2009 Dt. 22/3/99

Copy Forwarded to the Sessions Judge Hyderabad for information and Compliance, He is informed that surety has been furnished on behalf of the abovenamed applicant before the Additional Registrar of this Court in the Sum of Rs, 100,000/- Vide Bond No. 5823 and P.R.Bond No. 5824 dated:- 22.3.1999.

COPY TO THE APPLICANT ABOVENAMED.

(GHULAM MUSTAFA CHANNA)
DEPUTY REGISTRAR
HIGH COURT OF SINDH CIRCUIT COURT
HYDERABAD

* विशेष सूचना *

इन मुक़दमों की विफलता के बाद इब्लीासियों ने 295 का एक और तार्किकीय मुक़दमा बनाया कि गोहर शाही ने अवतारत्व (नबूवत) की घोषणा कर दी है। इसमें उन्हें सरकार के उच्च श्रेणी के वर्ग का पक्षपात प्राप्त हो गया था, यहाँ तक कि पूर्व राष्ट्रपति रफ़ीक़ तारड़ फ़िरक़ा की वजह से पार्टी बन गये थे। जिस कारण आतंकवाद निवारण के जज पर दबाव के कारण सज़ा सुनाई गई। ईश्वर ने चाहा तो हाईकोर्ट में या सुप्रिम कोर्ट में इस झूटे केस का भी फैसला हो जायेगा।

ईश्वर के नाम से आरंभ जो दयालु कृपालु है

प्राकथन

चंद्रमॉ, सूर्य, शिवलिंग (हज्र अस्वद), शिव मंदिर और कई दूसरे स्थानों पर भी गोहर शाही की तस्वीर प्रकट होने के बाद प्रायः मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का विचार और दृढ़ विश्वास है कि यही व्यक्ति मेहदी, कालकी अवतार और मसीहा है जिसका विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में वर्णन आया है।

आओ! आप भी इनको परखने की कोशिश करें और हमसे तहक़ीक़ के लिये संपर्क करें और इनकी पुस्तकों द्वारा भी इनको पहचानने की कोशिश करें।

मु० यूनुस अल्गोहर (लंदन.... इंग्लैंड)
younus38@hotmail.com

भूमिका

* द्वारा आर० ए० गोहर शाही *

1- जो धर्म आकाशीय ग्रंथों द्वारा स्थापित हुए वह सत्य हैं बशर्त कि उनमें परिवर्तन न किया गया हो।

2- धर्म नाव और विद्वान नाविक की तरह होते हैं, यदि किसी एक में भी त्रुटि हो तो गंतव्य पर पहुँचना कठिन है। परंतु संत पुरूष (अवलिया) टूटी फूटी नाव को भी किनारे लगा देते हैं, यही कारण है कि टूटे फूटे लोग संतों के चहुं ओर एकत्रित हो जाते हैं।

3- धर्म से उच्चतर ईश्वरप्रेम है, जो समस्त धर्मों का निचोड़ है। जबकि ईश्वर का प्रकाश (नूर) मार्गज्योति है!

4- तीन भाग वाह्‌य ज्ञान के और एक भाग आंतरिक ज्ञान का है जो विष्णु महाराज (ख़िज़र अलै०) द्वारा सर्व साधारण हुआ। ईश्वर का प्रेम ही ईश्वर की समीपता का साधन है, जिस दिल में ईश्वर नहीं कुत्ते उससे श्रेष्ठ हैं, क्यों कि वह अपने स्वामी से प्रेम करते हैं और प्रेम ही के कारण स्वामी की सन्निकटता प्राप्त कर लेते हैं वरना कहाँ एक अपवित्र कुत्ता और कहाँ श्रेष्ठतम मानव!

5- यदि तुझे स्वर्ग और स्वर्गांगनाओं एवं महलों की इच्छा है तो खूब आराधना कर ताकि ऊँची से ऊँची जन्नत मिल सके!

6- यदि तुझे ईश्वर की तलाश है तो आध्यात्मवाद भी सीख ताकि तू सत्यमार्ग (सिरात मुस्तक़ीम) पर चलकर ईश्वर के मिलन तक पहुँच सके!

* मनुष्य सृष्टिकाल से अनंतकाल तक *

जब ईश्वर ने आत्माओं को बनाना चाहा तो कहाः हो जा (कुन), तो अगणित आत्माएँ बन गईं। ईश्वर के सामने और समीप आत्माएँ अवतारों की, फिर दूसरी पंक्ति में संतों की, फिर तीसरी पंक्ति में ईश्वर वादियों (मोमिनीन) की, फिर इनके पीछे साधारण मनुष्यों की, फिर दृष्टिसीमा से दूर पंक्ति में स्त्रियों की आत्माएँ बन गईं, फिर इनके पीछे पाशवात्मा (रूह हैवानी), फिर वानस्पतिकात्मा (रूह नबाती) और फिर ऐसी पारस्तरात्मा (रूह जमादी) जिनमें हिलने जुलने की शक्ति भी न थी, प्रकट हो गईं। ईश्वर के दायीं ओर फ़रिश्तों की और फिर इसके बाद स्वर्गांगनाओं की आत्माएँ थी, जो ईश्वर के चेहरे को न देख सकीं, यही कारण है कि फ़रिश्ते ईश्वर का दर्शन (दीदार) नहीं कर सके। फिर पीछे प्रकाशीय वैताल (नूरी मुवक्किलात) की आत्माएँ जो दुनिया में आकर अवतारों, संतों की सहायक हुईं। फिर बायीं ओर जिन्नात की आत्माएँ, फिर पीछे अधमीय वैताल (सिफ़ली मुवक्किलात), फिर दुष्टात्मा (ख़बीसों) की आत्माएँ जो दुनिया में आकर इब्लीस की सहायक हुईं। दायें, बायें और दृष्टिसीमा से दूर वाली आत्माएँ ईश्वर की कांति (जलवा) न देख सकीं। यही कारण है कि जिन्न, फ़रिश्ते और स्त्रियाँ ईश्वर से वार्तालापित हो सकते हैं परंतु दर्शन नहीं कर सकते। भूमंडल में एक आग का गोला था, आदेश हुआः ठंडा हो जा! फिर उसके टुकड़े अंतरिक्ष में बिखर गये। चंद्रमाँ, मंगलग्रह, बृहस्पति, यह दुनिया और सितारे सब इसी के टुकड़े हैं जबकि सूर्य वही शेषित गोला है। यह पृथ्वी राख ही राख बनी। पारस्तरात्माओं को नीचे भेजा गया जिनके द्वारा राख जम कर पत्थर हो गई। फिर वानस्पतिकात्माओं को भेजा गया जिसकी वजह से पत्थरों में वृक्ष भी उग आये। फिर पाशवात्माओं के द्वारा पशु प्रकट हुए। ईश्वर ने समस्त आत्माओं से यह भी पूछा थाः क्या मैं तुम्हारा रब्ब (ईश्वर) हूँ? सबने प्रतिज्ञा किया और नत्मस्तक (सिजदा) किया था अर्थात– पत्थरों और वृक्षों की आत्माओं ने भी नत्मस्तक किया था। [वल्नज्म वल्शज्र यसजुदान .... (सूरः रहमान अल्कुरान)]। फिर ईश्वर ने आत्माओं की परीक्षा के लिये कृत्रिम दुनिया, कृत्रिम आनंदाएँ बनाये और कहाः ‘यदि कोई इनका अभिलाषी है तो प्राप्त कर ले’। अगणित आत्माएँ ईश्वर से मुख मोड़ कर दुनिया की ओर लपकीं और नरक उनके भाग्य में लिख दिया गया। फिर ईश्वर ने स्वर्ग का दृश्य दिखाया जो प्रथम स्थिति से बेहतर और आज्ञा पालन एवं आराधना वाला था। बहुत सी आत्माएँ उधर लपकीं उनके भाग्य में स्वर्ग लिख दिया गया। बहुत सी आत्माएँ कोई निर्णय न कर पाईं। इन्हें फिर रहमान और शैतान के मध्य कर दिया। वही आत्माएँ दुनिया में आ कर बीच में फँस गईं, फिर जिसके हाथ लग गईं (उस ही की हो गईं)। बहुत सी आत्माएँ ईश्वर की कांति को देखती रहीं, न दुनिया की और न ही स्वर्ग की अभिलाषा, ईश्वर को उनसे प्रेम और उन्हें ईश्वर से प्रेम हो गया। उन्हीं आत्माओं ने दुनिया में आकर ईश्वर के लिये दुनिया को छोड़ा और जंगलों में बसेरा किया। आत्माओं की आवश्यकता और दिल लगी के लिये अट्ठारह हज़ार प्रकार के प्राणि वर्ग (मख़लूक़), छः हज़ार जल में, छः हज़ार थल में और छः हज़ार वायुईय और आकाशीय पैदा की गई। फिर ईश्वर ने सात प्रकार के स्वर्ग और सात प्रकार के नरक बनाये।

स्वर्गों के नाम

1- ख़ुल्द
2- दारूस्सलाम
3- दारूलक़रार
4- अ़दन
5- अल्मावा
6- नईम
7- फ़िरदौस

नरकों के नाम

1- सक़र
2- सईर
3- नता
4- हुतमा
5- जहीम
6- जहन्नम
7- हाविया

ऊपर लिखित समस्त नाम सुर्यानी भाषा के हैं। वह भाषा जिसमें ईश्वर, फ़रिश्तों से वार्तालापित होता है। समस्त धर्मों की श्रद्धा (विश्वास) है कि जिसे ईश्वर चाहे नरक में और जिसे चाहे स्वर्ग में भेज दे। यदि वहीं से जिस आत्मा को नरक में भेजा जाता तो वह आपत्ति करती कि मैंने कौन सा अपराध किया था? ईश्वर कहताः तूने मेरी ओर से मुख मोड़ कर दुनिया की इच्छा करी थी, आत्मा कहतीः वह तो मात्र अज्ञान में स्वीकृति थी, कर्म तो नहीं किया था! फिर उस तर्क वितर्क को पूर्ण करने के लिये आत्माओं को नीचे इस दुनिया में भेजा। आदम जिन्हें शंकर जी भी कहते हैं स्वर्ग की मिट्टी से उनका शरीर बनाया गया। फिर मनुष्यात्मा के अतिरिक्त कुछ और प्राणीवर्ग भी उसमें डाल दिये गये। जब शंकर जी का शरीर बनाया जा रहा था तो शैतान ने ईर्ष्या से थूका था, जो नाभि के स्थान गिरा और उस थूक के कीटाणु भी उस शरीर में सम्मिलित हो गये। शैतान जिन्नात क़ौम से है।

एक हदीस में है कि जब मनुष्य जन्मता है तो उसके साथ एक शैतान जिन्न भी जन्मता है, शरीर तो मात्र मिट्टी का मकान था जिसके अंदर सोलह प्राणीवर्गों को बंद कर दिया, जबकि ख़न्नास और चार पक्षी और भी हैं। शंकर जी की बायीं पसली से स्त्री के रूप में अंतर्वस्तु निकला। उसमें आत्मा डाल दी गई जो माई हव्वा (पार्वती) बन गई। बाद में स्वर्ग से निकाल कर शंकर जी को श्रीलंका और पार्वती को जिद्दा में उतारा गया। जिनके द्वारा एशियाइयों के जन्म का क्रम आरंभ हो गया, और आकाश से शेष आत्माएँ भी क्रम बद्ध आना आरंभ हो गईं। आत्माओं की शिक्षा एवं दीक्षा और श्रेणी के लिये धर्मों के रूप में पाठशालायें स्थापित हुईं और सृष्टिकाल-दिवस के भाग्यानुसार कोई किसी धर्म में और कोई बिना धर्म ही रहीं। ईश्वर की प्रिय आत्माएँ भी इस दुनिया में आईं कोई मुस्लिम के घर कोई हिंदुओं, कोई सिक्खों और कोई ईसाईयों के घरों में पैदा हो गईं और अपने धर्म के द्वारा ईश्वर को पाने का प्रयत्न करने लगीं यही कारण है कि प्रत्येक धर्म के विशेषों ने विरक्ति जीवन (रहबानियत) धारण किया, कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम में रहबानियत नहीं है यह अक़ीदा ग़लत है। मुहम्मद स० भी हिरा गुफा में जाया करते थे। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, दाता अली हिजवेरी, बरी इमाम, बाबा फ़रीद, शहबाज़ क़लंदर आदि ने भी रहबानियत के बाद ही इतने उच्च स्थान प्राप्त किये और इन ही के द्वारा धर्म का प्रचार हुआ।

* * * * * *

* दुनिया में मनुष्य की नींव *

पेट में मानव वीर्य (नुतफ़ा) के बाद रक्त को एकत्र करने के लिए पारस्तरात्मा आती है, फिर वानस्पतिकात्मा द्वारा शिशु पेट में बढ़ता है। चार महीने के बाद पाशवात्मा शरीर में प्रवेश की जाती है जिसके द्वारा शिशु पेट में गति करता है, इनको जीवात्मा (अरज़ी अरवाह) कहते हैं। फिर जन्म के बाद मानवात्मा दूसरे प्राणि वर्गों के साथ आती है इनको आकाशीयात्मा (समावी अरवाह) कहते हैं। यदि शिशु जन्म से थोड़ी देर पहले ही पेट में मर जाये तो उसका क्रिया-क्रम (जनाज़ा) नहीं होता कि वह पशु था। जन्म के थोड़ी देर बाद मर जाये तो उसका क्रिया-क्रम अनिवार्य है कि वह मानवात्मा के आगमन के कारण मनुष्य बन गया था, और नाभि आत्मा (नफ़्स) ने भी नाभि स्थान पर अपने साथियों के साथ डेरा लगा लिया था। यदि उसमें पारस्तरात्मा शक्तिशाली है तो वह पहाड़ों में रहना पसंद करता है। वानस्पतिकात्मा के कारण मनुष्य फूलों और वृक्षों से लगाव रखता है। पाशवात्मा के आधिपत्य से पशुओं से प्रेम और पशुओं जैसे कार्य करता है। जबकि नाभि आत्मा की मुखाकृति कुत्ते की तरह होती है उसके आधिपत्य से कुत्तों जैसे कार्य और कुत्तों से प्रेम करता है। और हृदयजाग्रुक्ता से मनुष्य फ़रिश्तों की तरह बन जाता है। मनुष्य के मरने के बाद आकाशीयात्मा आकाशों को लौट जाती हैं जो एक ही शरीर के लिए विशिष्ट हैं, जीवात्माएँ नाभि आत्माओं के साथ इसी दुनिया में रह जाती हैं। जीवात्माएँ एक से दूसरे, फिर तीसरे शरीर में स्थानांतरित होती रहती हैं क्योंकि इनका (मृत्योपरांत) कर्मफल दिवस से कोई संबंध नहीं परंतु पवित्र नाभि आत्मा क़ब्रों में रहकर लोगों को आध्यात्मिक लाभ पहुँचाते और स्वयं भी आराधना करते रहते हैं जैसा कि ईश्वर-मिलनरात्रि में मुहम्मद स० मूसा की क़ब्र से गुज़रे तो देखा मूसा अपनी क़ब्र में आराधना कर रहे हैं जब आकाशों पर पहुँचे तो देखा मूसा वहाँ भी उपस्थित हैं। दुराचारी लोगों के शक्तिशाली नाभिआत्मा अपने बचाव के लिए शैतानों के टोले से मिल जाते हैं और लोगों के शरीर में प्रवेश होकर लोगों को हानि पहुँचाते हैं इनको पिशाच (बदरूह) कहते हैं। इंजील में है कि ईशु मसीह बदरूहें निकाला करते थे। जीवात्माएँ और नाभिआत्माएँ इसी दुनिया में, मानवात्मा इल्लीनजगत् या सिज्जीन में और शक्तियाँ (लताइफ़) यदि शक्तिशाली हैं तो वह भी इल्लीन में, वरना क़ब्र में ही नष्ट हो जाते हैं। नाभिआत्मा के कारण मनुष्य अपवित्र हुआ।

सकथन बुल्हे शाह : इस नफ़्स पलीत ने पलीत कीता.... असाँ मुंढों पलीत न सी

नाभिआत्मा को पवित्र करने के लिये पुस्तकें उतरीं, अवतार, संत आये कहीं इसको नरक से डराया गया, कहीं स्वर्ग का लोभ दिया गया। कठिन तपस्या, आराधना और उपवासों द्वारा इसे सुधारने का प्रयत्न किया गया और स्वर्ग के अधिकारी भी हो गये। और बहुत से लोगों ने आंतरात्मिक ज्ञान द्वारा इसे पवित्र भी कर लिया और ईश्वर के मित्र बन गये।

* नाभि आत्मा का वर्णन *

यह शैतानी कीटाणु है। नाभि में इसका ठिकाना है। समस्त अवतारों संतों ने इसकी धृष्टिता से श्रण माँगी, इसका भोजन फासफोरस और दुर्गन्ध है, जो हड्डियों, कोयले और गोबर में भी होता है प्रत्येक धर्म ने संभोग के बाद स्नान पर बल दिया है। क्योंकि मैथुनक्रिया की दुर्गन्ध रोमछिद्रों से भी निकलती है। दुर्गन्ध प्रकार के पेय और दुर्गन्ध प्रकार के पशुओं के मांस को भी वर्जित किया है। सृष्टिकाल दिवस में ईश्वर के सामने वाली समस्त आत्माएँ, पारस्तरात्मा तक, एक दूसरे से घुल मिल और संयुक्त हो गईं। पारस्तरात्मा के कारण मनुष्य ने पत्थरों के घर बनाये और वानस्पतिकात्मा के

कारण वृक्षों की लकड़ियों से छत बनाये। वृक्षों की छाया से भी लाभान्वित हुए, वृक्षों ने इनको साफ सुथरी ऑक्सीजन पहुँचाई। पीछे वाली पाशवात्माएँ जो दुनिया में आकर पशु बन गये, समस्त मनुष्यों के लिए भक्ष्य कर दिये गये। बायीं ओर जिन्नात और अधमीय वैताल बने फिर उनसे पीछे की ओर ख़बीस आत्माएँ जो अंत में ईश्वर की शत्रु हुईं। और वह पाशव, वानस्पतिक और पारस्तरात्माएँ जो ख़बीसों के पीछे प्रकट हुईं थीं उन्होंने मनुष्यों से शत्रुता करी, उनकी पारस्तरात्मा के दुनिया में आने से राख कोयला बनी, जिसकी गैस मनुष्यों के लिये हानिकारक थी। उनकी वानस्पतिकात्मा से भयंकर और कॉंटेदार प्रकार के वृक्ष अस्तित्व में आये और उनकी पाशवात्मा से नर भक्षी और हिंसक प्रकार के पशु जन्मे और उनसे संबंधित पक्षी भी उन ही की मानव शत्रुता के स्वभाव के कारण अभक्ष्य ठहराये गये। जिनकी पहचान यह है कि वह पंजे से पकड़ कर आहार खाते हैं। दायीं ओर वाली आत्माओं को मनुष्य का सेवक, संदेश वाहक और सहायक बना दिया और मनुष्य को सबसे अधिक विद्वता प्रदान करके अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया। अब मनुष्य की इच्छा, परिश्रम और भाग्य है कि प्रतिनिधित्व स्वीकार करे या ठुकरा दे। नाभिआत्मा स्वप्न में शरीर से बाहर निकल जाता है और उस व्यक्ति की मुखाकृति में जिन्नात की शैतानी सभाओं में घूमता है। नफ़्स के साथ दैत्य (ख़न्नास) भी होता है जिसकी मुखाकृति हाथी की तरह होती है और यह नाभिकॅंवल और हृदयकॅंवल के मध्य बैठ जाता है, मनुष्य को पथभ्रष्ठ करने के लिये नाभिआत्मा की सहायता करता है। इसके अतिरिक्त चार पक्षी भी मनुष्य को पथभ्रष्ठ करने के लिये चारों शक्तियों के साथ चिमट जाते हैं, जैसा कि हृदयकॅंवल के साथ मुर्ग़ा, जिसके कारण हृदय पर वासना का आधिपत्य रहता है, हृदय के जाप से वह मुर्ग़ा, आहत पक्षी (मुर्ग़ बिस्मिल) बन जाता है और हराम व हलाल की समझ का ज्ञान पैदा कर देता है। फिर उस हृदय को शिष्ट हृदय (क़ल्ब सलीम) कहते हैं। सिर्री के साथ कव्वा, कव्वे की वजह से लोभ, और ख़फ़ी के साथ मोर, मोर की वजह से ईर्ष्या, और अख़फ़ा के साथ कबूतर, कबूतर की वजह से कृपणता आ जाती है और उनकी प्रकृतियॉं शक्तियों को लोभ एवं ईर्ष्या पर विवश कर देती हैं जबतक शक्तियॉं प्रकाशमान् न हो जायें। इब्राहीम के शरीर से इन ही चार पक्षियों को निकाल कर, पवित्र कर के पुनः शरीर में डाला गया था। मृत्योपरांत पवित्र लोगों के यह पक्षियॉं वृक्षों पर बसेरा बना लेते हैं। बहुत से लोग जंगलों में कुछ दिन रह कर पक्षियों जैसी बोली निकालते हैं, और यह पक्षियॉं उनसे घुलमिल जाते हैं और उनके छोटे मोटे उपचारों में सहायक बन जाते हैं।

* एक महत्वपूर्ण बिंदु *

''नाभि आत्मा (नफ़्स) का संबंध शैतान से है''

''वक्षस्थल के पॉंचों शक्तियों (लताइफ़) का संबंध पॉंचों श्रेष्ठ अवतारों से है।''

''मस्तिष्क कॅंवल (अन्ना) का संबंध ईश्वर से है''

''इसी प्रकार इस शरीर का संबंध पूर्ण दक्ष धर्मगुरू से है''

''और जो भी प्राणिवर्ग (मख़लूक़) जिस सांबंध्य से रिक्त है वह उसके प्रलाभ से वंचित और नग्न है''

* हृदय कॅंवल *

मांस के लोथड़े को उर्दू में दिल और अरबी में फ़वाद बोलते हैं और उस प्राणिवर्ग को जो दिल के साथ है, हृदयकॅंवल (क़ल्ब) बोलते हैं। इसका अवतारत्व और ज्ञान शंकरजी (आदम) को मिला था। हदीस में है कि दिल और हृदयकॅंवल में अंतर है। इस दुनिया को मर्त्यलोक (नासूत) बोलते हैं। इसके अतिरिक्त और लोक भी हैं, अर्थात– मलकूत, अंकबूत, जबरूत, लाहूत, वहदत और अहदियत। यह स्थान मर्त्यलोक में गोला फटने से पूर्व थे और इनके प्राणिवर्गें भी पहले से उपस्थित थे। फ़रिश्ते आत्माओं के साथ बने। परंतु मलाइका और लताइफ़ पहले ही से इन स्थानों पर उपस्थित थे बाद में मर्त्यलोक में भी कई ग्रहों पर दुनिया आबाद हुई। कोई मिट गये और कोई प्रतीक्षक हैं। यह प्राणिवर्ग अर्थात– लताइफ़ और मलाइका आत्माओं के ईश्वराज्ञा (अम्र कुन) से 70 हज़ार वर्ष पूर्व बनाये गये थे और उनमें से हृदयकॅंवल को प्रेमस्थान में रखा गया और इसी के द्वारा मनुष्य का संपर्क ईश्वर से जुड़ जाता है। ईश्वर और उपासक के मध्य यह टेलीफून आप्रेटर की पात्रता रखता है। मनुष्य पर तर्क एवं आकाश वाणियॉं इसी के माध्यम आते हैं। जबकि लताइफ़ की आराधनाएँ भी इसी के माध्यम सर्वोच्च आकाश पर पहुँचती हैं परंतु यह प्राणिवर्ग स्वयं मलकूत से आगे नहीं जा सकती, इसका स्थान खुल्द है। इसकी आराधना भी अंदर और माला भी मनुष्य के ढॉंचे में है। इसकी आराधना के बिना वाले स्वर्गीय भी पश्चात्ताप करेंगे क्योंकि ईश्वर ने कहा कि ''क्या इन लोगोंने समझ रखा है कि हम इनको सदाचारियों के बराबर कर देंगे?'' क्योंकि हृदयकॅंवल वाले स्वर्ग में भी ईश्वर ईश्वर करते रहेंगे। शारीरिक आराधना मृत्योपरांत समाप्त हो जाती है जिनके हृदयकॅंवल और लताइफ़ ईश्वर के प्रकाश से शक्तिशाली नहीं वह क़ब्रों में ही श्रांत दशा में रहेंगे या नष्ट हो जायेंगे जबकि प्रकाशमान् और शक्तिशाली लताइफ़ इल्लीनस्थान में चले जायेंगे। (मृत्योपरांत) कर्मफल दिवस के बाद जब दूसरे शरीर दिये जायेंगे तो फिर यह लताइफ़ भी मानवात्मा के साथ दर्शन वाले अमर संतों के शरीर में प्रवेश होंगे। जिन्होंने इनको दुनिया में ईश्वर ईश्वर सिखाया था वहॉं भी ईश्वर ईश्वर करते रहेंगे और वहॉं जाकर भी उनके पद बढ़ते रहेंगे। और जो इधर दिल के अंधे थे वह उधर भी अंधे ही रहेंगे। क्योंकि कर्मभूमि यह दुनिया थी और वह एक ही स्थान स्थिर हो जायेंगे। ईसाईयों, यहूदियों के अतिरिक्त हिंदू धर्म भी इन प्राणिवर्गों का वक्ता है। हिंदू इन्हें शक्तियॉं और मुसलमान इन्हें लताइफ़ कहते हैं। हृदयकॅंवल दिल के बायीं ओर दो इंच के दूरी पर होता है इस प्राणिवर्ग का रंग नारंजी है। इसकी जाग्रुक्ता से मनुष्य नारंजी प्रकाश अपनी ऑंखों में अनुभूत करता है। बल्कि कई तांत्रिक महाशय इन शक्तियों के रंगों से लोगों का उपचार भी करते हैं। प्रायः लोग अपने दिल की बात सत्यतम् मानते हैं। यदि वास्तव में दिल सच्चे हैं तो सब दिल वाले एक क्यों नहीं? साधारण मनुष्य का हृदय सनोबरी होता है जिसमें कोई सुध बुध नहीं होती, नाभि आत्मा और दैत्य के अधिकार या अपने सीधेपन के कारण ग़लत निर्णय भी दे सकता है। सनोबरी हृदय पर विश्वास मूर्खता है। जब इस दिल में ईश्वर का जाप आरंभ हो जाता है फिर इसमें अच्छाई बुराई की तमीज़ और समझ आ जाती है इसे शिष्ट हृदय (क़ल्ब सलीम) कहते हैं, फिर जाप की अधिक्ता से इसका झुकाव ईश्वर की ओर मुड़ जाता है इसे उन्मुख हृदय (क़ल्ब मुनीब) कहते हैं, यह दिल बुराई से रोक सकता है मगर यह उचित निर्णय नहीं कर सकता, फिर जब ईश्वर की झलकियॉं (तजल्लियात) इस दिल पर गिरना आरंभ हो जाती हैं तो उसे हुतात्मा हृदय (क़ल्ब शहीद) कहते हैं। हदीसः टूटे हुए दिल और टूटी हुई क़ब्र पर ईश्वर की दया पड़ती है उस समय जो दिल कहे चुप करके मान ले क्योंकि तजल्ली से नाभिआत्मा भी संतुष्टित हो जाती है और ईश्वर रज्जु बद्ध (हब्लिल वरीद) हो जाता है फिर ईश्वर कहता है कि मैं उसकी जिह्वा बन जाता हॅं जिससे वह बोलता है, उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है।

* मानवात्मा *

(इसकी अवतारत्व और ज्ञान इब्राहीम को मिला था)

यह दायें स्तन के समीप होती है। जाप की टक्करों और अनुध्यान से इसको भी जगाया जाता है। फिर इधर भी एक धड़कन प्रकट हो जाती है। इसके साथ (जाप) याअल्लाह मिलाया जाता है। फिर मनुष्य के अंदर दो बन्दे जाप करना आरंभ कर देते हैं और उसका पद हृदयकँवल वाले से बढ़ जाता है। आत्मा का रंग लाल जैसा होता है और इसकी जाग्रुक्ता से जबरूत तक (जो जिब्राईल का स्थान है) पहुँच हो जाती है। क्रोध एवं प्रकोप उसके पड़ोसी होते हैं जो जलकर जलाल (प्रताप) बन जाते हैं।

* सिर्री शक्ति *

(इसकी अवतारत्व और ज्ञान मूसा को मिला था)

यह प्राणिवर्ग वक्षस्थल के मध्य से बायें स्तन के बीच होती है। इसको भी याहय्यो याक़य्यूम की टक्करों और अनुध्यान से जगाया जाता है। इसका रंग सफेद है। स्वप्न या ध्यानमग्नता में लाहूत तक पहुँच रखती है, अब तीन प्राणिवर्ग जाप कर रहे हैं और उसका स्थान उन दो से बढ़ गया।

* ख़फ़ी शक्ति *

(इसकी अवतारत्व और ज्ञान ईसा को मिला था)

यह वक्षस्थल के मध्य से दायें स्तन के बीच होती है इसे भी टक्करों द्वारा यावाहिद सिखाया जाता है। इसका रंग हरा है और इसकी पहुँच वहदतस्थान से है, और अब चार बंदों की आराधना से स्थान और बढ़ गया।

* अख़फ़ा शक्ति *

(इसकी अवतारत्व और ज्ञान मुहम्मद स० को मिला था)

यह प्राणिवर्ग वक्षस्थल के मध्य है। याअहद् का जाप इसके लिये माध्यम है इसका रंग जामुनी है इसका संबंध भी वहदतस्थान के उस पर्दे से है जिसके पीछे ईश्वर का सिंहासन है।

पाँचों शक्तियों का आंतरात्मिक ज्ञान भी पाँचों अवतारों को क्रमवार प्राप्त हुआ और प्रत्येक शक्ति का आधा ज्ञान अवतारों से संतों तक पहुँचा। इस प्रकार उसके भी दस भाग बन गये फिर संतों से विशेष (लोग) इस ज्ञान से लाभान्वित हुए। जबकि वाह्य ज्ञान, वाह्य शरीर, वाह्य भाषा, मर्त्यलोक और नाभि आत्माओं से संबंध रखता है। यह साधारण लोगों के लिये है और इसका ज्ञान वाह्य पुस्तक में है जिसके (३०) भाग हैं। आंतरिक ज्ञान भी अवतारों पर वह्यि (ईश्वर संदेश जो अवतारों पर उतरे) के माध्यम उतरा, इस वजह से इसे भी आंतरिक कुरान बोलते हैं। कुरान की बहुत सी पंक्तियाँ बाद में निरस्त की जातीं, उसकी वजह यही थी कि कभी कभी सीने का ज्ञान भी मुहम्मद की ज़ुबान से साधारण में निकल जाता जो कि विशेष के लिये था, बाद में यह ज्ञान सीना ब सीना संतों में चलता रहा और अब पुस्तकों द्वारा सर्व साधारण कर दिया गया।

* अन्ना शक्ति *

यह प्राणिवर्ग मस्तिष्क में होता है। रंग हीन है। ''याहू'' का जाप इसकी सोपान (मेराज) है और यही प्राणिवर्ग शक्तिशाली हो कर ईश्वर के सामने बे पर्दा वार्तालापित हो जाती है। यह आशिक़ों का स्थान है इसके अतिरिक्त कुछ विशेषों को ईश्वर की ओर से और अन्य प्राणिवर्गें भी प्रदान हो जाती है, जैसे ''तिफ़्ल-ए-नूरी'' या ''जुस्सा तौफ़ीक़-ए-इलाही'' फिर इनका पद समझ से परे है।

अन्ना शक्ति द्वारा ईश्वर दर्शन स्वप्न में होता है
जुस्सा तौफ़ीक़-ए-इलाही द्वारा ईश्वर का दर्शन ध्यान मग्नता में होता है
और तिफ़्ल नूरी वालों का दर्शन होशो हवास में होता है

यही फिर दुनिया में ईश्वरीय शक्ति (कुद्‌रतुल्लाह) कहलाते हैं, चाहे किसी को आराधना एवं तपस्या, और चाहे किसी को नज़रों से ही महमूदस्थान तक पहुँचा दें, इनकी नज़रों में: क्या मुस्लिम क्या काफिर.......क्या ज़िन्दा क्या मुर्दा, सब बराबर होते हैं जैसा कि ग़ौस पाक की एक नज़र से चोर कुतुब बन गया। या अबू बकर हवारी या मंगा डाकू भी इन लोगों की नज़रों से पीर बन गये।

पाँचों श्रेष्ठ अवतारों को क्रमवार अलग अलग शक्तियों का ज्ञान दिया गया जिसकी वजह से आध्यात्मवाद में उन्नति होती गयी। जिस जिस शक्ति का जाप करेगा उनसे संबंधित श्रेष्ठ अवतार से संबंध और आध्यात्मिक लाभ का अधिकारी हो जायेगा। और जिस शक्ति पर ईश्वरीय चमक (तजल्ली) पड़ेगी उसकी संतत्व (विलायत) उस अवतार के पदचिन्ह पर होगी। सात आकाशों में पहुँच और सात स्वर्गों में स्थानों की प्राप्ति भी इन ही शक्तियों से होती है।

* मानव शरीर में इन शक्तियों की ड्यूटियाँ *

अख़फ़ा शक्तिः

इसके द्वारा मनुष्य बोलता है वरना जिह्वा ठीक होने के बावजूद वह गूँगा है। मनुष्यों और पशुओं में अंतर इन शक्तियों का है। जन्म के समय यदि अख़फ़ा किसी वजह से शरीर में प्रवेश न हो सके तो इसे शरीर में मंगवाना किसी संबंधित अवतार की ड्यूटी थी, फिर गूँगे बोलना आरंभ हो जाते थे।

सिर्री शक्तिः

इसके द्वारा मनुष्य देखता है। इसके शरीर में न आने से जन्मजात अंधा है इसको वापस लाना भी किसी संबंधित अवतार की ड्यूटी थी जिससे अंधे भी देखना आरंभ हो जाते थे।

हृदयकँवलः

इसके शरीर में न होने के कारण मनुष्य बिल्कुल पशुओं की तरह ईश्वर से अनभिज्ञ और दूर, रूचिहीन, आनंदहीन हो जाता है, इसको वापस दिलवाना भी अवतारों का काम था। और उन अवतारों के प्रत्यक्ष चमत्कारें (मोज्ज़ात) परोक्ष चमत्कार (करामत) की सूरत में संतों को भी प्रदान हुए, जिसके द्वारा व्यभिचारी एवं दुराचारी भी ईश्वर तक पहुँच गये। किसी भी संत या अवतार के माध्यम जब किसी संबंधित शक्ति को वापस किया जाता है तो गूँगे बहरे और अंधे भी स्वस्थ हो जाते हैं।

अन्ना शक्तिः

इसके शरीर में न आने से मनुष्य पागल कहलाता है निःसंदेह मस्तिष्क की सब धमनियाँ काम कर रहीं हों।

ख़फ़ी शक्तिः

इसके न आने से मनुष्य बहरा है, चाहे कान के छिद्र खोल दिये जायें। शारीरिक त्रुटियों से भी यह परिस्थितियाँ जन्म ले सकती हैं जो चिकित्सायोग्य हैं, परंतु प्राणिवर्गों के सिरे से ही न होने का कोई उपचार नहीं जबतक किसी अवतार या संत का सहयोग प्राप्त न हो।

नफ़्स शक्तिः

इसके द्वारा मनुष्य का दिल दुनिया में, और हृदयकँवल के द्वारा मनुष्य का झुकाव ईश्वर की ओर मुड़ जाता है।

* शब्द ''अल्लाह'' *

सुर्यानी भाषा जो आकाशों पर बोली जाती है फरिश्ते और ईश्वर इसी भाषा से संबोध्य होते हैं। स्वर्ग में शंकरजी भी यही भाषा बोलते थे। फिर जब शंकरजी और पार्वती दुनिया में आये अरबिस्तान में आबाद हुए। उनकी संतान भी यही भाषा बोलती थी, फिर संतानों के दुनिया में विस्तार के कारण यह भाषा अरबी फ़ारसी, लातीनी से निकलती हुई अंग्रेज़ी तक जा पहुँची, और ईश्वर को विभिन्न भाषाओं में अलग अलग पुकारा जाने लगा। शंकर के अरब में रहने के कारण सुर्यानी के बहुत से शब्द अब भी अरबी भाषा में मौजूद हैं जैसा कि आदम (शंकरजी) को आदम सफ़ीउल्लाह के नाम से पुकारा था। किसी को नूह नबीउल्लाह, किसी को इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, फिर मूसा कलीमुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह पुकारा गया। यह सब धर्ममंत्र सुर्यानी भाषा में ग्रंथमाता (लौह महफूज़) पर इन अवतारों के आने से पूर्व ही लिखे थे, तब ही मुहम्मद स० ने कहा था कि मैं इस दुनिया में आने से पूर्व भी अवतार था।

कुछ लोगों का विचार है कि शब्द अल्लाह मुसलमानों का रखा हुआ नाम है, मगर ऐसा नहीं है

ह० मुहम्मद रसूलुल्लाह के पिता का नाम अब्दुल्लाह था जबकि उस समय इस्लाम नहीं था और इस्लाम से पूर्व भी प्रत्येक अवतार के धर्ममंत्र के साथ अल्लाह पुकारा गया। जब आत्माएँ बनाईं गयीं तो उनकी ज़ुबान पर प्रथम शब्द ''अल्लाह'' ही था और फिर जब आत्मा शंकरजी के शरीर में प्रवेश हुई तो याअल्लाह पढ़कर ही प्रवेश हुई थी। बहुत से धर्म इस रहस्य को परम सत्य समझ कर अल्लाह के नाम का जाप करते हैं और बहुत से संदेह के कारण से इससे वंचित हैं। जो भी नाम ईश्वर की ओर संकेत करता है आदरणीय है, अर्थात ईश्वर की ओर मुख कर देता है। मगर नामों के प्रभाव से विविध हो गये। वर्णक्रम और वर्ण अनुकरण के हिसाब से प्रत्येक शब्द की संख्या भिन्न होती है। यह भी एक आकाशीय विद्या है और इन संख्याओं का संबंध समस्त प्राणिवर्ग से है कभी कभी यह संख्याएँ नक्षत्र के हिसाब से आपस में अनुकूलता नहीं रखते जिसकी वजह से मनुष्य व्याकुल रहता है। बहुत से लोग इस विद्या के अभ्यस्तों से नक्षत्रों के हिसाब से जन्म कुंडली बनवाकर नाम रखते हैं जैसा कि अबजद (अ ब ज द) (1234) की दस संख्या बनती है। इसी प्रकार प्रत्येक नाम की भिन्न संख्याएँ होती हैं। जब ईश्वर के विभिन्न नाम रख दिये गये तो अबजद के हिसाब से प्ररस्पर टकराव का कारण बन गये। यदि सब एक ही नाम से ईश्वर को पुकारते तो धर्म अलग अलग होने के बावजूद अंदर से एक ही होते। फिर नानक साहिब और बाबा फ़रीद की तरह यही कहते :

सब आत्माएँ ईश्वर के प्रकाश से बनी हैं, परंतु उनका माहौल और उनके मुहल्ले भिन्न हैं।

जिन फ़रिश्तों की दुनिया में ड्यूटी लगाई जाती है उन्हें दुनिया वालों की भाषाएँ भी सिखाई जाती हैं। उम्मतियों के लिये आवश्यक है कि अपने अवतार का धर्ममंत्र जो अवतार के ज़माने में उम्मत की पहचान, आध्यात्मिक लाभ और पवित्रता के लिये ईश्वर की ओर से प्रदान हुआ था, उसी प्रकार उसी भाषा में धर्ममंत्र का उच्चारण (जाप) किया करे। किसी को किसी भी धर्म में आने के लिये यह धर्ममंत्र शर्त हैं। जिस प्रकार विवाह के समय ज़ुबानी स्वीकृति शर्त है स्वर्गों में प्रवेश के लिये भी यह धर्ममंत्र शर्त कर दिये गये। परंतु पश्चिमी देशों में अधिक्तर मुस्लिम और ईसाई अपने धर्म के धर्ममंत्रों यहाँ तक कि अपने अवतार के असली नाम से अनूभिज्ञ हैं। ज़ुबानी धर्ममंत्रों वाले सद्कर्मों के मुहताज, धर्ममंत्र न पढ़ने वाले स्वर्ग से बाहर, और जिनके दिलों में भी धर्ममंत्र उतर गया था वही बिना हिसाब के स्वर्ग में जायेंगे। आकाशीय पुस्तकें जो जिस भी भाषा में असली हैं वह ईश्वर तक पहुँचाने का माध्यम हैं परंतु जब इनकी पंक्तियों और अनुवादों में मिलावट कर दी गई, जिस प्रकार मिलावट युक्त आटा पेट के लिये हानिकारक है इसी प्रकार मिलावट युक्त पुस्तकें धर्म में हानि बन गयी हैं और एक ही धर्म, अवतार वाले कितने वर्गों में विभाजित हो गये। सत्य एवं सीधे मार्ग के लिये बेहतर है कि तुम नूर से भी अनुदेश पा जाओ।

* ईश्वरीय प्रकाश (नूर) बनाने की विधि *

प्राचीनकाल में पत्थरों की रगड़ से अग्नि प्राप्त की जाती थी जबकि लोहे की रगड़ से भी चिंगारी उठती है। जल से जल टकराया तो बिजली बन गई। इसी प्रकार मनुष्य के अंदर रक्त के टकराव अर्थात दिल की टिक टिक से भी बिजली बनती है। प्रत्येक मनुष्य के शरीर में लगभग डेढ़ वाल्ट बिजली उपस्थित है। जिसके माध्यम उसमें फुरती होती है। वृद्धावस्था में टिक टिक की गति मंद होने के कारण बिजली में भी और स्फूर्ति में भी कमी आ जाती है। सर्व प्रथम दिल की धड़कनों को उभारना पड़ता है। कोई डांस द्वारा, कोई कबड्डी या व्यायाम द्वारा, और कोई अल्लाह अल्लाह की टक्करों द्वारा यह क्रिया करते हैं। जब दिल की धड़कनों में तेज़ी आ जाती है फिर प्रत्येक धड़कन के साथ अल्लाह अल्लाह, या एक के साथ अल्लाह और दूसरी के साथ ''हू'' मिलायें। कभी कभी दिल पर हाथ रखें, धड़कनें अनुभूत हों तो अल्लाह मिलायें। कभी कभी नाड़ी की गति के साथ अल्लाह मिलायें। अनुध्यान करें कि अल्लाह दिल में जा रहा है। अल्लाहू का जाप उत्तम और तीव्र प्रभावी है। यदि किसी को ''हू'' पर आपत्ति या भय हो तो वह वंचितता के स्थाने धड़कनों के साथ अल्लाह अल्लाह ही मिलाते रहें। नित्य कर्म एवं जाप और भजन क्रिया (विर्द वज़ाइफ़ और ज़कूरियत) वाले लोग जितना भी पाक साफ रहें उनके लिये बेहतर है, कि

बे अदब........ बे मुराद......................बा अदब........ बा मुराद

प्रथम विधिः

काग़ज़ पर काली पेंसिल से अल्लाह लिखें, जितनी देर मन साथ दे प्रतिदिन अभ्यास करें। एक दिन शब्द अल्लाह काग़ज़ से आँखों में तैरना आरंभ हो जायेगा फिर आँखों से अनुध्यान द्वारा दिल पर उतारने का प्रयत्न करें।

द्वितीय विधिः

ज़ीरो के सफेद बल्ब पर पीले रंग से ''अल्लाह'' लिखें, उसे सोने से पूर्व या जागते समय आँखों में समोने का प्रयत्न करें। जब आँखों में आ जाये तो फिर उस शब्द को दिल पर उतारें।

तृतीय विधिः

यह विधि उन लोगों के लिये है जिनके मार्गदर्शक पूर्ण दक्ष हैं और संबंध एवं लगाव के कारण आध्यात्मिक सहायता करते हैं। एकांत में बैठ कर तर्जनी (शहादत की उंगली) को लेखनी ध्यान करें और अनुध्यान से दिल पर अल्लाह लिखने का प्रयत्न करें। मार्गदर्शक को पुकारें कि वह भी तुम्हारी उंगली को पकड़कर तुम्हारे दिल पर अल्लाह लिख रहा है। यह अभ्यास प्रतिदिन करें जबतक दिल पर अल्लाह लिखा नज़र न आये। पूर्व विधियों में अल्लाह वैसे ही अंकित होता है जैसा कि बाहर लिखा या देखा जाता है। फिर जब धड़कनों से अल्लाह मिलना आरंभ हो जाता है तो फिर धीरे धीरे चमकना आरंभ हो जाता है। चूँकि इस विधि में पूर्ण दक्ष मार्गदर्शक का साथ होता है इस लिये आरंभ से ही सुंदर लिपि और चमकता हुआ दिल पर अल्लाह लिखा नज़र आता है। दुनिया में कई अवतार संत आये, जाप के मध्य परीक्षावश बारी बारी, यदि उचित समझें तो सबका अनुध्यान करें जिसके अनुध्यान से जाप में तीव्रता और प्रोन्नति नज़र आये आप का भाग्य उसी के पास है फिर अनुध्यान के लिये उसी को चुन लें क्योंकि प्रत्येक संत का चरण किसी न किसी अवतार के चरण पर होता है, निःसंदेह अवतार प्रत्यक्ष जीवन में न हो! और प्रत्येक ईश्वरवादी (मोमिन) का भाग्य किसी न किसी संत के पास होता है। संत का प्रत्यक्ष जीवन शर्त है। परंतु कभी कभी किसी को भाग्य से किसी परोक्ष जीवन (ममात) वाले पूर्ण अस्तित्व (कामिल ज़ात) से भी मलकूती लाभ हो जाता है परंतु ऐसा बहुत ही सीमित है। परंतु परोक्ष जीवन वाले दरबारों से दुनियावी लाभ पहुँचा सकते हैं। इसे अवैसी लाभ (फ़ैज़) कहते हैं और यह लोग प्रायः दैवज्ञान (कशफ़) और स्वप्न में उलझ जाते हैं क्योंकि मुर्शिद भी आंतरिक में और इब्लीस भी आंतरिक में, दोनों की पहचान कठिन हो जाती है। आध्यात्मिक लाभ के साथ ज्ञान भी आवश्यक होता है जिसके लिये ज़ाहिरी मुर्शिद अधिक उचित है। यदि आध्यात्मिक लाभ है! विद्या नहीं! तो उसे आकृष्ट संत (मज्ज़ूब) कहते हैं। आध्यात्मिक लाभ भी है, विद्या भी है उसे प्रियतम कहते हैं। प्रियतम विद्या के माध्यम लोगों को दुनियावी लाभ के अतिरिक्त आध्यात्मिक लाभ भी पहुँचाते हैं जबकि आकृष्ट संत डंडों और गालियों से दुनियावी लाभ पहुँचाते हैं।

यदि कोई भी आपके अनुध्यान में आकर, आपकी सहायता न करे तो फिर ''गोहर शाही'' ही को आज़माकर देखें

धर्म की शर्त नहीं! परंतु सृष्टिकालीनीय अभागा न हो। बहुत से लोगों को चंद्रमॉं से भी नामदान (ज़िक्र) प्रदान हो जाता है। उसकी विधि यह है: जब पूर्ण चंद्रमॉं पूर्व दिशा की ओर हो, ध्यानपूर्वक देखें, जब गोहर शाही का चेहरा नज़र आ जाये तो तीन बार 'अल्लाह' 'अल्लाह' 'अल्लाह' कहें, अनुमति हो गई। फिर निर्भय एवं निडर लिखित विधि से अभ्यास आरंभ करदें। अटल विश्वास जानिये! चंद्रमॉं वाली सूरत बहुत से लोगों से प्रत्येक भाषा में बातचीत भी कर चुकी है। आप भी देखकर बातचीत की कोशिश करें।

* ध्यान मग्नता के संबंध में *

बहुत से लोग आत्माओं (लताइफ़, शक्तियों) की जाग्रुक्ता और आध्यात्मिक शक्ति सीखे बिना ध्यान मग्नता करने की कोशिश करते हैं। इनका या तो ध्यान मग्नता लगता ही नहीं या शैतानी घटनाएँ आरंभ हो जाती हैं। ध्यान मग्नता अत्यंत लोगों का काम है जिनके नफ़्स पवित्र और हृदयकॅंवल स्वच्छ हो चुके हों। साधारण लोगों का ध्यान मग्नता नादानी है चाहे किसी भी वाहृय आराधना से क्यों न हो! आत्माओं की शक्ति को प्रकाश से एकत्र करके किसी स्थान पर पहुँच जाने का नाम ध्यान मग्नता है। संतत्व अवतारत्व का चालीसवॉं भाग है : अवतार का प्रत्येक स्वप्न, ध्यान मग्नता या देव वाणी वहि्य (ईश्वर संदेश जो अवतारों पर उतरे) सही होता है इसे पुष्टि की आवश्यक्ता नहीं। परंतु संत के सौ (100) में से चालीस (40) स्वप्न ध्यान मग्नताएँ या देव वाणियॉं सही और शेष ग़लत होते हैं और इनकी पुष्टि के लिये आंतरात्मिक विद्या की आवश्यक्ता है कि:

बे इल्म नतवॉं ख़ुदारा शनाख़्त (बिना विद्या ईश्वर की पहचान नहीं होती)

सबसे निम्न ध्यान मग्नता हृदयकॅंवल की जाग्रुक्ता के बाद लगता है जो कि हृदयभजन (ज़िक्र क़ल्ब) के बिना असंभव है। एक झटके से मनुष्य होश-ओ-हवास में आ जाता है। पूर्वाभाषों (इस्तख़ारे) का संबंध भी हृदयकॅंवल से है। इससे आगे आत्मा द्वारा ध्यान मग्नता लगता है। तीन झटकों से वापसी होती है। तीसरा ध्यान मग्नता अन्ना शक्ति और आत्मा से इकट्ठा लगता है। आत्मा भी जबरूत तक साथ जाती है जैसा कि जिब्राईल मुहम्मद स० के साथ जबरूत तक गये थे। ऐसे लोगों को क़ब्र में भी दफ़ना आते हैं मगर उन्हें पता नहीं होता ऐसा ध्यान मग्नता असहाब-ए-कहफ़ (कहफ़ नामी गुफा में सोए हुए सज्जन पुरूषों) को लगा था जो तीन सौ (300) वर्ष से अधिक समय गुफा में सोते रहे। ऐसा ध्यान मग्नता जब ग़ौस पाक को जंगल में लगता तो वहॉं के निवासी डाकू, आपको मृतक समझकर क़ब्र में दफ़नाने के लिये ले जाते थे परंतु दफ़नाने से पूर्व ही वह ध्यान मग्नता टूट जाता।

ईश्वर की ओर से विशेष आकाशवाणी और वहि्य की पहचान:

जब मनुष्य वक्षस्थल के प्राणिवर्गों को जाग्रुक और प्रकाशमान् करके ईश्वरीय झलकियों के योग्य हो जाता है तो उस समय ईश्वर उससे वार्तालापित होता है। यूँ तो वह नितांत शक्तिमान् है किसी भी माध्यम मनुष्य से संबोध्य हो सकता है परंतु उसने अपनी पहचान के लिये एक विशेष विधि बनाई हुई है ताकि उसके मित्र शैतान के धोके से बच सकें। सबसे पहले सुर्यानी भाषा में लेख ईश्वर प्राप्ति कर्ता (सालिक) के दिल पर आता है और उसका अनुवाद भी उसी भाषा में नज़र आता है जिसका वह ज्ञानी है। वह लेख श्वेत और चमकदार होता है और ऑंखें स्वतः ही बंद होकर उसे देखती हैं। फिर वह लेख हृदय से होता हुआ सिर्री शक्ति की ओर आता है। जिसकी वजह से अधिक चमकना आरंभ हो जाता है। फिर वह लेख अख़्फ़ा शक्ति की ओर आता है, अख़्फ़ा से और चमक प्राप्त करके जिह्वा पर चला जाता है और जिह्वा निःसंकोच वह लेख पढ़ना आरंभ कर देती है। यदि यह अंतर्नाद (इल्हाम) शैतान की ओर से हो तो प्रकाशमान् हृदय उस लेख को मद्धिम कर देता है, यदि लेख बलवान् है तो सिर्री शक्ति या अख़्फ़ा उस लेख को समाप्त कर देती हैं। मान लिया यदि शक्तियों की निर्बलता के कारण वह लेख जिह्वा पर पहुँच भी जाये तो जिह्वा उसे बोलने से रोक लेती है। यह इल्हाम विशेष संतों के लिये होता है जबकि साधारण संतों को ईश्वर फ़रिश्तों या आत्माओं के माध्यम संदेश पहुँचाता है। और जब विशेष आकाशवाणी के लेख के साथ जिब्राईल भी आ जायें तो उसे वहि्य कहते हैं जो मात्र अवतारों के लिये विशिष्ट है।

* स्वर्ग किन लोगों के लिये है *

कुछ सृष्टिकालीन नारकीय भी कर्मों एवं आराधनाओं द्वारा स्वर्गीय बनने की कोशिश करते हैं परंतु अंत में शैतान की तरह बहिष्कृत हो जाते हैं, क्यों कि कृपणता, घमण्ड, ईर्ष्या इनका उत्तराधिकार है।

हदीसः जिसमें कण भर भी कृपणता और ईर्ष्या घमण्ड है वह स्वर्ग में नहीं जा सकता।

स्वर्गीय लोग यदि आराधना में न भी हों तो पहचाने जाते है, यह लोग दिल के नरम और स्वच्छ, और लोभ एवं ईर्ष्या से पवित्र और दानशील होते हैं यदि आराधनाओं में लग जायें तो बहुत उँच्च स्थान प्राप्त कर लेते हैं। और ईश्वर इन ही की मुक्ति के बहाने बनाता है और कुछ लोग मध्य वाले होते हैं इनका नेकी बदी का परवाना चलता है। और कुछ ईश्वर के प्रमुख होते हैं। इन ही आत्माओं ने सृष्टिकाल में ईश्वर से प्रेम किया था। इन्हें स्वर्ग नरक से अभिप्राय नहीं बल्कि ईश्वर के इश्क़ में तन मन धन लुटा देते हैं। ईश्वर के जाप और कृपा से अपनी आत्माओं को चमका लेते हैं, सर्व श्रेष्ठ स्वर्ग (जन्नतुल फ़िर्दौस) मात्र इन ही आत्मओं के लिये विशिष्ट है। और इन ही के लिये हदीस है किः कुछ लोग बिना हिसाब के स्वर्ग में जायेंगे।

''व्याख्या''

जिनको दुनिया का नज़ारा दिखाया ''दुनिया इनके'' भाग्य में लिख दी। इन्होंने नीचे दुनिया में आकर दुनिया प्राप्त करने के लिये जान की बाज़ी लगा दी। चोरी, डाका, घूस, व्याज जैसे अपराधों को भी नज़र अंदाज़ कर दिया यहाँ तक कि अद्वेतिता का भी इनकार कर दिया। इनमें से कुछ आत्मायें थीं जिन्होंने स्वर्ग प्राप्त करने के लिये धर्म या आराधना भी धारण की परंतु शैतान की तरह व्यर्थ प्रमाणित हुईं क्योंकि कोई धृष्ट, या ईश्वर का अप्रिय धर्म या वर्ग इनके मार्ग में रूकावट बन गया। दूसरी आत्माओं जिन्होंने स्वर्गेच्छा करी थी उन्होंने दुनियावी कामों के साथ साथ आराधना एवं कठिन तपस्या को सर्व प्रथम अधिमान दिया, स्वर्गांगनाओं एवं महलों के लोभ में पूजालयों की ओर दौड़ लगाई और स्वर्ग प्राप्त करने में सफल हो गये, परंतु इनमें से कुछ लोग आराधना में आलसी रहे चूँकि स्वर्ग इनके भाग्य में था इसलिये कोई बहाना इनके काम आ गया परंतु वह स्वर्ग का वह स्थान प्राप्त न कर सके जो सदाचारियों ने प्राप्त किया। इन ही के लिये ईश्वर ने कहाः ''क्या इन लोगों ने समझ रखा है, हम इनको सदाचारियों के बराबर कर देंगे!'' क्योंकि स्वर्ग के सात (7) स्थान हैं। साधारण लोगों को अनुदेश (हिदायत) अवतारों, ग्रंथों, गरूओं (संतों), वलियों द्वारा होती है। इन्हें उस धर्म में प्रवेश और धर्ममंत्र (कलिमा) आवश्यक है और प्रमुख (चहेते) बिना ग्रंथों के भी ईश्वर की कृपादृष्टि (नज़र-ए-रहमत) में आ जाते हैं। अर्थात- इनको अनुदेश ईश्वरीय प्रकाश (नूर) से होता है।

ईश्वर जिन्हें चाहता है नूर से हिदायत देता है। (क़ुरान)

कहते हैं कि स्वर्ग में प्रवेश के लिये धर्ममंत्र आवश्यक है। स्वर्ग में इन शरीरों को नहीं आत्माओं को जाना है और प्रवेश के समय पढ़ना है तो फिर ये आत्मायें दर्शनस्थान (मुक़ाम-ए-दीद) में जाकर किसी भी समय धर्ममंत्र पढ़ लेंगी। मरने के बाद ही सही जैसे मुहम्मद सल० के माता, पिता और चचा की आत्माओं को मृत्युपरान्त ही धर्ममंत्र पढ़ाया गया था। बल्कि अत्यंत प्रमुख आत्मायें ऊपर से ही धर्ममंत्र पढ़कर अर्थात- स्वीकार एवं पुष्टि करके ही आती हैं। ह० मुहम्मद ने कहा था कि ''मैं दुनिया में आने से पहले भी अवतार था।'' ये शब्द आत्मा के ही आत्माओं के लिये हो सकते हैं शरीर तो इस दुनिया में मिला, वंश (क़ौमें) हों तब सरदार होते हैं! अनुयाई (उम्मती) हों तब अवतार होते हैं वरना इनका क्या काम? फिर इन ही लोगों को विभिन्न धर्मों में भेजा जाता है, कोई बाबा फ़रीद के रूप में और कोई गुरू नानक के रूप में प्रकट होते हैं। ईश्वर को पाने वाली आत्मायें धर्म नहीं देखतीं बल्कि जिसकी ईश्वर से पहुँच देखती हैं उसके साथ लग जाती हैं। ग़ौस अली शाह जो एक महासन्त (वली) हुए हैं तज़करा-ए-ग़ौसिया में लिखा है कि मैंने हिन्दू योगियों से भी आध्यात्मिक लाभ (फ़ैज़) प्राप्त किया है। यह रहस्य (रम्ज़) न समझ कर मुस्लिम उलमा ने ग़ौस अली शाह पर वधयोग्य धर्माज्ञा (वाजिबुल क़त्ल के फ़तवे) भी लगाए और मुसलमानों को कहा किः जिसके भी घर में यह किताब हो उसे जला दिया जाये, परंतु वह पुस्तक बच बचाकर अभी भी हिन्दुस्तान, पाकिस्तान में उपस्थित और लोकप्रिय है।

कुछ मानव जातियों (क़ौमों) ने अवतारों को स्वीकार किया और कुछ ने अवतारों को झुटलाया, झुटलाने वाली मानव जातियों में भी ईश्वर ने उन ही के धर्मानुसार उन लोगों को भेजा और उन्होंने उनको गुनाहों से बचाने की शिक्षा दी और उन ही की आराधनाओं और रीति एवं रिवाज के माध्यम उनका मुख ईश्वर की ओर मोड़ने की कोशिश की। शांति और ईश्वरप्रेम का पाठ दिया। यदि यह लोग न होते तो आज प्रत्येक धर्म एक दूसरे के लिये ख़ूँख़्वार ही बन जाता, ऐसी आत्माओं को दुनिया में विष्णु महाराज से भी मार्गदर्शन मिलता है जो प्रत्येक धर्म का भेद जानते हैं।

इन्द्रियनिग्रह (तक़्वा) किन लोगों के लिये है?

ज्ञान द्वारा विश्वास (इल्मुलयक़ीन):- यह लोग सांसारिक होते हैं। श्रवणस्थान (मुक़ाम-ए-शुनीद) होता है। ज्ञान द्वारा विश्वास रखते हैं। इनका ईमान (श्रद्धा) सुनी-सुनाई बातों पर होता है। भटक भी जाते हैं। इन्हें इन्द्रियनिग्रह से नहीं बल्कि परिश्रम से मिलता है। चाहे भक्ष्यजीविका से कमायें या अभक्ष्य (हराम) से!

नेत्र द्वारा विश्वास (ऐनुलयक़ीन):- यह लोग संसार-मुक्त (तारकुददुनिया) कहलाते हुए भी सांसारिक लोगों के साथ ही रहते हैं परन्तु इनका मुख और हृदय ईश्वर की ओर होता है। इनको प्रायः दिव्य दृश्य (रहमानी नज़ारे) भी दिखाये जाते रहते हैं। इनका स्थान दर्शन होता है। इन्हें भी उचित परिश्रम से मिलता है। अनुचित से इन्हें हानि होती है।

परम सत्य विश्वास (हक़्क़ुलयक़ीन):- इनका स्थान समर्पितता (मुक़ाम-ए-रसीद) होता है। अर्थात- ईश्वर की ओर से कोई पद मिल जाता है और ईश्वर की कृपा दृष्टि में आ जाते हैं। इन्हें संसार निवृत्त (फ़ारिग़ुददुनिया) कहते हैं। संसार में रहकर भी उचित या अनुचित धंदे से दूर रहते हैं। यह यदि जंगलों में भी बैठ जायें तो ईश्वर इन्हें वहाँ भी जीविका पहुँचाता है। ये इन्द्रियनिग्रहों की मंज़िल है। प्राथ्मिक लोग इन्द्रियनिग्रहों की बात अवश्य करते हैं किन्तु इसमें सफल नहीं होते।

* भाग्य *

भाग्य दो प्रकार का होता है,

1- सृष्टिकालीन (अज़ल)......और......2- लंबित (मुअ़ल्लक़)।

कुछ लोग कहते हैं कि जब भाग्य में जीविका लिख दिया तो उसके लिये घूमना फिरना क्या?

मख़दूम जहानियाँ ने कहा कि जीविका प्राप्त करने के लिये घूमना फिरना भी भाग्य में लिख दिया।

उदाहरणार्थ- जैसे कि आप के लिये फूलों का गुलदस्ता छत पर रख दिया गया है। ''यह सृष्टिकालीन भाग्य है''। इसे प्राप्त करने के लिये आपको सीढ़ियों द्वारा छत पर पहुँचना है। ''यह लंबित भाग्य है'' जो आपके वश में है और इसी लंबित का हिसाब-किताब होगा, न कि सृष्टिकालीन भाग्य का! आप छत पर पहुँचेंगे और अपना भाग्य प्राप्त कर लेंगे। यदि आपने सुस्ती की और छत तक न पहुँचे तो उससे वंचित हो जायेंगे। दूसरा व्यक्ति जिसके भाग्य में छत पर गुलदस्ता नहीं है वह यदि सीढ़ियों द्वारा या कठोर परिश्रम से भी छत पर पहुँच जाये तो वह वंचित ही है।

तृतीय आत्माएँ:- जिन्होंने न दुनिया की इच्छा की और न ही स्वर्ग की इच्छुक हुईं। केवल ईश्वरीय आभा (नज़ारे) को देखती रहीं। उन्होंने संसार में आकर ईश्वर की तलाश के लिये अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया। कई साम्राज्यों को भी छोड़कर उसको पाने के लिये भूखे प्यासे जंगलों में रहते यहाँ तक कि किसी ने नदियों में भी कितने वर्ष बैठकर व्यतीत किये, सफलता के बाद यही साधु, संत (वलीयुल्लाह) कहलाये और ईश्वर की ओर से विभिन्न पदों और विभिन्न ड्युटियों पर नियुक्त हुए और नारकियों के लिये भी दवा और दुआ बन गये, कि-

इक़बाल------ निगाह-ए-मर्द मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें

इस लिये जीवात्मा (अरज़ी अरवाह) के प्रत्येक जन्म में मुर्शिद ''गुरू'' का देखा हुआ (चश्मदीद) होना अनिवार्य है। पूर्वजन्म या वंशकाल के आध्यात्मिक गुरू वर्तमान शरीर से निर्लिप्त (मुबर्रा) हो जाते हैं। जैसा कि अवतारत्व (नबूवत) भी उत्साहशील प्रेष्य (उलुलअ़ज़्म मुर्सल) के आगमनोपरान्त निर्लिप्त हो जाती है। जैसा कि मूसा कलीमुल्लाह उलुलअज़्म थे। मूसा कलीमुल्लाह के बाद ''जितने भी अवतार आये'' ईसा रूहुल्लाह (ईशु मसीह) के आने के बाद उनका धर्म भी विलीन (कलअ़दम) कर दिया गया। और ईसा

रूहुल्लाह से मुहम्मद स० तक जितने भी अवतार अरब भू-खण्ड के अतिरिक्त आये वह ह० मुहम्मद स० के आने पर सब विलीन कर दिये गये। परन्तु उत्साहशील प्रेष्य (उलुलअ़ज़्म) के धर्म का सिलसिला जारी रहा और आजतक जारी है। जिसमें आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी), इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, मूसा कलीमुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह हैं और हर वली (संत) इनके पद्‌चिन्ह पर है। क्योंकि मनुष्य के अंदर वक्षस्थल की पॉचों शक्तियों (लताइफ़) का संबंध पॉचों श्रेष्ठ अवतारों से है इस कारण से उनकी अवतारत्व और आध्यात्मिक लाभ प्रलय तक रहेगा। यह जो कहते हैं कि बिना धर्ममंत्र पढ़े कोई स्वर्ग में नहीं जायेगा। इसका तात्पर्य किसी एक अवतार का धर्ममंत्र नहीं है। बल्कि किसी भी उलुलअ़ज़्म नबी के धर्म और धर्ममंत्र की ओर संकेत है। तब ही मुहम्मद स० ने फरमाया भी था कि मैं उन उत्साहशील प्रेष्य (उलुलअ़ज़्म मुर्सल) के ग्रंथों या धर्म को झुटलाने के लिये नहीं आया बल्कि शुद्धिकरण के लिये आया हूॅ। अर्थात- पवित्र पुस्तकों में जो परिवर्तन हो गया था।

शंकर जी (आदम सफ़ीउल्लाह) का सिलसिला अब भी जारी है जो लोग मात्र हृदयभजन में हैं ईश्वर के नाम पर गिड़गिड़ाते और विनम्रता रखते हैं, तौबा करते और गुनाहों से बचने की कोशिश करते हैं यही प्रारंभिक धर्म, प्रारंभिक अवतारत्व और प्रारंभिक आराधना थी। ग़ौस या हर वली (संत) का क़दम किसी अवतार के क़दम पर होता है और इनका क़दम आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी) के क़दम पर है। मुजद्‌दिद अल्फ़ सानी ने कहा था कि मेरा क़दम मूसवी है। जबकि क़लंदरों का एक सिलसिला ईस्वी है। शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी मुहम्मदी मशरब (पंथ) से संबंध रखते हैं।

* सोच तो ज़रा तू किस आदम की संतान में से है? *

कुछ अंतरनादीय (इल्हामी) पुस्तकों में लिखा है कि इस संसार में चौदह हज़ार आदम आ चुके हैं और किसी ने कहा है कि आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी) चौदहवॉ और अंतिम आदम हैं। इस संसार में वास्तव में अनेकों आदम हुए हैं। जब आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी) को मिट्‌टी से बनाया जा रहा था तो फ़रिशतों ने कहा था कि यह भी दुनिया में जाकर दंगा फ़साद करेगा। अर्थात- फ़रिशते पहले वाले आदमों की परिस्थतियों से अवगत थे वरना उन्हें क्या पता कि ईश्वर क्या बना रहा है और यह जाकर क्या करेगा? ग्रंथमाता (लौह महफ़ूज़) में विभिन्न भाषाएॅ, विभिन्न धर्ममंत्र, विभिन्न जंत्र मंत्र, विभिन्न ईश्वर के नाम, विभिन्न पवित्र पंक्तियॉ (आयतें) यहॉ तक कि जादू का अमल (विधि) भी लिखित है जोकि हारूत मारूत दो फ़रिशतों ने लोगों को सिखाया था और दंड स्वरूप वह दोनों फ़रिश्ते मिस्र के एक शहर बाबुल के कुएॅ में उलटे लटके हुए हैं।

प्रत्येक आदम को कोई भाषा सिखाई फिर उनकी क़ौम में अवतारों को अनुदेश के लिये भेजा। तब ही कहते हैं कि संसार में सवा लाख अवतार आये, जबकि आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी) को आये हुए छः हज़ार वर्ष हुए हैं। यदि प्रति वर्ष एक अवतार आता तो छः हज़ार ही होते। कुछ समय बाद इन क़ौमों को इनकी आज्ञोलंघन के कारण नष्ट किया। जैसा कि भग्नावशेष शहरों का बाद में मिलना और वहॉ की लिखी हुई भाषाओं को किसी का भी न समझना। और किसी क़ौम को जल द्वारा डुबाकर नष्ट किया। और इनमें से नूह तूफ़ान की तरह कुछ व्यक्ति उन भू-खण्डों में बच भी गये। अन्त में शंकर जी को उन सबसे श्रेष्ठ बनाकर अरब में भेजा गया और बड़े-बड़े अवतार भी इस आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी) की संतान से जन्में। विभिन्न आदमों की विभिन्न भाषाएॅ उनकी बची हुई क़ौमों में रहीं, जब अंतिम आदम (शंकर जी) आये तो उनको सुरयानी भाषा सिखाई गई। जब शंकर जी की संतानों ने दूर-दूर तक की यात्राएॅ की तो पहले वाली क़ौमों से भी मुलाक़ात हुई, और किसी ने अच्छी जगह या हरियाली देखकर उनके साथ ही रहना आरंभ कर दिया। अरब में सुरयानी ही बोली जाती थी। फिर यह क़ौमों के मेल-जोल से अरबी, फारसी, लातीनी, संस्कृति आदि से होती हुई अंग्रेज़ी से जा मिली। विभिन्न द्वीपों में विभिन्न आदमों की संतान निवासित थी। इनमें से एक ख़ानाबदोश भी आदम था जिसकी संतान आज भी उपस्थित है और जिसके द्वारा विभिन्न क़ौमें ढूॅढने पर मिलीं। समुद्र पार की द्वीपों वाली क़ौमें परस्पर अनूभिज्ञ थीं। इतनी दूर समुद्री यात्रा न तो घोड़े से किया जा सकता था और न ही चप्पू वाली नावें पहुॅचा सकती थीं। कोलंबस मशीनी समुंद्री जहाज़ बनाने में सफल हुआ जिसके द्वारा वह प्रथम व्यक्ति था जो अमरीका के क्षेत्र को पहुॅचा। किनारे पर लोगों को देखा जो लाल वर्ण थे उसने समझा और कहा संभवतः इण्डिया आ गया है और वह इण्डियन हैं। तब ही उस क़ौम को रेड इण्डियन Red Indian कहते हैं जो उत्तरी डकोटा (NorthDakota) की सत्ता

में अब भी उपस्थित हैं। रेड इण्डियन के एक क़बीले के सरदार से पूछा कि आपका शंकर (आदम) कौन है? उसने उत्तर दिया कि हमारे धर्मानुसार हमारा आदम एशिया में है जिसकी पत्नी का नाम हव्वा है परन्तु हमारे इतिहासानुसार हमारा आदम दक्षिणी डकोटा South Dakota की एक पहाड़ी से आया था। उस पहाड़ी की निशानदेही अब भी उपस्थित है। लोग कहते हैं कि अंग्रेज़ और अमरीकन ठंडे मौसम के कारण गोरे हैं परंतु ऐसा नहीं है। किसी काले शंकर (आदम) की नस्ल भी इन क्षेत्रों में प्राचीनतम् उपस्थित है वह आजतक गोरे न हो सके यही कारण है कि मनुष्यों के रंग, वेश-भूषा, स्वभाव, बुद्धि, भाषाएँ, खुराक (भोजन) परस्पर भिन्न हैं। शंकर जी (आदम सफ़ीउल्लाह) की संतानों का सिलसिला मध्य एशिया तक ही रहा। यही कारण है कि मध्येशिया वालों के हुलिये परस्पर मिलते हैं। कहते हैं कि शंकर जी श्रीलंका में उतरे, फिर वहाँ से अरब पहुँचे और इसके बाद आप अरब में ही रहे और अरब की धरती में ही आपकी समाधि उपस्थित है तो फिर श्रीलंका में आपके उतरने और पद्चिन्हों को किसने चिन्हित किया? जो अभी तक सुरक्षित है। इसका तात्पर्य आपसे पहले ही वहाँ कोई क़बीला आबाद था। जो क़ौमें समाप्त कर दी गई हैं उनपर अवतारत्व और संतत्व भी समाप्त हो गयी और बचे खुचे लोग उन महापुरूषों से वंचित होकर कुछ समय बाद भटक गये। ज्यों-ज्यों ये क्षेत्र मिलते गये एशिया से वली (साधु-संत, ऋषिगण) पहुँचते गये और अपने-अपने धर्मों की शिक्षा देते रहे और आज सभी क्षेत्रों में एशियाई धर्म फैल गया। ईसा (Jesus Christ) यूरोशलम, मूसा बैतुलमुक़द्दस, हज़ूर पाक मुहम्मद स० मक्का, जबकि नूह और इब्राहीम का संबंध भी अरब से ही था।

कुछ जातियाँ प्रकोपों से नष्ट हुईं, कुछ की शक्लें रीछ, बंदरों की तरह हुईं। कुछ शेष लोग भयभीत होकर ईश्वर की ओर झुके और कुछ ईश्वर को प्रकोपक समझकर उससे विमुख हो गये और उसके किसी भी प्रकार की आज्ञा की अवहेलना की और कहने लगे कि "ईश्वर आदि कुछ भी नहीं, मनुष्य एक कीड़ा है, नरक एवं स्वर्ग बनी बनाई बातें हैं"। मूसा के ज़माने में भी जो क़ौम बंदर बन गई थी उन्होंने यूरोप की राह ली थी। उस समय की गर्भवती माताओं ने बाद में बंदरिया रूप में होने पर भी मनुष्यरूप को जन्म दिया था। वह क़ौम अब भी उपस्थित है, वह स्वयं कहते हैं कि हम बंदर की संतान में से हैं। जो क़ौम रीछ के रूप में परिवर्तित हुई थी उन्होंने अफ्रीका के जंगलों की ओर प्रस्थान किया था। उस समय की गर्भवती माताओं के पेट में तो मानवशिशु थे जिनके द्वारा बाद में नस्ल चली **(मम)** कहते हैं। शरीर पर लंबे-लंबे बाल होते हैं। मादाएँ अधिक होती हैं। इंसानों को उठाकर ले भी जाती हैं। इन पर धर्मरंग नहीं चढ़ता लेकिन मानव प्रवृत्त के कारण गुप्ताँगों को पत्तों द्वारा छुपाया हुआ होता है।

किसी और आदम को किसी ग़लती के कारण एक हज़ार वर्ष का दंड मिला था उसे सर्परूप में परिवर्तित कर दिया गया था। अब उसकी बची हुई क़ौम जो एक विशेष प्रकार के सर्परूप में है। जन्म के हज़ार वर्ष बाद मनुष्य भी बन जाती है। इसे **रोहा** कहते हैं। इतिहास में है कि एक दिन सम्राट सिकन्दर शिकार के लिये किसी जंगल से गुज़रा, देखा कि एक सुंदर स्त्री रो रही है। पूछने पर उसने बताया कि मैं चीन की राजकुमारी हूँ अपने पति के साथ शिकार को निकले थे लेकिन पति को शेर खागया, मैं अब अकेली रह गई हूँ। सिकन्दर ने कहा "मेरे साथ आओ! मैं तुम्हें वापस चीन भेजवा दूँगा", स्त्री ने कहा "पति तो मर गया, मैं अब वापस जाकर क्या मुँह दिखाउंगी"। सिकन्दर उसे घर ले आया और उससे शादी कर ली। कुछ महीनों बाद सिकन्दर के पेट में पीड़ा आरंभ हो गयी। हर प्रकार का उपचार कराया मगर कोई आराम न हुआ। पीड़ा बढ़ती गई। वैद्य थक हार गये। एक सपेरा भी सिकन्दर के उपचार के लिये आया। उसने सिकन्दर को अकेले में बुलाकर कहा "मैं आपका उपचार कर सकता हूँ , किन्तु मेरी कुछ शर्तें हैं, यदि थोड़े ही दिनों में मेरे उपचार से निवारण न हुआ तो निःसंदेह मुझे क़त्ल करा देना, आजकी रात खिचड़ी पकवाओ, नमक थोड़ा अधिक हो, दोनों पति-पत्नी पेट भरकर खाओ, कमरे को अंदर से ताला लगाओ कि दोनों में से कोई बाहर न जा सके, तुमको सोना नहीं, परंतु पत्नी को ऐसा लगे कि तुम सो रहे हो, पानी की बूँद भी अंदर न हो"। सिकन्दर ने ऐसा ही किया। रात के किसी समय पत्नी को प्यास लगी, देखा जलपात्र खाली है, फिर दरवाज़ा खोलने का प्रयत्न किया, देखा कि ताला है, फिर पति को देखा, अनुभूत हुआ कि निश्चिन्त सो रहा है, फिर सर्पणी बनकर नाली के छिद्र से बाहर निकल गई। पानी पीकर फिर सर्पणी के रूप में प्रवेश होकर स्त्री बन गई। महान सिकन्दर यह समस्त दृश्य देख रहा था। प्रातः सपेरे को सबकुछ बताया, उसने कहा "तेरी पत्नी नागिन है जो हज़ार वर्ष बाद रूप बदलता है, उसका विष उदरपीड़ा का कारण बना"।

फिर उस स्त्री को भ्रमण के बहाने समुद्र में लेगये और जिस स्थान फेंका वह चिन्ह अब भी पर्याप्त है। इसे भित्त सिकन्दरी कहते हैं। इनकी नस्ल भी इस संसार में उपस्थित है। साधारण साँपों के कान नहीं होते परन्तु इस नस्ल वाले साँप के कान होते हैं। पता नहीं किस आदम का क़बीला चीन के पहाड़ों में बंद है। उनके इस क्षेत्र में प्रवेश को रोकने के लिये ज़ुलक़र्नैन ने पत्थरों की दीवार बना दी थी। इनके लंबे-लंबे कान हैं, एक को बिछा लेते हैं और दूसरे को ओढ़ लेते है, इन्हें याजूज माजूज कहते हैं। वैज्ञानिकों ने अधिक्तर भू-भाग ढूँढ लिये हैं परंतु अभी भी अधिक्तर क्षेत्र ढूँढने बाक़ी हैं। हिमालय के पीछे भी बर्फानी मानव उपस्थित हैं। बहुत से मनुष्य जंगलों में भी उपस्थित हैं उनकी भाषा उनके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। वह भी अपने आदम के तरीक़े पर आराधना करते हैं और जीवन विधान के लिये उनका भी सरदारी व्यवस्था विद्यमान है। इन महाद्वीपों के अतिरिक्त और भी बड़ी धरतियाँ हैं। जैसा कि चंद्रमाँ, सूर्य, वृहस्पति, मंगल आदि, वहाँ भी शंकर (आदम) आये परंतु वहाँ प्रलय आ चुकी हैं। कहीं ऑक्सीजन को रोक कर और कहीं धरती को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया।

* मंगल ग्रह (मरीख़ Mars) में मानव जीवन अभी भी विद्यमान् है जबकि सूर्य में भी आग्नेय प्राणीवर्ग आबाद है *

कहते हैं कि एक अंतरिक्ष यात्री जब चंद्रमाँ पर उतरा। उसने ऊपर के ग्रहों का अनवेषण करना चाहा तो उसे अज़ान की ध्वनि भी सुनाई दी जिससे वह प्रभावित होकर मुसलमान हो गया था। वह मंगलग्रह की दुनिया थी जहाँ हर धर्म के लोग रहते हैं। हमारे वैज्ञानिक अभी मंगल ग्रह पर पहुँच नहीं पाये जबकि वह लोग कई बार इस दुनिया में आ चुके हैं। और परिक्षण के लिये यहाँ के मनुष्यों को भी अपने साथ ले गये। उनका विज्ञान और आविष्कारें हमसे बहुत आगे हैं। हमारे उपग्रह या वैज्ञानिक यदि वहाँ पहुँच भी गये तो उनके चंगुल से छूट नहीं सकते।

एक शंकर (आदम) को ईश्वर ने बहुत ज्ञान दिया था और उसकी संतान ज्ञान द्वारा ईश्वरधाम (बैतुलमामूर) तक जा पहुँची थी। अर्थात- जो आदेश ईश्वर फरिश्तों को देता, नीचे वह सुन लेते थे। एक दिन फरिश्तों ने कहा ''हे ईश्वर! यह क़ौम हमारे कार्यों में हस्तक्षेपी बन गई है। हम जब कोई कार्य करने दुनिया में जाते हैं तो यह पहले ही उसका तोड़ कर चुके होते हैं''। ईश्वर ने जिब्राईल से कहा ''जाओ उनकी परीक्षा लो''! एक बारह वर्ष का बच्चा बकरियाँ चरा रहा था। जिब्राईल ने उससे पूछा : क्या तुम भी कोई ज्ञान रखते हो? उसने कहा पूछो! जिब्राईल ने कहाः बताओ इस समय जिब्राईल किधर है? उसने आँखें बन्द कीं और कहाः आकाशों पर नहीं है। फिर किधर है? उसने कहाः धरतियों पर भी नहीं है। जिब्राईल ने कहाः फिर किधर है? उसने आँखें खोल दीं और कहाः मैंने चौदह लोकों में देखा, वह कहीं भी नहीं है, या मैं जिब्राईल हूँ या तू जिब्राईल है। फिर ईश्वर ने फरिश्तों को कहाः इस क़ौम को बाढ़ द्वारा विलुप्त किया जाये। उन्होंने यह आदेश सुन लिया। लोहे और शीशे के मकान बनाना आरंभ कर दिये, फिर भूकंप द्वारा उस क़ौम को विलुप्त (ग़र्क़) किया गया। उस समय उस क्षेत्र को ''कालदा'' और अब ''यूनान'' बोलते हैं।

उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा और अब हमारे वैज्ञानिक, विज्ञान विद्या द्वारा ईश्वर के कार्यों में हस्तक्षेप कर रहे हैं। इन्हें डराने के लिये छोटी मोटी तबाही और सम्पूर्ण सर्वनाश के लिये एक ग्रह को धरती की ओर भेज दिया गया है। जिसका गिरना 20-25 वर्ष तक संभावित है और वह दुनिया का अंतिम दिन होगा। उसका एक टुकड़ा पिछले दो वर्षों में वृहस्पति ग्रह पर गिर चुका है। वैज्ञानिकों को भी इसका ज्ञान हो चुका है और यह उसके गिरने से पूर्व चन्द्रमाँ पर या किसी और ग्रह पर बसना चाहते हैं। जबकि चन्द्रमाँ पर प्लाटों की बुकिंग भी हो चुकी है। यह जानते हुए भी कि चन्द्रमाँ में मानव जीवन के लक्षण अर्थात- हवा, पानी और हरियाली नहीं है! फिर चेष्टा का अभिप्राय क्या है? रहा प्रश्न खोज का! चन्द्रमाँ, वृहस्पति पर पहुँच कर भी मानवता का क्या लाभ हुआ? क्या कोई ऐसी औषधि या औषधि विधि दीर्घायु अथवा मृत्यु से छुटकारे की मिली? यदि मंगलग्रह के प्राणियों तक पहुँच भी गये तो वहाँ की ऑक्सीजन और यहाँ की ऑक्सीजन के कारण एक-दूसरी जगह रहना कठिन है। बस व्यर्थ मुद्रा का विनाश किया जा रहा है यदि वही मुद्रा रूस और अमरीका ग़रीबों पर ख़र्च कर दे तो सब ख़ुशहाल हो जायें। मानव भिन्नता के कारण एक दूसरे को तबाह करने के लिये एटम बम भी बनाये जा रहे हैं जबकि बमों के बिना भी दुनिया का सर्वनाश ही होना है।

* आकाश पर आत्माएँ सीमा से अधिक बन गई थीं *

समीपस्थ (अतिप्रिय) आत्माएँ प्रथम पंक्तियों में थीं। साधारण आत्माओं को इस दुनिया में बनाये हुए आदमों की क़ौमों में भेजा। जो कोई काली, कोई श्वेत, कोई पीली और कोई लाल मिट्टी से बनाये गये थे। इन्हें जिब्राईल और हारूत मारूत द्वारा विद्या सिखाई गई। जब धरती पर मिट्टी से आदम बनाये जाते, ख़ब्बीस जिन्न भी अवसर पाकर उनके और उनकी संतानों के शरीरों में प्रविष्ट हो जाते और उन्हें अपनी शैतानी पकड़ में लेने का प्रयत्न करते। फिर उनकी क़ौम के अवतार, संत और उनकी सिखाई हुई विद्याएँ मुक्ति का कारण बनती। अगणित आदम जोड़ों के रूप में बनाये गये जिनसे संतानों का क्रम आरंभ हुआ। परंतु कई बार मात्र अकेली स्त्री को बनाया गया। और ईश्वराज्ञा ''अमर-ए-कुन'' से उसकी संतान हुई। वह क़ौमें भी इस दुनिया में उपस्थित हैं। इस क़बीले में केवल स्त्रीयाँ ही सरदार होती हैं और वह स्त्री की संतान होने के कारण ईश्वर को भी स्त्री समझते हैं और स्वयं को फरिश्तों (देवताओं) की संतान प्रकल्पना करते हैं, चूँकि उनके स्त्री आदम का विवाह 'या पुरूष के' बिना ही बच्चे हुए थे। यही प्रथा उनमें अब भी चली आ रही है। इन क़बीलों में पहले स्त्री के किसी से भी बच्चे हो जाते हैं और बाद में किसी से भी विवाह हो जाता है और वह इसको कलंकित नहीं समझते। आत्माओं की स्वीकृति, भाग्य और श्रेणियों के कारण उन ही जैसे आदम बनाकर उन ही जैसी आत्माओं को नीचे भेजा गया। यही कारण है कि उनके लिये कोई विशेष धर्म अनुक्रम नहीं किया गया। यदि इनमें अवतार आये भी तो बहुत कम ने उनको स्वीकार किया, बल्कि अवतारों की शिक्षा का उलट किया, ईश्वर के स्थाने चंद्रमाँ, नक्षत्रों, सूर्य, वृक्षों, अग्नि यहाँ तक कि साँपों को भी पूजना आरंभ कर दिया। अन्त में शंकर जी को स्वर्ग की मिट्टी से स्वर्ग में ही बनाया गया ताकि श्रेष्ठता और विद्वता में सबसे बढ़ जाये और ख़बीसों से भी सुरक्षित रहे, क्योंकि स्वर्ग में ख़बीसों की पहुँच नहीं थी, अज़ाज़ील (इब्लीस) अपने ज्ञान के कारण पहचान गया था, जो आराधना के कारण सब फरिश्तों का सरदार बन गया था और जिन्नातों की क़ौम से था, आदम के शरीर पर ईर्ष्या से थूका था और थूक द्वारा ख़बीसों जैसा कीटाणु उनके शरीर में प्रविष्ठ हुआ जिसे **नफ़्स** कहते हैं और वह भी शंकर (आदम) की संतानों के पैतृक संपत्ति (विर्सा) में आ गया। उसी के लिये मुहम्मद स० ने कहाः ''**जब मनुष्य जन्म लेता है तो एक शैतान जिन्न भी उसके साथ जन्मता है**''।

फरिश्तों और मलाइका में अन्तर है। मलकूत में फरिश्ते होते हैं जिनकी उत्पत्ति आत्माओं के साथ हुई। मलकूत से ऊपर जबरूत के प्राणी को मलाइका कहते हैं जो आत्माओं के ईश्वराज्ञा (अमर-ए-कुन) से पहले के हैं ईश्वर की ओर से शंकर जी को नत्मस्तक करने की आज्ञा हुई। जबकि इससे पहले न ही कोई आदम स्वर्ग में बनाया गया था और न ही किसी आदम को फरिश्तों ने नत्मस्तक (सिजदा) किया था। अज़ाज़ील ने हुज्जत करी, सिजदा से इनकारी हुआ तो उसपर लानत पड़ी और उसने शंकर जी की संतानों से शत्रुता आरंभ कर दी। जबकि पहले आदमों की क़ौमें इसकी शत्रुता से सुरक्षित थीं। उनके बहकाने के लिये ख़बीस जिन्न ही काफ़ी थे। चूँकि शैतान सब ख़बीसों से अधिक शक्तिशाली था उसने शंकर जी की संतानों को ऐसे नियंत्रण किया और ऐसे अपराध सिखाये जिस कारण दूसरी क़ौमें इन एशियाइयों से घृणी होने लगीं और शंकर जी की श्रेष्ठता के कारण जिन लोगों को ईश्वर की ओर से अनुदेश मिला इतने ईश्वर भक्त (ख़ुदा रसीदः) और श्रेष्ठता वाले हो गये कि दूसरी क़ौमें आश्चर्य करने लगीं। सबसे बड़े आकाशीय ग्रंथ तौरात, ज़बूर, इंजील और क़ुरान इन्हीं पर उतरे जिनकी शिक्षा, आध्यात्मिक लाभ और बरकत से एशियाई धर्म पूरी दुनिया की क़ौमों में फैल गया। शंकर जी की अभी आत्मा भी नहीं डाली गई, फरिश्ते समझ गये थे कि इसको भी दुनिया के लिये बनाया जा रहा है। क्योंकि मिट्टी के मानव धरती पर ही होते हैं। फिर किसी बहाने धरती पर भेज दिया गया। सृष्टिकालीन कार्य ईश्वर की ओर से होते हैं परंतु आरोप बन्दों पर लग जाता है। यदि शंकर जी को बिना आरोप के दुनिया में भेजा जाता तो वह दुनिया में आकर शिकायत ही करते रहते, क्षमा याचना और रोदन (गिर्याज़ारी) क्यों करते?

(1) सृष्टिकालीन नारकीय आत्मा अन्यधर्म (ग़ैर मज़हब) के घर जन्में। उसे काफ़िर और मिथ्यावादी (काज़िब) कहते हैं। यही लोग नास्तिक, अवतारों के शत्रु और साधु-संतों के शत्रु होते हैं। घमण्डी, कठोर दिल और ईश्वर के प्राणियों को कष्ट देकर प्रसन्न होते हैं। द्वितीय श्रेणी- धर्म में आकर भी धर्म से दूर

होता है। यही आत्मा यदि किसी धार्मिक प्रवृत्त वाले घराने में जन्में तो उसे द्वयवादी (मुनाफ़िक़) कहते हैं।

(2) यही लोग अवतारों के धृष्ट (गुस्ताख़), संतों (अवलिया) से ईर्ष्यालु और धर्म में उपद्रवी होते हैं। इनकी आराधना भी इब्लीस की तरह व्यर्थ होती है। इन्हें धर्म स्वर्ग में ले जाने का प्रयत्न करता है परंतु भाग्य नरक की ओर खींचता है। चूँकि अवतारों, संतों की सहायता से वंचित होते हैं इसलिये शैतान और नफ़्स के बहकावे में आ जाते हैं कि तू इतनी विद्या जानता है और इतनी तपस्या करता है तुझमें और अवतारों में क्या अंतर है? फिर वह अपनी अंतरात्मा (बातिन) देखे बिना स्वयं को अवतार जैसा समझना आरंभ हो जाते हैं और साधु संतों को अपना मुहताज समझते हैं। फिर आध्यात्मवाद् और चमत्कारों के स्वीकारक नहीं होते बल्कि उसी कार्य के स्वीकारक होते हैं जिनकी उनमें स्वयं की निपुणता होती है, यहाँ तक कि चमत्कारों (मुअ्जज़ों) को भी जादू कहकर झुटला देते हैं। इब्लीस की शक्ति को मान लेते हैं परंतु अवतारों और संतों की शक्ति को मान लेना इनके लिये कठिन है।

(3) सृष्टिकालीन स्वर्गीय आत्मा यदि अन्यधर्म (ग़ैर मज़हब) या गन्दे संस्कार में आ जाये तो उसे विवश (माज़ूर) कहते हैं। विवश के लिये क्षमा और मुक्ति की संभावना होती है। यही आत्माएँ सीधा एवं सत्यमार्ग की तलाश में, और दलदल से निकलने के लिये साधु संतों का सहारा ढूँढती हैं। नर्म दिल, विवश, दानवीर होते हैं।

(4) यदि स्वर्गीय आत्मा किसी आकाशीय धर्म और धार्मिक वंश में जन्मे तो उसे सत्यवादी (सादिक़) और ईश्वरवादी (मोमिन) कहते हैं। यही लोग आराधना और कठिन तपस्या से ईश्वर की निकटता प्राप्त करके उसकी विरासत के हक़दार हो जाते हैं।

आध्यात्मवाद् में महत्व हृदयकँवल को है।

किसी ने दिल की टिक-टिक, किसी ने कबड्डी, किसी ने नृत्य, किसी ने दीवारें बनाईं और गिराईं और किसी ने व्यायाम द्वारा दिल की धड़कन को उभारा फिर उसके साथ अल्लाह-अल्लाह (नामदान) मिलाने में सरलता हो गई और धीरे-धीरे नामदान सर्व शक्तियों (लताइफ़) तक स्वयं ही पहुँच गया। और कुछ लोग गहराई में जाये बिना ही उनका अनुकरण करने लगे। उन्होंने भी अल्लाह-अल्लाह के साथ नृत्य आरंभ कर दिया। धड़कनों के साथ अल्लाह-अल्लाह तो न समझ और न ही मिला सके अपितु उनकी पाश्वात्मा (हैवानी रूह) जिसका संबंध उछल कूद से है अल्लाह के नाम से सिद्धि (मानूस) हो गई। इसी प्रकार संगीत के साथ अल्लाह-अल्लाह मिलाने से वानस्पतिकात्मा भी सिद्धि और शक्तिशाली होती है। संगीत वानस्पतिकात्मा का भोजन है। अमरीका में कुछ फसलों पर संगीत द्वारा प्रयोग किया गया। एक ही जैसी फसल एक ही जैसी भूमि पर उगाई गई। एक में दिन-रात संगीत और दूसरी को मौन रखा गया। जबकि संगीत वाली फसल दूसरी से विकास में बहुत अच्छी हुई।

नफ़्स (नाभिआत्मा) बहुत क्लेशद है। पवित्र होने के बाद भी बहानेख़ोर है। जबकि उसकी रूचि वाद्य और संगीत है। कुछ लोगों ने वाद्य द्वारा नफ़्स को अपनी ओर आकर्षित करके उसका मुख ईश्वर की ओर मोड़ने का प्रयत्न किया। कुछ लोगों ने गिटार के साथ अल्लाह-अल्लाह मिलाया और न सही कम से कम कान की आराधना तक पहुँच गये। मुझे एक गिटार वाले ने कथा सुनाई थी कि मैं रूचिवश रिक्त समय गिटार की तार के साथ अल्लाह-अल्लाह मिलाता रहता हूँ। कभी-कभी जब नींद से उठता हूँ तो मेरे अन्दर से उसी प्रकार अल्लाह-अल्लाह की ध्वनि आ रही होती है। ऐसे लोग दूसरी रूचियों अर्थात- गाने बजाने वालों और दर्शकों से श्रेष्ठ हो गये। परंतु किसी संतत्व (विलायत) के पद तक न पहुँच सके। यह लगन, तड़प और तलाश वाले लोग होते हैं और किसी पूर्णदक्ष धर्मगुरू (कामिल) द्वारा किसी गन्तव्य तक पहुँच जाते हैं। इस्लाम में भी और दूसरे धर्मों के संतों ने भी किसी न किसी प्रकार से ईश्वर के नाम को अपने अंदर समोने का प्रयत्न किया। जो कर्म ईश्वर की ओर मोड़े और उसके इश्क़ में वृद्धि करे वह अनुप्युक्त नहीं हैं।

हदीसः- ''ईश्वर कर्मों को नहीं बल्कि संकल्पों (नियतों) को देखता है''।

धर्मशास्त्र वाले इसको दूषित (मअ़यूब) और ग़लत समझते हैं क्योंकि वह धर्मशास्त्र से ही संतुष्ट और संतृप्त हो जाते हैं। परंतु वह लोग जो धर्मशास्त्र से आगे इश्क़ की ओर बढ़ना चाहते हैं, या वह लोग जो धर्मशास्त्र (शरीयत) में नहीं हैं उन्हें कुछ और पर्याय (मुतबादल) करने से क्यों रोका जाता है?

* ईश्वरधर्म (दीन–ए–इलाही) *

समस्त धर्म इस दुनिया में अवतारों द्वारा बनाये गये। जबकि उससे पूर्व स्वयं इश्क़, स्वयं आशिक़ और स्वयं माशूक़ था। और वह आत्माएँ जो उसकी निकटता, कान्ति (जलवे) और प्रेम में थीं वही इश्क़–ए–इलाही, दीन–ए–इलाही और दीन–ए–हनीफ़ था। फिर उन ही आत्माओं ने दुनिया में आकर उसको पाने के लिये अपना तन, मन न्योछावर कर दिया। यह पहले विशेष तक था, अब आध्यात्मवाद् द्वारा सर्व साधारण तक भी पहुँच गया।

हदीसः– ह० अबू हुरैराः मुझे मुहम्मद स० से दो ज्ञान प्राप्त हुए एक तुम्हें
बता दिया, दूसरा बताऊँ तो तुम मुझे क़त्ल कर दो!

जब जलाशय से सूखी पुस्तकें निकलीं तो मौलाना रोम ने कहाः **ईं चीस्त** (यह कैसी विद्या है)?
शाह शम्स ने कहाः ''**ईं ऑं इल्म अस्त कि तू नमी दानी** (यह वह विद्या है जिसे तू नहीं जानता)''।

जब मूसा ने कहा कि क्या कुछ और ज्ञान भी है? तो
ईश्वर ने कहा कि विष्णु महाराज (ख़िज़्र) के पास चला जा!

प्रत्येक आराधक (नमाज़ी) की प्रार्थनाः

''हे ईश्वर मुझे उन लोगों का सीधा मार्ग दिखा जिनपर तेरा पुरस्कार हुआ!
अल्लामा इक़्बाल रह०ः उसको क्या जाने बेचारे दो रकात के इमाम!

वह आत्माएँ जो सृष्टिकाल से ही पदधारी (बा मरतबा) हैं। ईश्वर जिनसे प्रेम करता है और जो ईश्वर से प्रेम करती हैं दुनिया में आकर भी ईश्वर का नाम लेवा हुईं, जैसे– ईशु मसीह (ईसा) प्रसूतावस्था में ही बोल उठे थे कि मैं अवतार हूँ जबकि माँ मरियम को जन्म से पूर्व ही जिब्राईल शुभ सूचना देचुका था। मूसा के बारे में फ़िरौन को भविष्यवाणी थी कि फ़लाँ क़बीले से एक बच्चा जन्म लेगा जो तुम्हारी विनाशता का कारण बनेगा और ईश्वर का विशेष बंदा होगा। हज़ूर पाक ने भी कहा थाः ''मैं दुनिया में आने से पूर्व भी अवतार था''। बहुत सी प्रिय और सृष्टिकालीन आत्माएँ विभिन्न धर्मों और शरीरों में उपस्थित हैं।

अंतिमकाल में ईश्वर किसी एक आत्मा को दुनिया में भेजेगा जो इन आत्माओं को ढूँढकर एकत्र करेगा और इन्हें याद दिलायेगा कि कभी तुमने भी ईश्वर से प्रेम किया था। ऐसी समस्त आत्माएँ चाहे किसी भी धर्म या निष्धर्म शरीरों में थीं उसकी पुकार पर उपस्थित हूँ (लब्बैक) कहेंगी और उसके चारों ओर एकत्रित हो जायेंगी। वह ईश्वर का एक विशेष नाम इन आत्माओं को प्रदान करेगा जो हृदय से होता हुआ आत्मा तक जा पहुँचेगा और फिर आत्मा उस नाम का जाप करने वाली बन जायेगी। वह नाम आत्मा को एक नया उत्साह, नई शक्ति और नया प्रेम प्रदान करेगा। उसके प्रकाश (नूर) से आत्मा का संबंध पुनः ईश्वर से जुड़ जायेगा।

हृदयभजन, आत्माजाप (ज़िक्र–ए–रूह) का माध्यम है। जैसा कि आराधना अर्थात– नमन, उपवास (नमाज़, रोज़ा) हृदयभजन (ज़िक्र–ए–क़ल्ब) का माध्यम है। यदि किसी की आत्मा ईश्वर के जाप में लग गई तो वह उन लागों से है जिन्हें तराज़ू , मृत्योपरान्त कर्मफल दिवस (यौम–ए–महशर) के दिन का भी भय नहीं, आत्मा के आगे के जाप (ज़िक्र) और आराधना उसके उच्च पद के साक्षी हैं। जिन लोगों की मंज़िल हृदयकँवल से आत्मा की ओर बढ़ रही है वही ईश्वरधर्म में पहुँच चुके या पहुँचने वाले हैं। इनको धर्मग्रंथों से नहीं बल्कि नूर से अनुदेश है और नूर से ही गुनाह से परे हो जाते हैं। और जो सुनकर या परिश्रम से भी इस स्थान से वंचित हैं वह इस श्रृंखला में सम्मिलित नहीं हैं यदि हृदयभजन एवं आत्माजाप के बिना स्वयं को इस श्रृंखला में कल्पना किया या उनका स्वाँग किये तो वह मिथ्यावादी (ज़िन्दीक़) हैं। जबकि साधारण लागों की मुक्ति का माध्यम आराधना और धर्म हैं। अनुदेश का माध्यम आकाशीय ग्रंथ हैं। बख़शिश (शिफ़ाअ़त) का माध्यम अवतारत्व और संतत्व है। बहुत से मुस्लिम वलियों की शिफ़ाअ़त को नहीं मानते। लेकिन हज़ूर मुहम्मद स० ने अपने संगतियों को (ज़ोर देकर) कहा था कि अवैस क़रनी से उम्मत के लिये बख़शिश (मुक्ति) की दुआ कराना।

* आत्माओं का धर्म *

ईश्वरइश्क़ और ईश्वरधर्म वालों की पहचान

जिसमें सब नदियाँ विलीन हो जायें वह समुंद्र कहलाता है! और जिसमें सब धर्म विलीन (ज़म) होकर एक हो जायें वही ईश्वरइश्क़ और ईश्वरधर्म है।

जित्थे चार मज़हब आ मिलदे हू। (सुल्तान बाहू रह०)

प्राथमिक पहचानः

जब हृदयकँवल और आत्मा का जाप आरंभ हो जाये, चाहे आराधना से हो या किसी पूर्ण दक्ष के दिव्य नेत्र से हो दोनों अवस्थाओं में वह सृष्टिकालिक है। गुनाहों से घृणा होना आरंभ हो जाये यदि गुनाह हो भी जाये तो उसपर भर्त्सना (मलामत) हो और उससे बचने की विधियाँ सोचे।

" मुझे वह लोग भी पसन्द हैं जो गुनाहों से बचने की विधियाँ सोचते हैं (कुरान)"

दुनिया का प्रेम दिल से निकलना और ईश्वरप्रेम का आधिपत्य आरंभ हो जाये। मोह, ईर्ष्या, कृपणता और घमण्ड से छुटकारा अनुभूत हो। जिह्वा किसी की चुगली से रूक जाये। विनीतता (आजिज़ी) अनुभूत हो। कृपणता के स्थान दान शीलता तथा झूठ जाता दिखे। हराम इच्छायें (नफ़्सनी) हलाल में परिवर्तित हो जायें। हराम माल, हराम खाने, हराम कामों से घृणा पैदा हो।

अत्यन्त पहचानः

चरस, अफ़ीम, हिरोइन, तम्बाकू और शराब आदि से पूर्णरूपेण छुटकारा हो जाये। पवित्रतम् हस्तियों से स्वप्न या ध्यानमग्नता (मुराक़बा) या अन्तर्ज्ञान (मुकाशफ़ा) द्वारा मुलाक़ाती हो जाये। अपवित्र नाभिआत्मा (नफ़्स अम्मारा) से पवित्रतम् (नफ़्स मुतमइन्ना) बन जाये। मस्तिष्क कँवल (अन्ना) ईश्वर के सम्मुख, भगवान और भक्त के बीच सब पर्दे उठ जायें। पाप-मुक्त, ईश्वरप्रेम, ईश्वरमिलन, भक्त से भगवान और निर्धन से धनाड्य (ग़रीब नवाज़) बन जाये।

क्योंकि इस श्रृंखला में विभिन्न धर्मों से आकर विशेष आत्माएँ सम्मिलित होंगी जिन्होंने सृष्टिकाल में ईश्वर की गवाही में धर्ममंत्र पढ़ लिया था। इसलिये किसी भी धर्म की पाबन्दी नहीं होगी। प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म की आराधना कर सकेगा परंतु हृदयभजन सब का एक होगा अर्थात- विभिन्न धर्मों के बावजूद हृदय से सभी एक हो जायेंगे। फिर जब हृदयों में ईश्वर आया तो सब ईश्वर वाले हो जायेंगे। इसके बाद ईश्वर की इच्छा है इन्हें अपने पास रखे या किसी भी धर्म में अनुदेश के लिये भेज दे अर्थात- कोई लाभदायक होगा, कोई अद्वितीय, कोई सिपाही होगा और कोई कमाण्डर होगा। इनकी सहायता और साथ देने वाले गुनाहगार भी किसी न किसी पदवी (मरतबा) में पहुँच जायेंगे। जो लोग इस टोले में सम्मिलित न हो सके उनमें से अधिक्तर शैतान (दज्जाल) के साथ मिल जायेंगे। चाहे वह मुस्लिम हों या अन्य (ग़ैर मुस्लिम) हों। अन्त में इन दोनों टोलों में घमासान युद्ध होगा। ईशु मसीह, मेहदी, कालकी अवतार वाले मिलकर इन्हें पराजित कर देंगे। बहुत से दज्जालिये (उपद्रवी) क़त्ल कर दिये जायेंगे। जो बचेंगे वह भय और विवशता के कारण मौन रहेंगे। मेहदी (कालकी अवतार, मसीहा) और ईसा का लोगों के हृदयों पर अधिकार हो जायेगा। पूरी दुनिया में शान्ति स्थापित हो जायेगी। भिन्न-भिन्न धर्म समाप्त होकर एक ही धर्म में परिवर्तित हो जायेंगे। वह धर्म ईश्वर का रूचिकर, समस्त अवतारों के धर्मों और ग्रंथों का निचोड़, समस्त मानवता के लिये मान्य योग्य, समस्त आराधनाओं से श्रेष्ठ यहाँ तक कि ईश्वरप्रेम से भी श्रेष्ठ, ईश्वर का इश्क़ होगा।

"**जित्थे इश्क़ पहुँचावे ईमान नूँ वी ख़बर नहीं**" ---(सुल्तान बाहू रह०)

अल्लामा इक़बाल ने इसी समय के लिये चित्रण किया थाः

* दुनिया को है उस मेहदी-ए-बरहक़ की ज़रूरत
हो जिसकी नज़र ज़ल्ज़ला-ए-आलम-ए-अफ़कार

* खुले जाते हैं असरार-ए-निहानी, गया दौर-ए-हदीस-ए-लन्तरानी
हुई जिसकी ख़ुदी पहले नमूदार, वही मेहदी वही आख़िर ज़मानी

* खोलकर आँख मेरी आईना-ए-अदराक में,
आने वाले दौर की धुंदली सी एक तस्वीर देख

लौलाक लमा देख ज़मीं देख फ़िज़ा देख,
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख
* गुज़र गया अब वह दौर साक़ी कि छुपके पीते थे पीने वाले
बनेगा सारा जहान मयख़ाना हर एक ही बादः ख़्वार होगा
ज़माना आया है बे हिजाबी का आ़म दीदार–ए–यार होगा
सुकूत था परदादार जिसका वह राज़ अब आशकार होगा
निकल के सहरा से जिसने रोमा की सल्तनत को पलट दिया था
सुना है कुदसियों से मैंने वह शेर फिर होशियार होगा

समस्त आकाशीय ग्रंथ और वेद (सहीफ़ा) ईश्वर का धर्म नहीं हैं। इन पुस्तकों में आराधना, उपवास और दाढ़ियाँ हैं जबकि ईश्वर इसका पाबन्द नहीं है। यह धर्म अवतारों के अनुयाइयों (उम्मतों) को प्रकाशमय और पवित्र करने के लिये बनाये गये। जबकि ईश्वर स्वयं पवित्रतम् प्रकाश (नूर) है। और जब कोई मनुष्य ईश्वर–मिलन (वस्ल) के बाद नूर बन जाता है तो फिर वह भी ईश्वरधर्म (इश्क़) में चला जाता है। ईश्वर का धर्म प्यार मोहब्बत है। 99 नामों का अनुवाद है। अपने मित्रों का वर्णन करने वाला है स्वयं इश्क़, स्वयं आशिक़, स्वयं माशूक़ है। यदि किसी ईश्वरभक्त को भी उसकी ओर से इनमें से कुछ भाग प्रदान हो जाये तो वह ईश्वरधर्म में पहुँच जाता है। फिर उसकी आराधना (नमाज़) ईश्वरदर्शन और उसकी रूचि ईश्वरभजन है यहाँ तक कि उसके जीवन के समस्त अवतारीयकार्यानुकरणों (सुन्नतों), धार्मिकीय मूल कर्मों (फ़रज़ों) का प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) भी ईश्वरदर्शन है। जिन्नात, फ़रिश्ते और मनुष्यों की सम्मिलित आराधनायें भी उसके श्रेणी तक नहीं पहुँच सकती।

ऐसे ही व्यक्ति के लिये शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने कहा है किः "जिसने ईश्वर–मिलन (विसाल) पर पहुँच कर भी इबादत की या इरादा किया तो उसने अपमान (कुफ़रान–ए–निअ़मत) किया"।
बुल्हे शाह ने कहाः "असाँ इश्क़ नमाज़ जदों नियती ए...भुल गए मंदिर मसीती ए"।
अल्लामा इक़बाल ने कहाः "इसको क्या जाने बेचारे दो रकात के इमाम!"
इस ज्ञान (विद्या) के बारे में अबू हुरैरा ने कहा थाः "कि मुझे हज़ूर पाक से दो ज्ञान प्रदान हुए, एक तुम्हें बता दिया, यदि दूसरा बताऊँ तो तुम मुझे क़त्ल कर दो"।

इतिहास साक्षी है कि जिन्होंने भी उस ज्ञान को खोला, शाह मंसूर और सरमद की तरह क़त्ल कर दिये गये और आज गोहर शाही भी इस ज्ञान के कारण क़त्ल के कगार पर खड़ा है।

अवतारों की धर्मशास्त्र की पाबंदी अनुयाईगणों (उम्मत) के लिये होती है वरना उन्हें किसी आराधना की आवश्यक्ता नहीं होती, वह धर्मशास्त्र से पूर्व ही बल्कि सृष्टिकाल दिवस से ही अवतार होते हैं, चूँकि उन्होंने धर्म को उदाहरण (उपमा) के रूप में संपूर्ण करना होता है उनके किसी एक धर्मास्तम्भिक कार्य (रूकुन) के छोड़ने या कर्म को भी अनुयाईगण विधान (सुन्नत) बना लेते हैं इस कारण से उन्हें सचेत और सामान्यावस्था (सहू) में रहना पड़ता है। क्या कोई व्यक्ति यह कह सकता है कि कोई भी अवतार यदि किसी भी आराधना में नहीं है तो क्या वह नरक में जा सकता है? कदापि नहीं! क्या कोई व्यक्ति कह सकता है कि आराधना के बिना अवतार नहीं बन सकता? क्या कोई यह भी कह सकता है कि ज्ञान सीखे बिना अवतारत्व (नबूवत) नहीं मिलती? फिर सन्तों पर आपत्तियाँ क्यों होती हैं? जबकि संतत्व अवतारत्व का प्रतिरूप है। याद रखें जिन्होंने ईश्वरदर्शन के बिना ईश्वर–मिलन का दावा किया या स्वयं को उस स्थान पर कल्पना करके अनुकरण किया, वह पाखण्डी और मिथ्यावादी हैं। और कुरान ने ऐसे ही झूठों पर लानत भेजी है जिनके कारण हज़ारों का समय और ईमान नष्ट होता है।

यह पुस्तक प्रत्येक धर्म प्रत्येक वर्ग (फ़िर्क़ा) और प्रत्येक मनुष्य के लिये
विचारयोग्य और अन्वेषणयोग्य है और आध्यात्मवाद् विरोधियों के लिये चुनौती है।

* गोहर शाही के उपदेश *

''तीन भाग वाह्य ज्ञान के हैं, और एक भाग आन्तरिक ज्ञान का है।
वाह्य ज्ञान प्राप्त करने के लिये किसी मूसा और आन्तरिक ज्ञान के लिये
किसी विष्णु महाराज (ख़िज़र) को तलाश करना पड़ता है''।

....

''जिब्राईल के बिना जो वाणी आई, उसे अंतरनाद् (इलहाम) और जो ज्ञान आया उसे वेद
और ईश्वरकथन (सहीफ़े और हदीस क़ुदसी) कहते हैं और जिब्राईल के साथ जो ज्ञान
आया उसे क़ुरान कहते हैं। चाहे वह वाह्य ज्ञान हो या आन्तरिक ज्ञान हो!
उसे तौरात कहें, ज़बूर कहें या इंजील कहें''

....

''धर्मविद्वानों (उलमा) से यदि कोई ग़लती हो जाये तो उसे राजनीति कहकर
छुटकारा प्राप्त कर लेते हैं, संतों से कोई ग़लती हो जाये, उसे भेद (हिकमत)
समझकर नज़र अन्दाज़ कर देते हैं जबकि अवतारों पर ग़लती का दफ़ा नहीं लगता''

....

''जो जिस तपस्या (शुग्ल) में है, अंदर से उनकी संबंधित आत्माएँ शक्तिशाली हैं। और
जो किसी भी शुग्ल में नहीं हैं, उनकी आत्माएँ सुसुप्त और स्तब्ध हैं। और जिन्होंने किसी
भी विधि से ईश्वर का नाम इन आत्माओं में बसा लिया फिर उनका शुग्ल हर समय,
सातों शक्तियों का जाप (ज़िक्र सुल्तानी) और ईश्वरीय इश्क़ है''
तब ही अल्लामा इक़बाल ने कहाः ''अगर हो इश्क़ तो कुफ़्र भी है मुसलमानी''
सच्चल साईं ने कहाः ''बिन इश्क़–ए–दिलबर के सच्चल, क्या कुफ़्र है क्या इस्लाम है''
सुल्तान बाहू ने कहाः ''जित्थे इश्क़ पहुँचावे, ईमान नूँ वी ख़बर न काइ''
ऐसे लोग जब किसी धर्म में होते हैं या जाते हैं तो उनकी बरकत से उस क्षेत्र पर
ईश्वर की प्रेमवर्षा (बारान–ए–रहमत) आरंभ हो जाती है। फिर वह बाबा फ़रीद हों
तो हिन्दू, सिख भी उनकी चौखट पर! यदि बाबा गुरू नानक हों तो मुस्लिम, ईसाई
भी उनकी चौखट पर चले आते हैं''।

कालकी अवतार (इमाम मेहदी) समस्त धर्मों का नवीनीकरण करेंगे

जिस प्रकार मुहम्मद स० के समाप्तावतारत्व के बाद मुस्लिम में शुद्धिकारक (मुजद्दिद) आते रहे और वातावरणानुसार धर्म में कुछ नवीनीकरण करते रहे उसी प्रकार कालकी अवतार (इमाम मेहदी) के आने के बाद उन (शुद्धिकारकों) की नवीनीकरण समाप्त हो जायेगी और समस्त धर्मानुसार कालकी अवतार की अपनी नवीनीकरण होगी। **कुछ पुस्तकों में है वह एक नया धर्म बनायेंगे।**

* * * * * *

* गोहर शाही के उपदेश *

"यदि कोई आजीवन आराधना करता रहे, लेकिन अंत में कालकी अवतार (इमाम मेहदी,मसीहा) और ईशु मसीह का विरोध कर बैठा जिनको दुनिया में पुनः आना है (ईशु मसीह का सशरीर और कालकी अवतार का जीवात्मा द्वारा आना है) तो वह ब्लीअम बाऊर की तरह नारकीय और इब्लीस की तरह बहिष्कृत (मर्दूद) है। यदि कोई आजीवन कुत्तों जैसा जीवन व्यतीत करता रहा लेकिन अंत में उनका साथ और उनसे प्रेम कर बैठा तो वह कुत्ते से श्री क़तमीर बनकर स्वर्ग में जायेगा"।

"कुछ फिर्क़े और धर्मों वाले कहते हैं कि ईशु (ईसा) मर गये। अफगानिस्तान में उनकी समाधि है। यह ग़लत प्रोपगंडा है। अफगानिस्तान में किसी और ईसा नामक बुजुर्ग की समाधि है। उस पदयात्रा काल में महींनों की यात्रा पर जाकर दफ़नाना क्या उद्देश्य रखता था? फिर वह कहते हैं: "आकाश पर कैसे उठाये गये"? हम कहते हैं शंकर जी आकाश से कैसे लाये गये? जबकि इद्रीस अ० भी दृश्यित शरीर द्वारा स्वर्ग में अबतक उपस्थित हैं ख़िज़र (विष्णु) और इलियास जो दुनिया में हैं उनको भी अभी तक मौत नहीं आई। ग़ौस पाक के पोते हयातुल अमीर 600 वर्ष से जीवित हैं। ग़ौस पाक ने कहा था: "उस समय तक नहीं मरना जबतक मेरा सलाम मेहदी अ० को न पहुँचा दो"। शाह लतीफ़ को बरी इमाम की उपाधि उन्होंने ही दी थी। मरी की ओर बारह कोह में उनकी बैठक के निशान अभी तक सुरक्षित हैं"।

"वाह्य पाप का दंड जेल, जुर्माना या एक दिन की फाँसी है। यदि कोई ईश्वरप्राप्ति के मार्ग (राह-ए-फ़क्र) में है तो उसकी सज़ा भर्त्सना है। जबकि आंतरात्मिक पापों का दंड बहुत अधिक है। चुग़ली करने वाले के पुण्य से जुर्माना द्वितीय पक्ष के पुण्य में सम्मिलित किया जाता है। लोभ, ईर्ष्या, कृपण्ता, और घमण्ड उसके लिखे हुए पुण्यों को भी मिटा देते हैं। यदि उसमें कुछ नूर है तो अवतारों और साधु संतों की धृष्टता (गुस्ताख़ी) और द्वेष (बुग्ज़) से छिन जाता है। जैसा कि शेख़ सनआ़न का शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की गुस्ताख़ी से दैवज्ञान एवं चमत्कार (कशफ़ व करामत) का छिन जाना"।

....

वर्णन है कि जब बायज़ीद बुस्तामी को पता चला कि एक व्यक्ति उनकी बुराई करता है तो आपने उसका कार्यवृत्ति (वज़ीफ़ा) निश्चित कर दिया। वह कार्यवृत्ति भी लेता रहा और बुराई भी करता रहा। एक दिन उसकी पत्नी ने कहा: "नमक हरामी छोड़, या कार्यवृत्ति छोड़ या बुराई छोड़"। फिर उसने प्रशंसा करनी आरंभ कर दी। आपको जब प्रशंसा का पता चला तो उसका कार्यवृत्ति बंद कर दिया। फिर वह आपके पास उपस्थित हुआ कि जब बुराई करता था, कार्यवृत्ति मिलता था, अब प्रशंसा के कारण कार्यवृत्ति क्यों बंद हुआ? आपने उत्तर दिया: "तू उस समय मेरा मज़दूर था, तेरी बुराई से मेरे गुनाह जलते, मैं उसका तुझे प्रतिकर देता था अब किस कार्य का प्रतिकर दूँ?" ऊपर लिखित बुराइयों का संबंध अति दुष्ट नाभिआत्मा (नफ़्सअम्मारा) से है, जिसका सहायक इबलीस है। जबकि इन्द्रियनिग्रह (तक़वा), दानशीलता, क्षमा (दरगुज़र), धैर्य एवं धन्यवादिता, विनीतता और ईश्वरज्योति का संबंध ईश्वरदृष्टि में आये हुए वीर गति प्राप्त हृदयकँवल (क़ल्ब शहीद) से है। जिसका सहायक आध्यात्मिक गुरू (वली, मुर्शिद) है।

....

जबतक नाभिआत्मा अतिदुष्ट है किसी भी पवित्र वाणी के प्रकाश दिल में ठहर नहीं सकते निःसंदेह शब्द एवं पंक्तियों (आयतों) का कंठस्थक (हाफ़िज़) क्यों न बन जाये, तोता ही है। जब तेरी नाभिआत्मा पवित्र-संतुष्टित (मुतमइन्ना) हो जायेगी फिर अपवित्र वस्तु तेरे अंदर ठहर नहीं सकती, फिर तू हलाल पक्षी है। नाभिआत्मा को पवित्र करने के लिये किसी नाभिभंजक (नफ़्स शिकन) को तलाश कर। जो हर समय ईश्वर की ओर से ड्युटी पर तैनात है। शरीर की वाह्य पवित्रता (तहारत) जल से होती है जबकि शरीर की आंतरिक पवित्रता नूर से होती है। पवित्रता के बिना गन्दा और अपवित्र है। स्वच्छ शरीर आराधनायोग्य होता है, जबकि स्वच्छ हृदय ईश्वरदृष्टियोग्य होता है। फिर ही आकाशीय ग्रंथ अनुदेश करते हैं पवित्रों को (हुदल्लिल मुत्तक़ीन)। वरना ग्रंथों वाले ही ग्रंथों वालों के शत्रु बन जाते हैं। मुजद्दिद अल्फ़ सानी मकतूबात में लिखते हैं: "कुरान उन लोगों के पढ़ने योग्य नहीं जिनके नाभिआत्मा अति दुष्ट हैं। प्राथ्मिकों को चाहिये कि पहले ईश्वर भजन करे अर्थात आंतरिक को पवित्र करे, अन्तगामी (मुन्तही) को चाहिये कि फिर कुरान पढ़े"। **हदीस**: कुछ लोग कुरान पढ़ते हैं और कुरान उनपर लानत करता है।

बुल्हे शाहः खा के सारा मुकर गये, जिन्हाँ दे बग़ल विच कुरान

तपस्वी को भ्रम है कि वह ईश्वर के लिये आराधना और रात्रि जाग्रिता कर रहा है इसलिये वह ईश्वर के निकट है। आराधना के बाद तेरी प्रार्थना, स्वास्थ्य, दीर्घायु, धन दौलत और अपसरायें एवं राज महलें हैं। सोच! क्या तूने कभी भी यह प्रार्थना की थी, हे ईश्वर मुझे कुछ नहीं चाहिये मात्र तू चाहिये?

....

धर्मविद्वान को भ्रम है कि मैं ईश्वर समीप्ता में पारितोषित (बख़्शा-बख़्शाया) हुआ हूँ। क्योंकि मेरे अंदर ज्ञान और कुरान है। फिर तू दूसरों को नारकीय क्यों कहता है जबकि हर मस्लिम को भी कुछ न कुछ ज्ञान और कुरान की बहुत सी पंक्तियाँ याद हैं। सोच! ज्ञान कौन बेचता है? स्वयं कौन बिकता है? साधु संतों (वलियों) की पीठ पीछे बुराई कौन करता है? ईर्ष्यालु , घमंडी, और कृपण कौन होता है? दिल में और, जुबान में और, प्रातः और, संध्या को और, यह किसका व्यवहार है? सच को झूठ और झूठ को सच बनाकर कौन संमुख करता है? यदि तू इनसे दूर है तो तू प्रतिनिधि (ख़लीफ़ा-ए-रसूल) है! तेरी ओर पीठ करना भी अपमान है।

अर्थात.... पाठक (क़ारी) नज़र आता है, वास्तव में है कुरान।

यदि तू इन कुप्रकृतियों (ख़सलतों) में खोया हुआ है तो फिर तू वही है जिसके लिये भेड़िये ने कहा था कि यदि मैंने यूसुफ़ को खाया हो तो ईश्वर मुझे चौदहवीं शताब्दी के धर्म विद्वानों से उठाये।

सत्य एवं सीधा मार्ग (सिरात मुस्तक़ीम)

1- जिनके वाह्‌य सुंदर परंतु आंतरिक काले हैं, धर्म में उपद्रवी हैं, शैतान के प्रतिनिधि हैं।

हदीस:- जाहिल आलिम से डरो और बचो, ''जिसकी जिह्वा विद्वान और हृदय निष्ज्ञान अर्थात- काला हो''।

2- आंतरिक सुंदर परंतु वाह्‌य नष्ट। इनको दीवाना (मजज़ूब), विवश (मअ़ज़ूर), मस्ताना (सुकर) और अद्वितीय (मुनफ़रिद्) कहते हैं।

इश्क़ में अक़्ल ही न रही तो हिसाब-ए-हश्र क्या? (तर्याक़ क़ल्ब)

धर्म के लिये परेशानी, परंतु ईश्वर के समीप्ता में होते हैं। परंतु और अधिक पद प्राप्त नहीं कर सकते, पदधारक पुष्टि अनुकरणकर्ता मिथ्यावादी (बामर्तबा तस्दीक़, नक़्क़ालिये ज़िंदीक़)। इन्होंने राष्ट्रपति अय्यूब, बेनज़ीर, और नवाज़ शरीफ़ जैसों को उनके राज्यकाल में डण्डे मारे और गालियाँ दीं। तुम किसी सत्ताधारी को डंडे मार कर दिखाओ, अर्थात- यह केवल उन्हीं तक सीमित है। दूसरों के लिये नहीं है।

3- वाह्‌य सुंदर आंतरिक भी सुंदर। वाह्‌य आराधना के अतिरिक्त हृदयभजन में भी होते हैं। इनको ईश्वर परिचित विद्वान (आलिम रब्बानी) कहते हैं। यही अवतार के सिंहासन (मिमबर-ए-रसूल) और धर्म के उत्तराधिकारी होते हैं और जब किसी का वाह्‌य और आंतरिक एक हो जाता है तो उसे ईश्वर का प्रतिनिधि (नायब-ए-अल्लाह) कहते हैं। यदि स्वप्न में या आध्यात्मिक रूप से तीर्थ (हज) करता है तो वाह्‌य में भी उसका स्थान मिलता है, बल्कि दृश्यित तीर्थ से बहुत ही अधिक। आत्माओं की आराधना (नमाज़) वाह्‌य आराधना की मान्यता रखती है, बल्कि कहीं अधिक। यदि वाह्‌य में आराधना करता है तो आंतरिक में भी उसकी आराधना ईश्वर प्राप्ति (मेराज) बन जाती है, यही लोग हैं, शरीर इधर, आत्मा उधर, संयास (फ़क़्र) विभाग में इनको ज्ञातक (मुआ़रिफ़) भी कहते हैं। जबकि आशिक़ के लिये ईश्वरदर्शन ही पर्याप्त है। कुछ लोग कहते हैं ईश्वरदर्शन हो ही नहीं सकता परंतु यह दर्शन वाला ज्ञान हज़ूर पाक (मुहम्मद स०) से आरंभ हो चुका है। इमाम अबू हनीफ़ा के कथनानुसारः ''मैंने (99) वार ईश्वर को देखा है''। बायज़ीद बुस्तामी कहते हैंः ''मैंने (70) वार ईश्वर का दर्शन किया है''। दर्शन मस्तिष्कात्मा (अन्ना) से होता है, और तुम मस्तिष्कात्मा की विद्या एवं जाप से अन्भिज्ञ हो।

* ईश्वर का मित्र *

यदि किसी को लोग (ख़ल्क़-ए-ख़ुदा) देव ज्ञान एवं चमत्कार और आध्यात्मिक लाभ के कारण संत (वली) मानते हैं लेकिन उसके किसी कर्म या धर्म के कारण तू हृदय-क्षुब्ध (दिल बर्दाश्ता) है। उसकी निंदा करने से बेहतर है तू उधर जाना छोड़ दे। क्या पता! वह कोई ईश्वर दृष्टिगत (मंज़ूरे ख़ुदा) हो! अमर धर्मगुरू (शेख़ बक़ा) हो! या कोई लाल शहबाज़ हो! कोई ख़िज़र (विष्णु) हो! या साईं बाबा हो! या गुरूनानक हो! कोई बुल्हे शाह हो, और कोई सदा सुहागन भी हो सकता है!

* गोहर शाही का मानवजगत के लिये क्रांतिकारी संदेश *

मुस्लिम कहता है: ''मैं सबसे उच्च हूँ'', जबकि यहूदी कहता है: ''मेरा स्थान मुस्लिम से भी ऊँचा है'', और ईसाई कहता है: ''मैं इन दोनों से बल्कि सब धर्मों वालों से श्रेष्ठ हूँ क्योंकि मैं ईश्वर के पुत्र का अनुयाई (उम्मत) हूँ''। परंतु **गोहर शाही** कहता है: ''सबसे श्रेष्ठ और उच्च वही है जिसके हृदय में ईश्वरप्रेम है चाहे वह किसी भी धर्म से न हो! ज़ुबान से जाप एवं आराधना उसकी आज्ञा पालन एवं फ़रमॉबरदारी का प्रमाण है जबकि हृदयभजन, ईश्वरप्रेम और संपर्क का माध्यम है''।

पदधारी पुष्टि अनुकरण कर्ता मिथ्यावादी, झूटी अवतारत्व का दावेदार काफ़िर है। जबकि झूटी संतत्व (विलायत) का दावेदार कुफ़्र के निकट है। वली मित्र को कहते हैं और मित्र का एक दूसरे को देखना और वार्तालापित होना आवश्यक है। हज़ूर ने भी एक बार संगतियों को कहा था कि कुछ कार्य मात्र मेरे करने के हैं, तुम्हारे लिये नहीं हैं। प्रत्येक उपासक (नमाज़ी) की यही प्रार्थना होती है कि: ''हे ईश्वर मुझे उन लोगों का सीधा मार्ग दिखा जिनपर तेरा पुरस्कार हुआ। जबतक उसकी आत्मा ईश्वरगृह (बैतुल मामूर) में जाकर आराधना न करे जिसे वास्तविक आराधना कहते हैं क्योंकि वह आराधना मरने के बाद भी जारी रहती है। जैसा कि मिलनरात्रि (शब-ए-मेअ़राज) में बैतुलमुक़द्दस में भी सब अवतारों की आत्माओं ने नमाज़ पढ़ी थी, और जबतक ईशवरदर्शन न हो जाये उस समय तक धर्मशास्त्रपालन (शरीअ़त) आवश्यक है। अलबत्ता सुस्त और गुनहगार लोगों के लिये भी ईश्वर ने कुछ पर्याय बनाया हुआ है। ईश्वर के नाम का हृदयभजन भी वाह्य आराधना और गुनाहों का प्रायश्चित करता रहता है और कभी न कभी उसे ईश्वरप्रिय और आध्यात्मिक (रोशन ज़मीर) बना देता है।

''जब तुम्हारी आराधनायें छूट (क़ज़ा हो) जायें तो ईश्वरभजन कर लेना।
उठते, बैठते यहाँ तक कि करवटों के बल भी''। (क़ुरान)

साधु संतों की निकटता, संबंध, दृष्टि, और आशीर्वाद भी पापियों के भाग्य चमका और नरक से बचा लेती है। जैसा कि मुहम्मद स० ने अनुयाइयों (उम्मत) के पापियों की मुक्ति के लिये अवैस क़रनी से भी प्रार्थना के लिये संगतियों को भेजा था। दानशीलता, कठिन तपस्या और बलिदान से भी पापों का प्रायश्चित और मुक्ति भी हो सकती है। विनीतता, तौबा ताएब और गिड़गिड़ाना भी ईश्वर को पसन्द है। जिसके कारण नसूह जैसा कफ़न चोर और मृत स्त्रियों से मैथुन (बेहुर्मती) करने वाला बख़्शा गया। (कुरान)

एक दिन ईशु मसीह ने शैतान से पूछा कि तेरा अति श्रेष्ठ मित्र कौन है? उसने कहा: कृपण भक्त। कि वह कैसे? उसकी कृपणता उसकी आराधना को व्यर्थ कर देती है। फिर पूछा तेरा बड़ा शत्रु कौन है? उसने कहा: पापी दानवीर। कि वह कैसे? उसकी दानशीलता उसके पापों को जला देती है। ईश्वर के भक्तों और ईश्वर के प्राणियों से प्रेम करने और ध्यान रखने वाले, सत्य का साथ और न्यायप्रिय लोग भी ईश्वर की कृपादृष्टि के योग्य हो जाते हैं।

अल्लामा इक़बाल तीसरी चौथी के विद्यार्थी स्कूल से वापस आये तो एक कुतिया उनके पीछे चल पड़ी, आप सीढ़ियों पर चढ़ गये और वह निस्तब्धता से देखती रही। आपने सोचा संभवतः भूखी है। उनके पिता ने उनके लिये एक पराठा रखा हुआ था। उन्होंने आधा कुतिया को डाल दिया, वह तुरंत खा गई फिर स्तब्धता से देखने लगी। आपने शेष आधा भी उसे डाल दिया, और स्वयं पूरे दिन भूखे रहे। रात को उनके पिता को दैववाणी (बुशारत) हुई कि तुम्हारे पुत्र का कर्म मुझे पसंद आया है और वह दृष्टिगत (मन्ज़ूरे नज़र) हो गया है।

जब सुबुक्तगीन हिरणी का बच्चा जंगल से उठाकर चल पड़ा तो देखा कि घोड़े के पीछे-पीछे हिरणी भी दौड़ रही है। सुबुक्तगीन रूक गया, देखा हिरणी भी खड़ी हो गई और अपने मुँह को उसने आकाश की ओर उठा लिया। सुबुक्तगीन ने देखा कि उस समय उसके आँसू बह रहे थे और सुबुक्तगीन ने बच्चे को आज़ाद कर दिया। इस घटना के बाद सुबुक्तगीन पर इतनी ईश्वर की कृपा हुई कि ईश्वर के नाम पर प्रायः रोया करता था।

मौलाना रोम कहते हैं किः यक ज़माना सुहबत-ए-बा अवलिया...बेहतर अस्त सद साला ताअ़त-ए-बे रिया।

(वलियों, संतों की एक क्षणमात्र की संगति सौ वर्ष की दिखावा रहित आराधना से श्रेष्ठ है)।

हदीस क़ुदसीः ''मैं उसकी ज़ुबान बन जाता हूँ जिससे वह बोलता है,
उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे पकड़ता है''।

अबूज़र ग़फ़्फ़ारीः प्रलयोपरांत कर्मफल दिवस (महशर के दिन) लोग वली को पहचान कर कहेंगे, ''हे ईश्वर! मैंने उसको वज़ू कराया था'' उत्तर आयेगा उसको बख़्श दो! दूसरा कहेगाः हे ईश्वर मैंने इसे कपड़े पहनाये या खाना खिलाया था। उत्तर आयेगा, इसे भी बख़्श दो। इस प्रकार अगणित लोग इनके द्वारा बख़्शे जायेंगे।

हदीस कुदसीः जिस किसी ने मेरे वली (साधु , संतों, मित्रों) के साथ शत्रुता करी,
मैं उसके विरूद्ध युद्ध की घोषणा करता हूँ।

ईश्वर का युद्ध एक दिन का सिर काटना नहीं होता बल्कि उनका ईमान काट दिया जाता है। जो अग्रिम संपूर्ण जीवन में नरक में प्रतिदिन पीड़ा से सिर कटता रहेगा। जैसा कि बिलिअम बाऊर जो बहुत बड़ा विद्वान और आराधक था लेकिन मूसा की शत्रुता के कारण नरक में डाल दिया गया। लोग कहते हैंः ''ईश्वर आराधना से मिलता है''। हम कहते हैंः ''ईश्वर हृदय से मिलता है''। आराधना हृदय को स्वच्छ करने का साधन है, यदि आराधना से हृदय स्वच्छ नहीं हुआ तो ईश्वर से बहुत दूर है। **हदीसः** 'न कर्मों को देखता हूँ , न शक्लों को बल्कि संकल्पों और हृदयों को देखता हूँ'। अल्बत्ता आराधना से स्वर्ग मिल सकता है परंतु स्वर्ग भी ईश्वर से बहुत दूर है। ''यह आन्तरिक ज्ञान मात्र उन लोगों के लिये है जो अपसराओं (हूरों) एवं स्वर्ग की परवाह किये बिना ईश्वर से प्रेम, निकटता और मिलन चाहते हैं''।

फिर सकथन **सूरह कहफ़ः** ''ईश्वर उन्हें किसी ईश्वर मित्र और मार्गदर्शक (वली, मुर्शिद) से मिला देता है''।

जब ईश्वर किसी भक्त के किसे भी मोहक कार्य (अदा) से मेहरबान हो जाता है तो उसे बड़े प्यार से देखता है। उसका प्यार से देखना ही भक्त के पापों को जला देता है। उसके पास बैठने वाले भी कृपादृष्टि की लपेट में आ जाते हैं। ईश्वर के मित्र (कहफ़ नामी गुफ़ा में सोये हुए सज्जन पुरूष) सोते रहे या ध्यानमग्नता में रहे, ईश्वर उनको प्यार से देखता रहा जिस कारण उनका साथी कुत्ता भी ह० क़तमीर बनकर स्वर्ग में जायेगा। जब शेख़ फ़रीद रह० ईश्वर की कृपादृष्टि में आये तो साथ बैठा हुआ चरवाहा भी रंगा गया। जब ईश्वर अबुलहसन की किसी अदा पर मोहित हुआ तो वार्तालाप का क्रम आरंभ हो गया। एक दिन उसे कहाः ऐ अबुलहसन! यदि तेरे बारे में लोगों को बता दूँ तो लोग तुझे पत्थर मार मार कर हलाक करदें। उन्होंने उत्तर दियाः यदि मैं तेरे बारे में लोगों को बता दूँ कि तू कितना दयालु है तो तुझे कोई भी नमन (सिजदा) न करे ईश्वर ने कहाः ऐसा कर न तू बता, न हम बताते हैं।

जब तीसरी बार ज़ैद को शराब के अपराध में लाया गया तो संगतियों ने कहाः इसपर लानत, बार-बार इसी अपराध में आता है। तब मुहम्मद स० ने कहाः लानत मत करो कि यह ईश्वर और उसके प्रियतम (हबीब) से प्रेम भी करता है, जो ईश्वर और अवतार से प्रेम करते हैं नरक में नहीं जा सकते।

निःसंदेह ईश्वर संपूर्ण प्राणियों से प्रेम करता है और समस्त जीवों का ध्यान रखता है विवश कीड़े को पत्थर में भी भोजन पहुँचाता है परंतु जिस प्रकार आज्ञोलंघक (नाफ़रमान) संतान को दण्ड और संपति से वंचित किया जाता है, इसी प्रकार आज्ञोलंघकों, धृष्टों (गुस्ताख़ों) के लिये वह प्रकोपक बन जाता है।

विश्वास करो तुम्हें भी ईश्वर देखना चाहता है लेकिन तुम अन्भिज्ञ, लापरवाह या अभागे हो। जिसे लोग देखते हैं उसे प्रतिदिन साबुन से धोते हो, प्रतिदिन क्रीम लगाते हो और दाढ़ी बनाते हो और जिसे ईश्वर ने देखना है क्या तूने कभी उसे भी धोया है?

हदीसः हर वस्तु को धोने के लिये कोई न कोई अस्त्र है जबकि दिलों को धोने के लिये ईश्वरभजन है।

पवित्र प्रेम का संबंध भी हृदय से होता है, जिह्वा से आई लव यू I Love You कहने वाले मक्कार होते हैं। प्रेम किया नहीं जाता... हो जाता है, जो भी दिल में उतर जाये। ईश्वर को दिल में उतारने के लिये अनुध्यान (तसव्वर), हृदयभजन और साधु संत (वलीउल्लाह) होते हैं।

मात्र वाहन का इंजन गन्तव्य स्थान तक नहीं पहुँचा सकता जबतक अन्य वस्तुएँ भी जैसे स्टेरिंग, टायर आदि न हों। इसी प्रकार आराधना भी नाभिआत्मा शुद्धिकरण (तज़किया-ए-नफ़्स) और हृदय शुद्धिकरण (तस्फ़िया-ए-क़ल्ब) के बिना अधूरी है। यदि इन आनंदों (लवाज़मात) के बिना पूजा (नमाज़) ही सब कुछ..... और स्वर्ग है फिर तुम दूसरों को काफ़िर, धर्म भ्रष्ट (मुर्तद) और नारकीय क्यों कहते हो जबकि वह भी आराधना करते हैं। अंतर यह है कि कोई ईसा के गधे पर सवार है और कोई दज्जाल (शैतान) के गधे पर सवार है। अर्थात- अंदर से दोनों काले। मात्र श्रद्धाओं का अंतर हुआ जबकि श्रद्धाएँ इधर रह जायेंगी, अंदर की आत्माएँ आगे जायेंगी। जिह्वा में आराधना परंतु हृदय में खुराफ़ात, लोभ एवं ईर्ष्या, यह आराधना दिखावा (नमाज़ सूरत) कहलाती है। साधारण लोग इसी से हानिकारक प्रसन्नता (खुशफ़हमी) में ग्रस्त रहते हैं और गुटों (फ़िर्क़ाबन्दी) का शिकार होते रहते हैं। इनका धर्म में प्रचार कार्य उपद्रव (फ़ितना) बन जाता है। मान लो तुम दस-पन्द्रह वर्ष से किसी धर्मवर्ग में रहकर आराधना करते रहे फिर तुम दूसरे धर्मवर्ग को सही समझ कर उसमें सम्मिलित हो गये। इसका अभिप्राय तुम्हारा पहला धर्मवर्ग असत्य (बातिल) था, असत्य की आराधना स्वीकार ही नहीं होती, अर्थात- तुमने दस-पंद्रह वर्षों की आराधनाओं को झुटला दिया। हो सकता है नया धर्मवर्ग भी असत्य हो! फिरे पिछली भी गई और अगली भी गई। पट्टी उतरी तो कोल्हू के बैल की तरह वहीं उपस्थित पाया। आयु नष्ट होने से उत्तम था कि किसी पूर्ण दक्ष (कामिल) को ढूँढ लेते।

गोहर शाही का मत (अक़ीदा)

समस्त धर्मों के पुण्यकारकों और आराधकों को एक लाइन में
खड़ा कर दिया जाये, ईश्वर को कहोः किसको देखेगा?
जिस प्रकार तेरी दृष्टि चमकते हुए सितारों पर पड़ती है।
वह मंगल ग्रह हो या शुक्र ग्रह या बेनाम सितारा,
इसी प्रकार ईश्वर भी चमकते हुए दिलों को देखता है वह धर्म वाले हों या निष्धर्म!
बिन इश्क़-ए-दिलबर के सच्चल, क्या कुफ्र है, क्या इस्लाम है!

तुम ईश्वर की तलाश में मन्दिरों चर्चों और मस्जिदों आदि की दौड़ लगाते हो! क्या इतिहास में कोई सबूत है, कि ईश्वर को किसी ने भी किसी भी पूजालय में बैठा हुआ देखा हो? अरे नादान! ईश्वर का ठिकाना तेरा हृदय है, उसको दिल में बसा, फिर देख यह पूजालयाएँ (इबादत गाहें) और इनमें आराधना करने वाले तेरी ओर दौड़ लगायेंगे। बायज़ीद बुस्तामी कहते हैंः ''एक दीर्घ समय काबा की परिक्रमा करता रहा, जब ईश्वर मेरे अंदर आया, तो एक दीर्घ समय से काबा मेरी परिक्रमा कर रहा है''। यह पूजालयाएँ पुण्यालयाएँ हैं जबकि यह दिल ईश्वरालय है। पूजालयों में तू पुकारेगा और ईश्वर दिलों में पुकारेगा।

अक़्ल वालों के नसीबे में कहाँ ज़ौक़-ए-जुनूँ
इश्क़ वाले हैं जो हर चीज़ लुटा देते हैं
अल्लाह-अल्लाह किये जाने से अल्लाह न मिले
अल्लाह वाले हैं जो अल्लाह मिला देते हैं

प्रत्येक धर्म का अक़ीदा है कि उसके अवतार की प्रतिष्ठा (शान) सबसे श्रेष्ठ है और यही अक़ीदा धर्मग्रंथों वालों में युद्धों का कारण बना, बेहतर है कि तुम आध्यात्मवाद द्वारा अवतारों की सभा में पहुँच जाओ। फिर ही पता चलेगा कि कौन किस स्थान पर है और कौन किस श्रेणी में है।

आवश्यक सूचना

प्रत्येक अवतार को ईश्वर ने विशेष नामों से संबोधित किया जो उनकी उम्मत के लिये पहचान और धर्ममंत्र बन गये। यह नाम ईश्वर की स्वभाषा 'सुर्यानी' में थे। इनके स्वीकृति से उस अवतार की उम्मत में प्रवेश होता है। तीन बार स्वीकार शर्त है, उम्मत में प्रवेश होने के बाद इन शब्दों को जितना भी उच्चारण करेगा उतना ही पवित्र होता जायेगा। आपातकाल में इन शब्दों की आवृत्ति आपात से छुटकारा बन जाती है। क़ब्र में भी यह शब्द कर्मकाण्ड (हिसाब-किताब) में न्यूनतमता के कारण बन जाते हैं। यहाँ तक कि स्वर्ग में प्रवेश के लिये भी इन शब्दों की स्वीकृति (अदायेगी) शर्त है। प्रत्येक उम्मत को चाहिए कि अपने अवतार के धर्ममंत्र को याद करें और प्रातः एवं सायंकाल जितना भी हो सके उनको पढ़ें। अनुदेश के लिये आकाशीय ग्रंथ आप अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं परंतु आराधना के लिये मूल ग्रंथ की मूल पंक्तियाँ अधिक आध्यात्मिक लाभ पहुँचाती हैं।

श्रेष्ठ अवतारों (रसूलों) के धर्ममंत्र यह हैं

ईसाईयों का धर्ममंत्र

ला इलाह इल्लल्लाह ईसा रूहुल्लाह

अनुवाद : ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, ईसा ईश्वर की आत्मा हैं।

यहूदियों का धर्ममंत्र

ला इलाह इल्लल्लाह मूसा कलीमुल्लाह

अनुवाद : ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, मूसा ईश्वर से बातचीत करते हैं।

इब्राहिमों का धर्ममंत्र

ला इलाह इल्लल्लाह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह

अनुवाद : ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, इब्राहीम ईश्वर के मित्र हैं।

मुसलमानों का धर्ममंत्र

ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह

अनुवाद : ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं।

जबकि हिन्दू और सिख शंकरधर्म और मनुधर्म की एक कड़ी हैं। शंकर जी की शिवलिंग (हज्र अस्वद) पत्थर के आदर से इनमें भी पत्थर पूजने की परंपरा चल पड़ी। मनु नौका (कश्ति-ए-नूह) से बचे हुए लोगों ने भी हिंदुस्तान में जाकर धर्मप्रचार किया था और विष्णु महाराज (ख़िज़र) से भी इनके गुरूओं को आध्यात्मिक लाभ मिला था, और इनकी प्रार्थनाओं में शंकर जी और विष्णु महाराज के नाम सम्मिलित हैं।

प्रत्येक धर्म वाला चाहे कोई भी भाषा रखता हो परंतु यह धर्ममंत्र ईश्वर की सुर्यानी भाषा में उसकी पहचान और मुक्ति है। साधारण लोगों के लिये प्रति दिन न्यूनतम (33) वार ईश्वर और अवतार को प्रातः एवं सायं याद करना आवश्यक है। सांसारिक आपात से सुरक्षा के लिये प्रति दिन (99) वार प्रातः एवं सायं या जितना भी हो सके, विपत्ति को टालने के लिये (5,000), (25,000) या (72,000) वार कई आदमी एक ही बैठक में पढ़ सकते हैं। अंतिम सीमा सवा लाख (125,000) है।

दिल को साफ़ करने और गुनाहों के धब्बे मिटाने के लिये स्वांसाभ्यास, स्वांस लेते समय 'ला इलाह इल्लल्लाह' और स्वांस छोड़ते समय शेष अगला भाग पढ़ें, स्वांस छोड़ते समय ध्यान दिल की ओर हो। ईश्वर से प्रेम और निकटता प्राप्त करने के लिये दूसरी विधि है जो बिना ईश्वर की इच्छा के कठिन है। पुस्तक

में लिखित विधि के अनुसार दिल की धड़कन को माला बनाना पड़ता है और धड़कनों के साथ मात्र ईश्वर के निर्मल (ख़ालिस) शब्दों को मिलाना पड़ता है। जितना हो सके प्रति दिन इसका भी अभ्यास करें। किसी का ध्यान द्वारा, किसी का बिना ध्यान के भी और किसी का हृदयकँवल एवं आत्मा की जाग्रुक्ता के बाद हर समय भी स्वतः ही जाप आरंभ हो सकता है।

ईश्वर के मित्रों का जाप 72,000 प्रति दिन होता है जबकि
आशिक़ों का 125,000 तक पहुँच जाता है।

यदि शक्तियाँ (लतायेफ़) भी जाप में लग जायें तो उसके भजनक्रिया (ज़कूरियत) की गणना करामन कातबीन (वह फ़रिश्ते जो पुण्य और पाप लिखते हैं) के भी वश में नहीं रहता।

कोई फ़र्श पर कोई अर्श पर
कोई काबे में कोई रूए ख़ुदा
(तर्याक़ कल्ब)

धर्म वाले नाम अल्लाह के अतिरिक्त अवतार के नाम को भी दिल में जमाने का प्रयत्न किया करें ताकि नाम अल्लाह कंट्रोल में रहे। मग्नता, आत्मसात या तेजस्व (वज्द, जज़्ब या जलाल) की स्थिति में अवतार का धर्ममंत्र उस समय तक पढ़ें जब तक वह अवस्था समाप्त न हो और देखे हुए मुर्शिद को भी ध्यान में लायें ताकि उसकी आध्यात्मिक शक्ति दिल पर अल्लाह अंकित करे। जिनका कोई धर्म नहीं, ईश्वर जाने उनका भाग्य किसके पास है या कहीं भी नहीं है। वह बारी-बारी अभ्यास के मध्य पाँचों श्रेष्ठ अवतारों के नाम का अनुध्यान करें और जिस भी देखे हुए संत (वली) पर विश्वास रखते हैं उसका भी ध्यान लायें। **फिर जिसके आप हैं वह अंदर से बोलना आरंभ कर देगा।** अर्थात- आपका मुख, प्रेम और दिल उसी की ओर झुक जायेगा।

किसी युग में आकाशीय ग्रंथों वाले एक प्लेटफार्म पर एकत्र हो गये थे, आपस में इकट्ठा खाना, पीना और प्रस्पर विवाह की अनुमति हो गई थी। इसी प्रकार इस युग में ईश्वरभजन वाले भी एक हो जायेंगे। ग्रंथ वाले अस्थाई थे क्योंकि ग्रंथ ज़ुबान पर था.... निकल गया और यह स्थाई होंगे क्योंकि ईश्वर का नाम और उसका प्रकाश खून और दिल में होगा। जो बीमारी खून में चली जाये या जिसका प्रेम दिल में उतर जाये उसका निकलना कठिन है।

....

पानी पानी ही है लेकिन जब रगड़ा लगता है तो बिजली बन जाता है। दूध को रगड़ते हैं तो मक्खन बन जाता है। इसी प्रकार आकाशीय ग्रंथों की मूल पंक्तियों (आयतों) की जब आवृत्ति (तकरार) करते हैं तो प्रकाश (नूर) बन जाता है। पंक्तियों और विशेषित (सिफ़ाती) नामों की आवृत्ति से विशेषित प्रकाश बनता है जिसकी पहुँच मलाइका तक है जो ससम्पर्क (indirect) है। यह अद्वेत अस्तित्व (वह्दतुल वजूद) का स्थान है परंतु ईश्वर के निजी नाम के तकरार के प्रकाश की पहुँच निजी अस्तित्व तक है जो डायरेक्ट है। यह अद्वेत दर्शिता (वह्दतुश्शहूद) से संबंध रखता है।

....

बहुत से लोग अपने धर्म के अवतार और संतों (वलियों) का बहुत ही आदर और श्रद्धा, प्रेम रखते हैं परंतु दूसरे धर्मों के अवतारों, संतों से द्वेष और शत्रुता रखते हैं। ऐसे लोग भी ईश्वर की ओर से कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकते हैं क्योंकि जिनकी बुराई करते हैं वह भी ईश्वर के मित्रों में से हैं और ईश्वर की इच्छा से ही विभिन्न धर्मों और क़ौमों में नियुक्त किये गये हैं।

* * * * * *

कुछ प्रिय आत्माओं की चश्मदीद घटनाएँ

एक सृष्टिकालीन आत्मा की घटनाः

मैं (गोहर शाही) अमेरिका में अर्ध रात्रि के लगभग एक जंगल से गुज़रा, देखा एक व्यक्ति एक वृक्ष के आगे माथा टेके गिड़गिड़ा रहा है। लगभग एक घंटे बाद मेरी वापसी हुई, अभी भी वह इसी स्थिति में था, मैं निकट जाकर रूक गया, उसने मुझे अनुभूत करके सिजदे से सिर उठाया और कहाः मुझे विस्म्रित क्यों किया? मैंने कहाः मैं भी ईश्वर की खोज में हूँ , लेकिन वृक्ष से कैसे ईश्वर मिलेगा? उत्तम था कि किसी धर्म द्वारा ईश्वर को प्राप्त करता! कहने लगाः बाइबल, कुरान या जो भी आकाशीय पुस्तकें हैं, मैं उनकी मूल भाषा नहीं जानता और इन ग्रंथों के जो अनुवाद हुए हैं, मैं उनसे संतुष्ट नहीं, क्यों कि उनमें अति प्रतिकूलता (तुज़ाद) है जिस कारण यह विश्वास नहीं हो सकता कि यह किसी एक ही ईश्वर की ओर से भेजी हुई पुस्तकें हों। एक पुस्तक में लिखा है कि ईसा मेरा बेटा है जबकि दूसरी पुस्तक में है कि मेरा कोई पुत्र इत्यादि नहीं है। ''एक दीर्घकाल उनके अध्ययन में मेरा समय और आयु नष्ट हुई। मैंने अब दूसरा मार्ग चयन किया है कि यह वृक्ष इतना सुंदर है, इसका अभिप्राय ईश्वर इससे प्रेम करता है, हो सकता है इसी के द्वारा मेरी ईश्वर तक पहुँच हो जाये''। यह कोई सृष्टिकालीन प्रिय आत्मा थी जो स्वबुद्धियानुसार ईश्वर की खोज में थी। क्या ऐसे लोग नरक में जा सकते हैं? जो कि विवश कहलाते हैं और यही कुत्ते से भी क़तमीर बन जाते हैं, जबकि ह० क़तमीर का भी कोई धर्म नहीं था।

(Arizona) एरीज़ोना की मिस कैथरीन ने घटना सुनाई किः

''मैंने एन्जीला से हृदयभजन की अनुमति ली'', एन्जीला ने कहाः ''सात दिन के अन्दर-अन्दर यदि हृदय में अल्लाह-अल्लाह (नामदान) आरंभ हो गया तो समझना कि ईश्वर ने तुम्हें स्वीकार कर लिया है, वरना तेरा जीवन व्यर्थ है। जब सात दिन के परिश्रम से भी मेरा हृदयभजन आरंभ न हुआ तो एक रात मुझे अति रोना आया। मैं खूब गिड़गिड़ाई उसी रात मेरे अंदर अल्लाह-अल्लाह आरंभ हो गया जो तीन वर्ष से जारी है। कैथरीन आयु की सहमति (क़ायेल) नहीं बल्कि स्वास्थ्य की क़ायेल है, इसी प्रकार वह धर्म की भी क़ायेल नहीं बल्कि उसके प्रेम की क़ायेल है। उसका कहना है कि इस हृदयभजन के कारण मेरे दिल में ईश्वर के प्रेम में बढ़ोत्तरी होती जा रही है, मेरे लिये यही पर्याप्त है''।

एक हिन्दू गुरू से भेंटः

मैं उस समय सिहवन की पहाड़ियों में था, कभी-कभी लाल शहबाज़ के दरबार चला जाता। एक व्यक्ति दरबार के बाहर बरामदे में बैठा हुआ था, बहुत से हिंदू धर्म के लोग उसके चारों ओर बड़ी श्रद्धा से एकत्र थे। पूछाः ''यह कौन बुजुर्ग है? कहने लगे यह हिंदुओं का गुरू है, आध्यात्मिक (रोशनज़मीर) भी है इसी के द्वारा हमारी प्रार्थनाएँ लाल साईं तक पहुँचती हैं और हमारे काम हो जाते हैं । बहुत से मुसलमान भी उसका आदर करते थे। एक दिन मेरा एक टीले से गुज़र हुआ देखा वही व्यक्ति सामने एक मूर्ति रखकर नत्मस्तक स्थिति में कुछ पढ़ रहा है। दूसरे दिन दरबार में भेट हुई, मैंने कहाः तुझ जैसे आध्यात्मिक का मिट्टी की मूर्ति को पूजना मेरी समझ से बाहर है। उसने उत्तर दियाः मैं भी इसे कोई ईश्वर नहीं समझता अल्बत्ता मेरी श्रद्धा है और तुम्हारी पुस्तकों में भी लिखा है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी सूरत (शक्ल) पर बनाया इस कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की सूरतें बनाकर पूजता हूँ , पता नहीं कौन सी सूरत ईश्वर से मिल जाये। उसने कहाः तू भी रोशन ज़मीर है बता कि ईश्वर की सूरत कैसी है और किस मूर्ति से मिलती है? ताकि मैं उसे मन में बसा सकूँ।

मेरी आयु कोई सोलह-सत्तरह वर्ष के लगभग थी। अपने ख़ानदानी बुज़ुर्ग बाबा गोहर अली शाह के दरबार पर एक दिन सूरह मुज़म्मिल की तिलावत (पाठ) कर रहा था इतने में एक लंबे क़द का आदमी फ़क़ीरी हुलिये में मेरे सामने आया और कहने लगाः व्यर्थ ही चने चबा रहा है, संत मुख था मैं मौन रहा

लेकिन दिल में यही था कि यह अवश्य कोई शैतान है जो मुझे तिलावत से रोक रहा है। दीर्घ समय व्यतीत हो गया जब हृदयभजन आरंभ हुआ तो मेरी आयु 35 वर्ष के लगभग थी। बताये हुए तरीक़े से ज़ुबान से सूरह मुज़म्मिल की आयत पढ़ता फिर ख़ामोश हो जाता कि दिल पढ़े फिर दिल से इसी आयत की ध्वनि आती। एक दिन इसी अभ्यास में मगन और अति प्रसन्न था कि फिर वही व्यक्ति उसी हुलिये में प्रकट हुआ और कहने लगाः अब तू कुरान पढ़ रहा है। जबतक औषधि (तर्याक़) पेट, मेदा में न जाये रोग निवारण नहीं होता, जबतक ईश्वरीय वाणी हृदय में न उतरे कोई बात नहीं बनती उसने शेअ़्र सुनाया–

ज़ुबानी कलिमा हर कोई पढ़दा .... दिल दा पढ़दा कोई हू
दिल दा कलिमा आशिक़ पढ़दे .... की जानन यार गलोई हू

दाता दरबार की मस्जिद में जब नमाज़ से निवृत हुआ देखा एक प्रौढ़ व्यक्ति नमाज़ियों की जूतियाँ सीधी कर रहा है। मैंने भी यह अनुभूत किया कि मात्र जूतियाँ सीधी करने के उसने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी क्योंकि मैं पिछली कतार में था, जाते समय मैने कहाः आपने नमाज़ तो नहीं पढ़ी, इन जूतियों से आपको क्या मिलेगा? कहने लगाः नमाज़ तो आजीवन नहीं पढ़ी अब वृद्धावस्था में नमाज़ से मुक्ति की क्या आशा रखूँ । बस एक आशा पर टिका हूँ कि इतने लोगों में से कोई एक तो ईश्वर का मित्र होगा, संभवतः इस कर्म (अदा) से ही वह या उसका यार प्रसन्न हो जाये। मैंने कहाः नमाज़ से बढ़कर कोई अदा नहीं। कहने लगाः यार से बढ़कर कोई चीज़ नहीं यदि वह मान जाये! तीन वर्ष की चिल्लाकशी के बाद एक दिन मुहम्मद स० की आन्तरिक सभा (महफ़िल–ए–हज़ूरी) प्राप्त हुई, देखा वही व्यक्ति यार के चरणों में था। फिर यह शेअ़्र आया कि–

गुनहगार पहुँचे दर–ए–पाक पर.... ज़ाहिदो पारसा देखते रह गये

* * * * * *

* सत्पुरूष रियाज़ अहमद गोहर शाही का व्यक्तिगत परिचय *

25 नवम्बर 1941 को प्रायद्वीप (बर्रे सग़ीर) के एक छोटे से गॉव ढोक गोहर शाह, ज़िला रावल पिंडी में पैदा हुए। आपकी माताश्री फ़ातिमी हैं। अर्थात– सादात वंश सैयद गोहर अली शाह के पोतों में से हैं जबकि पिताश्री सैयद गोहर अली शाह के नवासों में से हैं और दादा मुग़ल वंश से संबंध रखते हैं। बाल्यावस्था से ही आपका झुकाव (रूख़) संतों (अवलिया कराम) के दरबारों की ओर था। आपके पिताश्री वर्णन करते हैं कि गोहर शाही पॉच या छः वर्ष की आयु से ही ग़ायेब हो जाते और हम जब उनको ढूँढने निकलते तो इनको निज़ामुद्दीन अवलिया (नई दिल्ली) के मज़ार पर बैठा हुआ पाते। मुझे कई बार ऐसा अनुभूत हुआ कि जैसे यह निज़ामुद्दीन अवलिया से बातें कर रहे हैं। यह उस समय का वर्णन है जब सत्पुरूष ह० गोहर शाही के पिताश्री नौकरी के सिलसिले में देहली में निवासित थे। मार्च 1997 ई० में जब परमपूज्य गोहर शाही इण्डिया तशरीफ़ ले गये तो निज़ामुद्दीन अवलिया दरबार के सज्जादा नशीन इस्लामुद्दीन निज़ामी ने निज़ामुद्दीन अवलिया के संकेत पर इन को दरबार के सिरहाने पगड़ी (दस्तार) पहनाई थी।

बाल्यावस्था से ही जो बात कहते वह पूरी हो जाती, इस कारण से मैं इनकी हर उपयुक्त दुराग्रह (मॉग) को पूरा करता। आपके पिताश्री आगे वर्णन करते हैं कि: ''गोहर शाही यथानुपूर्वक प्रतिदिन प्रातःकाल लान {Lawn} में आते हैं तो मैं इनके आग्मन पर सम्मान में खड़ा हो जाता हूँ''। इस बात पर गोहर शाही मुझसे रूठ जाते हैं और कहते हैं कि मैं आपका बेटा हूँ , मुझे लज्जा आती है आप इस प्रकार न खड़े हुआ करें लेकिन मेरा बार–बार यही उत्तर होता है कि मैं आपके लिये नहीं बल्कि जो अल्लाह आप में निवास कर रहा है उसके सम्मान में खड़ा होता हूँ। मौढ़ा नूरी प्राइमरी स्कूल के मास्टर अमीर हुसेन कहते हैं: ''मैं क्षेत्र में अति कठोर अध्यापक प्रसिद्ध था, उतपाती बच्चों को मारता और इनकी शरारत यह थी कि यह स्कूल देर से आते थे और जब मैं क्रोध में इन्हें मारने लगता तो मुझे ऐसा अनुभूत होता जैसे किसी ने मेरी छड़ी पकड़ ली हो और इस प्रकार मुझे हॅसी आ जाती थी।

सद्गुरू गोहर शाही की बिरादरी और मित्रों के विचारः

हमने कभी इनको किसी से लड़ते–झगड़ते या किसी को मारते–पीटते नहीं देखा बल्कि कोई मित्र यदि क्रोध करता या इनको मारने के लिये आता तो यह हॅस पड़ते।

सद्गुरू गोहर शाही की पत्नीश्री कहती हैं:

प्रथम तो इनको क्रोध आता ही नहीं और यदि कभी क्रोध आता है तो अति तीव्र होता है और वह भी किसी अप्रिय (बेहूदा) बात पर। ह० गोहर शाही की दानशीलता के बारे में कहती हैं: ''प्रातः जब अपने कमरे से लान तक जाते हैं तो जेब भरी होती है और मुड़कर वापस आते हैं तो जेब ख़ाली होती है। सारा पैसा दानाधिकारियों (ज़रूरत मन्दों) को दे आते हैं और फिर जब मुझे पैसों की आवश्यकता पड़ती है तो मुॅह बना लेते हैं और इस प्रकार मुझे क्रोध आता है। फिर भोली सूरत देख कर शेअ्र पढ़ती हैं–

दिल के बड़े सख़ी हैं...बैठे हैं धन लुटा के

सद्गुरू गोहर शाही के पुत्रों के इनके बारे में विचारः

अब्बू हमसे प्यार भी बहुत करते हैं और ध्यान भी बहुत रखते हैं लेकिन जब हम इनसे पैसे मॉगते हैं तो वह बहुत कम देते हैं और कहते हैं कि: ''तुम फ़ुज़ूल ख़र्ची करोगे'' तब हम कहते हैं कि: ''या तो हमें भी फ़क़ीर बना दो या हमें पैसे दो''।

सद्गुरू गोहर शाही की माताश्री के इनके बारे में विचारः

बचपन में कभी स्कूल न जाता या जवानी में व्यवसाय में कभी हानि हो जाती तो मैं इस को डॉटती लेकिन उन्होंने कभी भी मुझे सिर उठाकर उत्तर नहीं दिया जबकि मेरे पूर्वज कक्का मियॉ ढोक शम्स वाले कहा करते थे कि: ''रियाज़ को गाली मत दिया कर जो कुछ मैं इसमें देखता हूँ तुम्हें पता नहीं''। इंसानी हमदर्दी इतनी कि यदि 'रियाज़' को पता चल जाता कि आठ–दस मील की दूरी पर कोई बस ख़राब हो गई है तो उन लोगों के लिये खाना बनवाकर साइकल पर उन्हें देने जाता।

सद्गुरू गोहर शाही के एक घनिष्ठ मित्र मु० इक़बाल मुक़ीम फ़ज़ूलियाँः

मु० इक़बाल कहते हैं कि वर्षा ऋतु में कभी कभी जब खेतों की पगडण्डी से गुज़र होता तो अगणित चिंव्टे पंक्तियों में उस पगडण्डी पर चल रहे होते। हम लोग पगडंडी पर चल पड़ते और चिंव्टों का ख़्याल नहीं करते लेकिन यह पगडंडी से दूर हटकर कीचड़ में चलते ताकि चिंव्टियों को कष्ट न हो। जब इनपर क़त्ल का झूटा केस बनाया गया तो क्राइम ब्रांच के क़ुद्दूस शेख़ इंक्वाइरी के लिये आये, मुहल्ले वालों ने उन्हें बताया कि हमारी दृष्टि में तो गोहर शाही ने कभी मच्छर भी नहीं मारा होगा, कहॉ एक इंसान का क़त्ल !

सद्गुरू गोहर शाही और उनकी मुमानीः

यह उन दिनों की बात है जब मैं आठवीं कक्षा का विद्यार्थी था। एक बार मुमानी (जो कि ज़ाहिदो पारसा अर्थात- देखने में धार्मिक प्रवृत्त वाली और आराधिका थीं परंतु लोभ और ईर्ष्या में लिप्त थीं जोकि प्रायः आराधकों में होता है) ने कहा कि तुझमें और सब तो ठीक है लेकिन तू नमाज़ नहीं पढ़ता। मैंने उत्तर दियाः कि नमाज़ ईश्वर का उपहार है। मैं नहीं चाहता कि नमाज़ के साथ-साथ कंजूसी, घमंड, ईर्ष्या और कपट (द्वेष) की मिलावट ईश्वर के पास भेजूँ जब कभी भी नमाज़ पढ़ूँगा तो सही नमाज़ पढ़ूँगा, तुम लोगों की तरह नहीं कि नमाज़ भी पढ़ते हो और पीठ पीछे बुराई (ग़ीबत), चुग़ली और आरोप (बुहतान) जैसे सबसे बड़े गुनाह भी करते हो।

सद्गुरू गोहर शाही अपने बाल्यावस्था की घटनाएँ वर्णन करते हैंः

दस बारह वर्ष की आयु से ही स्वप्न में ईश्वर से बातें होती थीं और बैतुलमामूर (मलकूत लोक का काबा) नज़र आता था परंतु मुझे इसकी वास्तविक्ता का ज्ञान नहीं था। चिल्लाकशी के बाद जब वही बातें और वही दृश्य सामने आये तो हक़ीक़त खुली। एक बार का वर्णन है कि मेरा एक मामूँ जो कि सेना में सेवारत था वह वैश्याओं के कोठों पर जाया करता था, घर वालों के मना करने के कारण वह मुझे अपने साथ ले जाता ताकि घर वालों को संदेह न हो। मुझे चाय और बिस्कुट खाने को देता और स्वयं अंदर चला जाता, जबकि मुझे वैश्याओं और कोठों की समझ, बूझ नहीं थी। मामूँ मुझसे यही कहता कि यह स्त्रियों का आफिस है। कुछ दिनों बाद मेरा दिल उस स्थान से उचाट हो गया। तब मामूँ ने कहा कि यह स्त्रियाँ हैं और ईश्वर ने इनको इसी उद्देश्य के लिए बनाया है। अर्थात- उसने मुझे भी सम्मिलित करने का प्रयत्न किया। मामूँ की बातों का इतना प्रभाव हुआ कि नाभि आत्मा की असमंजस में रात भर न सो सका और फिर अचानक ऑख लग गई। देखता हूँ कि एक बड़ा गोल चबूतरा है और मैं उसके नीचे खड़ा हूँ , ऊपर से कड़कदार आवाज़ आती हैः ‘‘उसको लाओ’’, देखता हूँ कि मामूँ को दो आदमी पकड़कर ला रहे हैं और संकेत करते हैं कि यह है। फिर आवाज़ आती है किः ‘‘इसको गदा (गुर्ज़ों) से मारो’’, तब उसको मारते हैं तो वह चीख़ें मारता और दहाड़ता है और चींखते-चींखते उसकी शक्ल सूवर की तरह बन जाती है। फिर आवाज़ आती है किः ‘‘तू भी इसके साथ यदि सम्मिलित हुआ तो तेरा भी यही हाल होगा’’। फिर मैं तौबा तौबा करता हूँ और ऑख खुलती है तो ज़ुबान पर यही होता है किः ‘‘या रब्ब मेरी तौबा, या रब्ब मेरी तौबा’’ और कई साल तक उस स्वप्न का प्रभाव रहा। उसके दूसरे दिन मैं गॉव की ओर जा रहा था, बस में सवार था रास्ते में देखा कुछ डाकू एक टैक्सी से टेप रिकार्डर निकालने का प्रयत्न कर रहे थे। ड्राइवर ने विरोध किया तो उसपर छुरियों से वार करके क़त्ल कर दिया। यह दृश्य देख कर हमारी बस वहॉ रूक गई और वह डाकू हमें देख कर फरार हो गये और ड्राइवर ने तड़प कर हमारे सामने जान देदी, फिर बुद्धि में यही आया कि जीवन का क्या भरोसा, रात को सोने लगा तो अंदर से यह शेअ्र गूँजना आरंभ हो गये,

कर सारी ख़तायें माफ़ मेरी.... तेरे दर पे मैं आन गिरा

और सारी रात गिड़गिड़ाने में व्यतीत हुई, उस घटना के कुछ समय (अर्सा) बाद मैं दुनिया छोड़कर जामदातार रह० के दरबार पर चला गया, लेकिन वहॉ से भी कोई मंज़िल न मिली और मेरा बहनोई मुझे वहॉ से वापस दुनिया में ले आया। 34 वर्ष की आयु में बरी इमाम रह० सामने आये और कहा किः ‘‘अब तेरा समय है पुनः जंगल जाने का’’। तीन वर्ष चिल्लाकशी के बाद जब कुछ प्राप्त हुआ तो पुनः जामदातार के दरबार गया मज़ार वाले सामने आ गये, मैंने कहाः ‘‘उस समय यदि मुझे स्वीकार कर लिया जाता तो बीच में नफ़सानी जीवन से सुरक्षित रहता’’। उन्होंने उत्तर दिया-‘‘उस समय तुम्हारा समय नहीं था’’।

* सद्‌गुरू गोहर शाही की आन्तरात्मिक व्यक्तित्व की कुछ वास्तविक्ताऐं *

19 वर्ष की आयु में जुस्सा तौफ़ीक़-ए-इलाही (ईश्वर का आंतरिक अस्तित्व अर्थात- आंतरिक संतान) साथ लगा दिया गया था जो एक वर्ष रहा और उसके प्रभाव से कपड़े फाड़ कर मात्र एक धोती में जामदातार रह० के जंगल में चले गये थे।

जुस्सा तौफ़ीक़-ए-इलाही अस्थाई मिला था, जो कि 14 वर्ष ग़ायेब रहा और फिर 1975 में पुनः सिहवन शरीफ़ के जंगल में लाने का कारण भी यही जुस्सा तौफ़ीक़-ए-इलाही ही था।

25 वर्ष की आयु में जुस्सा-ए-गोहर शाही को आंतरात्मिक सेना के सेनापति की प्रतिष्ठा (हैसियत) से सुशोभित किया गया, जिसके कारण शैतानी सेना और दुनियावी शैतानों के दुष्कृत्य से सुरक्षित रहे। जुस्सा तौफ़ीक़-ए-इलाही और तिफ़्ल-ए-नूरी, आत्माओं, मलाइका और शक्तियों (लताइफ़) से भी उच्च (Special) श्रेणी के प्राणी हैं, इनका संबंध मलाइका की तरह सीधा ईश्वर से है और इनका स्थान, अहदियतस्थान है।

35 वर्ष की आयु में 15 रमज़ान 1976 को एक नुतफ़ा-ए-नूर हृदयकॅंवल में प्रविष्ट किया गया,

कुछ अर्सा बाद शिक्षा-दीक्षा के लिये अनेक विभिन्न स्थानों पर बुलाया गया। 15 रमज़ान 1985 में जबकि आप दुनियावी ड्यूटी पर हैद्राबाद नियुक्त हो चुके थे, वही नुतफ़ा-ए-नूर तिफ़्ल-ए-नूरी (ईश्वर का वाह्य प्रकाशमय अस्तित्विक संतान) की हैसियत पाकर पूर्णरूपेण समर्पित कर दिया गया, जिसके द्वारा मुहम्मद स० की आंतरात्मिक सभा में सर्व श्रेष्ठ मुकुट (ताज-ए-सुल्तानी) पहनाया गया। तिफ़्ल-ए-नूरी को बारह वर्ष बाद पद प्रदान होता है परंतु दुनियावी ड्युटी के कारण यह पद 9 वर्ष में ही प्रदान हो गया।

* गोहर शाही उत्सव (जश्न-ए-शाही) मनाने के कारण *

15 रमज़ान 1977 को ईश्वर की ओर से विशेष वार्तालाप (ख़ास इल्हामात) का सिलसिला भी आरंभ हुआ था। प्रस्पर स्वीकृति एवं संतुष्टि (राज़ियः मरज़ियः) की प्रतिज्ञा हुई, पद भी बताया गया था।

चूँकि प्रत्येक पद और मेअ्‌राज का संबंध 15 रमज़ान से है इस लिये
इसी दिन, इसी प्रसन्नता में गोहर शाही उत्सव मनाया जाता है।

1978 में हैद्राबाद (पाकिस्तान) आकर सत्मार्ग दीक्षा (रूश्दो हिदायत) का सिलसिला आरंभ कर दिया और देखते ही देखते यह सिलसिला पूरी दुनिया में फैल गया। लाखों व्यक्तियों के हृदय अल्लाह-अल्लाह में लग गये। लाखों व्यक्तियों के हृदयों पर नाम الله अल्लाह अंकित हुआ और इनको नज़र आया। लाखों व्यक्ति क़ब्र वालों से संपर्क (कशफुल कुबूर) और मुहम्मद स० से संपर्क (कशफुल हज़ूर) तक पहुँचे। लाखों असाध्य रोगी स्वस्थ हुए। हर धर्म, हर क़ौम, हर नस्ल के लोग सत्पुरूष गोहर शाही से सत्मार्ग दीक्षा प्राप्त करके ईश्वरप्रेम और अस्तित्व तक पहुँचना आरंभ हो गये। ईश्वर की सौगंध! मैं भी इन ही लोगों में से हूँ जिनके दिलों पर स्पष्ट रूप से लिखा हुआ नाम अल्लाह चमक रहा है।

(द्वाराः शेख़ निज़ामुद्‌दीन.... मेरीलैण्ड, अमेरिका)

* चंद्रमॉ और सूर्य पर तस्वीरों के बारें में संपूर्ण स्पष्टीकरण *

गोहर शाही आध्यात्मिक शिक्षा और स्थान-स्थान अभिभाषणों द्वारा विश्व भर में प्रसिद्ध और लोक प्रिय हो गये।

1994 में मानचेस्टर (इंग्लैण्ड) में कुछ लोगों ने चंद्रमॉ पर सत्पुरूष गोहर शाही की तस्वीरों को चिन्हित (निशानदेही) किया। फिर पाकिस्तान और दूसरे देशों से भी प्रमाण प्राप्त हुए, वीडियो द्वारा चंद्रमॉ की तस्वीरें उतारी गईं। फिर विदेशों और नासा से चंद्रमॉ की तस्वीरें मंगवाई गईं, प्रारंभ में तस्वीरें धुमली थीं, परंतु पिछले दो वर्ष से इतनी स्पष्ट हो गईं कि सूक्ष्मदर्शी (दूरबीन) या कम्प्यूटर के बिना भी देखी जा सकती हैं।

1996 में हमारे प्रतिनिधि ज़फ़र हुसेन ने नासा (NASA) वालों को निशानदेही कराई। उन्होंने कहा हमें पता है कि चंद्रमॉ पर चेहरा है, यह चेहरा ईशु मसीह का है, जो दो सौ मील लंबी रोशनी से मालूम होता है। अमरीकी नागरिकों ने भी नासा पर दबाव डाला कि इस तस्वीर के बारे में कुछ स्पष्ट किया जाये परंतु (**गोहर शाही**) का एशियाई होने के कारण नासा ख़ामोश रहा बल्कि नासा के ही प्रोफेसर अन्तरिक्ष विशेषज्ञ डिंसमोर आल्टर Dinsmore Alter ने अपनी पुस्तक (Pictorial Astronomy) में तस्वीर को कुछ परिवर्तित करके स्त्री के रूप में प्रदर्शित किया, और पूरी ईसाई मिशनरी में यह अफवाह फैला दी कि चंद्रमॉ पर मॉ मेरी (ह० मरियम) की तस्वीर है।

जब पाकिस्तान के समाचार पत्रों में यह ख़बर छपी तो बहुत से लोगों ने इसकी तहक़ीक़ (छानबीन) के बाद पुष्टि की, बहुत से लोगों ने बिना तहक़ीक़ के परिहास किया और बहुत से लोगों ने इसे जादू समझा। कुछ समय बाद अंतरिक्ष में भी तस्वीर का शोर हुआ। लेकिन उसका प्रभाव सत्पुरूष गोहर शाही के श्रद्धालुओं के अतिरिक्त कहीं भी न दिखा।

1998 में **परचम** समाचारपत्र में यह ख़बर छपी कि शिवलिंग (हज्रअसवद) में किसी की प्रतिबिंब (तस्वीर) नज़र आ रही है। हम इस तस्वीर के बारे में पहले ही से ज्ञान रखते थे। बल्कि हज्रअस्वद के कई फोटो चिन्हित किये हुए भी हमारे पास उपस्थित थे और लगभग प्रत्येक सरफ़रोश तहक़ीक़ कर चुका था। चुप रहने का कारण मुसलमानों में फ़साद का डर था। लेकिन अख़बारी ख़बर के बाद हमें भी हौसला हुआ और भरपूर अंदाज़ में प्रेस रिलीज़ छापी गईं। लगभग हर मुसलमान ने इसकी तहक़ीक़ करी, क्योंकि मुसलमानों के ईमान की बात थी। अधिक्तर वर्ग सहमत हुए, क्योंकि तस्वीर इतनी स्पष्ट थी कि इसको झुटलाना कठिन था। इस लिये कई लोगों ने प्रसिद्ध कर दिया कि यह भी जादू है।

लगभग हर देश में चंद्रमॉ और शिवलिंग (हज्रअस्वद) की तस्वीरें परिचित कराई गईं। सऊदी अरब और उसके सहयोगी ईर्ष्या से जलभुन गये, जैसे कि हज्रअस्वद में तस्वीर गोहर शाही ने लगाई हो, वह कहते हैं कि तस्वीर हराम होती है, हज्रअस्वद पर कैसे आ गई? यह न सोचा कि ईश्वर की ओर से कोई भी निशानी हराम नहीं हो सकती। सऊदी अरब सरकार ने अपने धार्मिक न्यायालयों (शरई अदालतों) से यह निर्णय ले लिया है कि गोहर शाही क़त्लयोग्य है।

यदि गोहर शाही मक्का की धरती पर क़दम रखे तो उसे क़त्ल कर दिया जाये।

पाकिस्तान में भी सऊदी अरब पक्षधारी फ़िर्क़े गोहर शाही और उसकी शिक्षाओं को मिटाने की सिर तोड़ कोशिश कर रहे हैं। झूटे मुक़दमें, जिनमें धारा 295 का भी मुक़दमा बना दिया गया है। और कई बार गोहर शाही पर जान लेवा हमला भी किया गया है।

* अब सूर्य पर भी गोहर शाही की तस्वीर प्रकट हो गई है *

हमने पाकिस्तान सरकार को मुक़दमों के कारण और तस्वीरों की तहक़ीक़ के लिये कई बार सूचित किया। परंतु ईश्वर की इन निशानियों को राष्ट्रीय स्तर पर भी साम्प्रदायिक्ता के दबाव के कारण झुटलाया गया, बल्कि नवाज़ शरीफ़ सरकार ने सिंध सरकार पर भी ज़ोर दिया कि गोहर शाही को किसी प्रकार से फँसाया, दबाया या मिटाया जाये, और अब हम सैन्य सरकार से संपर्क कर रहे हैं कि वह इन निशानियों की न्याय पूर्वक तहक़ीक़ करे और किसी भी डर, ख़ौफ़, दबाव या फ़िर्क़ावारियत की वजह से ईश्वर की निशानियों को न झुटलाया जाये। ईश्वर की यह निशानियाँ फ़ितना डालने के लिये नहीं, बल्कि फ़ितना (उपद्रव) मिटाने के लिये हैं। और इसका प्रमाण है कि गोहर शाही का उपदेश जो अमन शान्ति और ईश्वरप्रेम का उपदेश है, जिसके द्वारा हर धर्म वाले अपनी शुद्धि करने में लग गये। और आज हिंदू , मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई गोहर शाही की श्रद्धा के कारण एक प्लेटफार्म पर एकत्र हो रहे हैं, और इतिहास में यह प्रथम रिकार्ड है कि किसी भी मुस्लिम को गिरजा घरों, मंदिरों और गुरूद्वारों में प्रवचन एवं व्याख्यान के लिये उच्चस्थानों (मसनदों) पर बैठाया गया हो।

ऐसे व्यक्ति की दिलजूई की जानी चाहिये जो देश के लिये गर्व का कारण हो और ईश्वर की ओर से नियुक्त हो। और उसकी सच्चाई के लिये ईश्वर निशानियाँ दिखा रहा हो, और जिसकी नज़र से लोगों के दिल अल्लाह-अल्लाह में लगकर ईश्वर (रब्ब) के प्रेमी बन गये हों।

परंतु साधु, संतों (अवलिया) के शत्रु , मुहम्मद स० के घराने (अहले बैत) के शत्रु मोलवी और संगठनें इनके विरूद्ध सक्रिय (सरबस्तः) हो गये हैं। निराधार मुक़दमों, निराधार दाँव पेंच, और निराधार प्रोपेगंडों द्वारा लोगों का ध्यान हज्रअस्वद से हटाने की कोशिश की जा रही है। जबकि यह अति कोमल (नाज़ुक) और महत्तव पूर्ण धर्मप्रश्न (मसला) है, मुसलमानों के ईमान का ख़तरा है। तो इसकी तहक़ीक़ात के लिये ख़ामोशी क्यों है? इसके बारे में पूरी दुनिया में इतना नकारात्मक और स्वीकारात्मक प्रोपेगंडा हो चुका है कि अब इसको दबाना मुश्किल है। उधर संतों (वलियों) को मानने वाले उपद्रवी विद्वान (उलमा-ए-सू) गोहर शाही से द्वेष एवं ईर्ष्या के कारण गूँगे बन गये हैं। तस्वीर को स्पष्ट होने के कारण झुटलाना कठिन हो गया, तो कहते हैं कि चंद्रमाँ पर जादू चल गया, जबकि हज़ूर पाक ने कहा था कि चाँद पर जादू नहीं हो सकता, फिर कहते हैं हज्रअस्वद (शिवलिंग) भी जादू की लपेट में आ गया है। यदि काबा भी जादू की लपेट में आ गया है, तो फिर मुस्लिम के पास सुरक्षा की कौन सी जगह है? उदाहरण देते हैं कि हज़ूर पर भी जादू हो गया था, काबा मुहम्मद स० से श्रेष्ठ नहीं है।

निःसंदेह हज़ूर स० पर जादू हो गया था। परंतु उसके तोड़ के लिये सूरः वन्नास आ गई थी। तुम भी वन्नास द्वारा चंद्रमाँ और शिवलिंग पर फूँके मारो, यदि यह तस्वीर न मिटें बल्कि पहले से भी अधिक रोशन हो जायें तो फिर तुम्हें परमसत्य (हक़) को मानना पड़ेगा। वरना फिर तुम्हारे अंदर अबूजहल ही है।

* * * * * *

Official Visitors Guide, Summer * Fall 1996

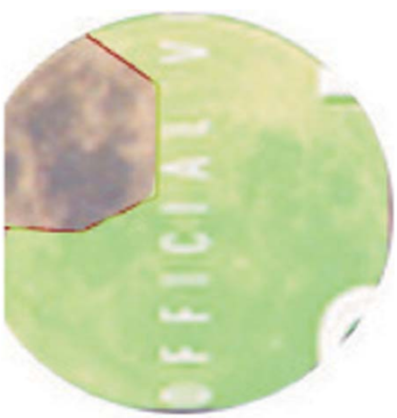

रिपोर्ट का अनुवादः

मैंने फोएंक्स शहर के मध्य भाग की तस्वीर ली और इसमें उभरने वाली चॉंद की तस्वीर में एक इंसानी चेहरा का मुखाकृति नज़र आता है,जब इसको 90 डिग्री के कोण पर देखा जाये।

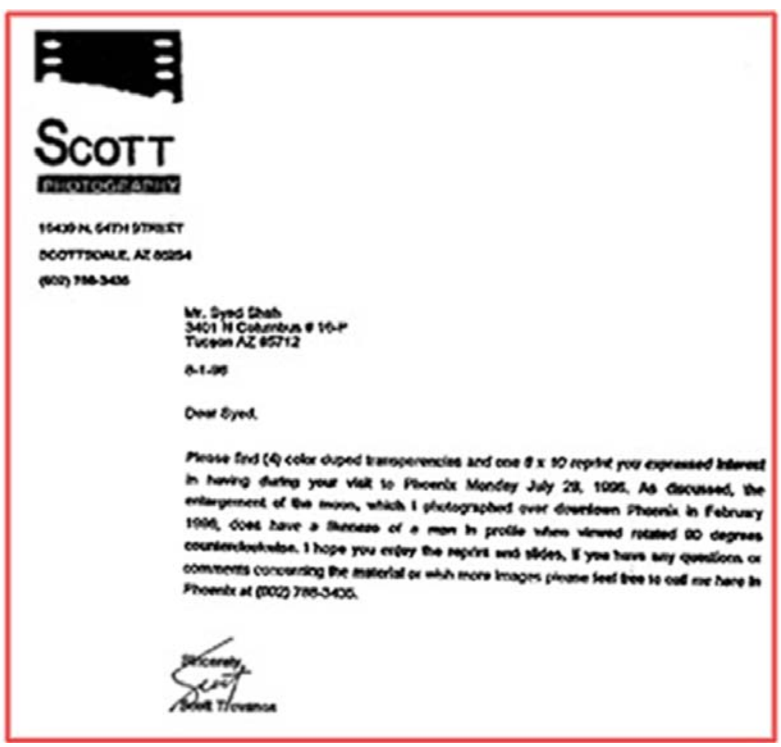

SCOTT
PHOTOGRAPHY

10430 N. 64TH STREET
SCOTTSDALE, AZ 85254
(602) 788-3436

Mr. Syed Shah
3401 N Columbus # 16-P
Tucson AZ 85712

8-1-96

Dear Syed,

Please find (4) color duped transparencies and one 8 x 10 reprint you expressed interest in having during your visit to Phoenix Monday July 29, 1996. As discussed, the enlargement of the moon, which I photographed over downtown Phoenix in February 1996, does have a likeness of a man in profile when viewed rotated 90 degrees counterclockwise. I hope you enjoy the reprint and slides. If you have any questions or comments concerning the material or wish more images please feel free to call me here in Phoenix at (602) 788-3435.

Sincerely,

Scott T[illegible]

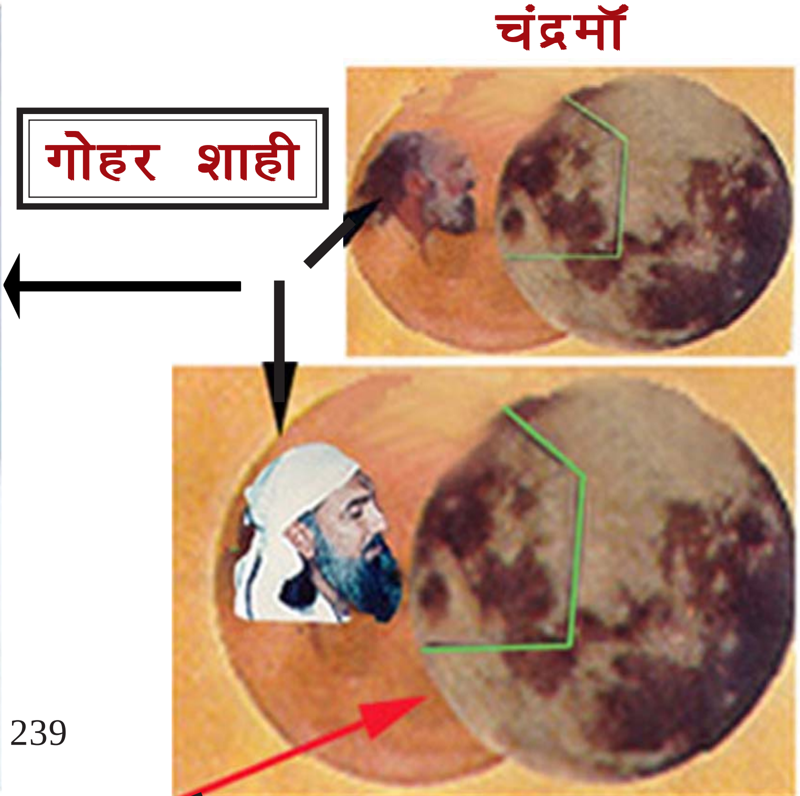

239

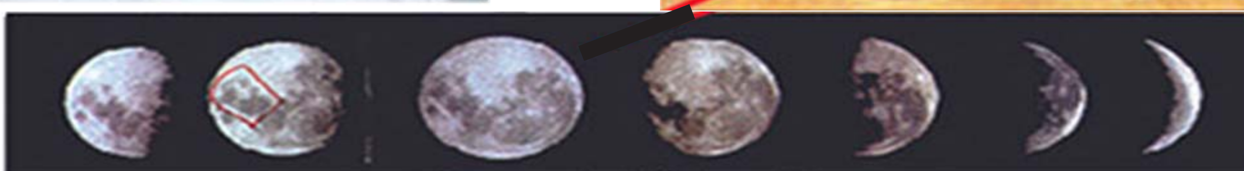

असली तस्वीरों के विभिन्न रूप (अंदाज़)

चंद्रमॉ की यह तस्वीर नासा NASA की ओर से प्रकाशित हुई है

http://oposite.stsci.edu/pubinfo/pr1999/14

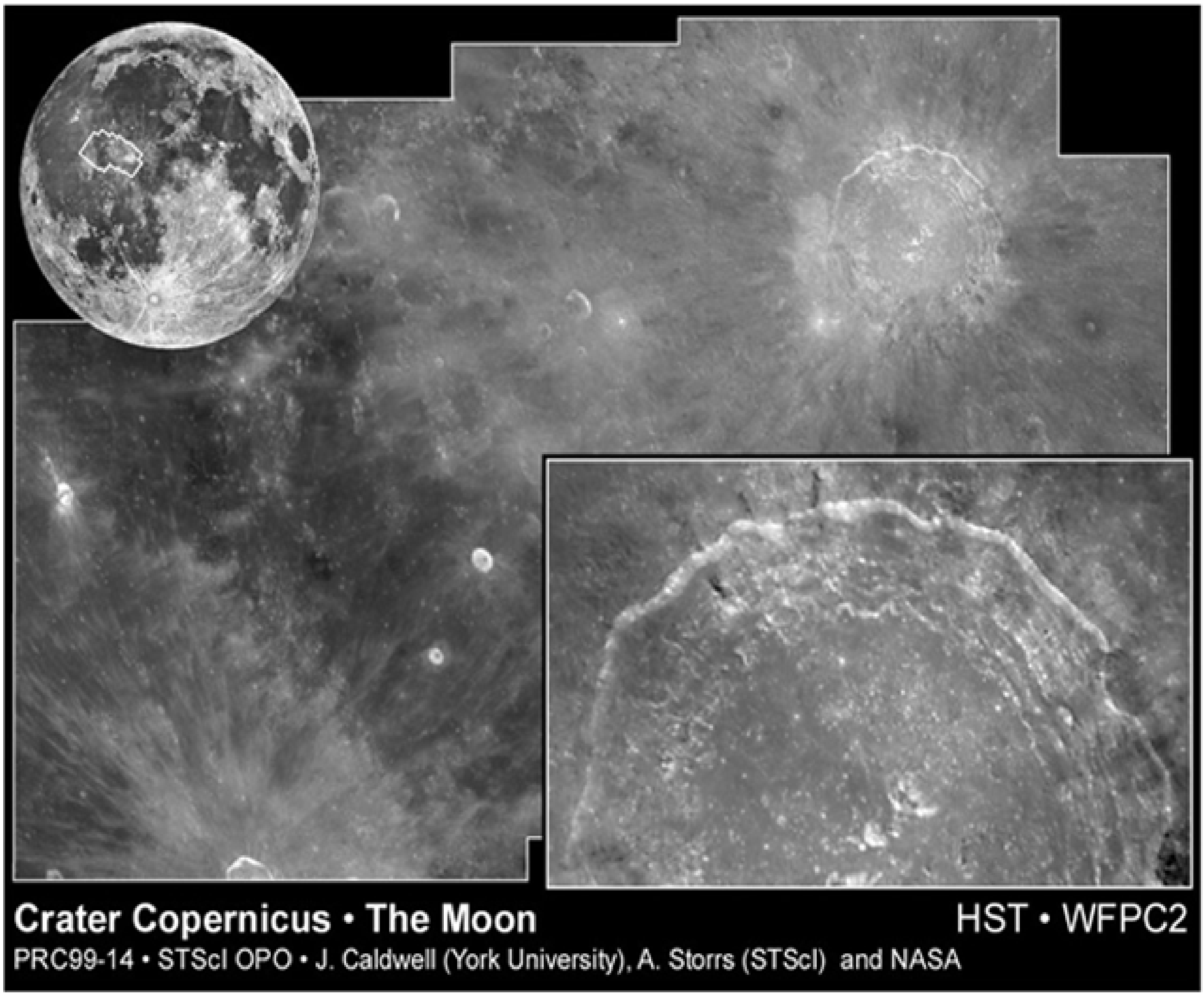

चंद्रमॉ की इस तस्वीर के बारे में अधिक जानकारी अगले पृष्ठ पर हैं

सत्पुरूष गोहर शाही

हम तुम्हें अतिनिकट दिखायेंगे अपनी निशानियाँ जगत् में और तुम्हारे अस्तित्व में, यहाँ तक कि तुम मान जाओगे कि यह परमसत्य (हक़्) है (ईश्वर कथन)

लौलाक लमा देख, ज़मीं देख फ़िज़ा देख
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख
(इक़बाल)

Up

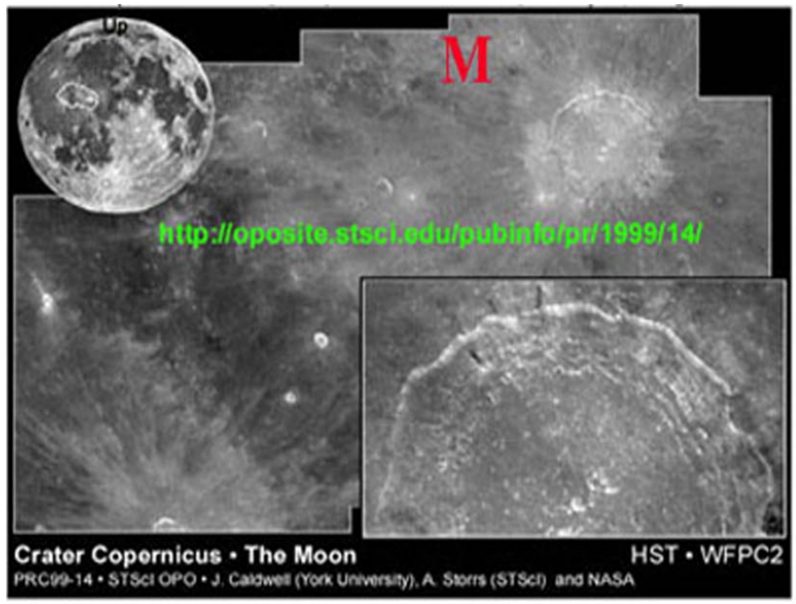

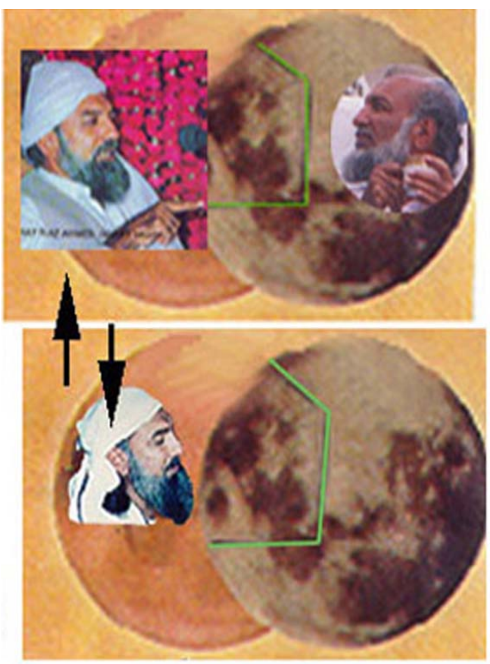

चंद्रमाँ

ऊपर वाली चंद्रमाँ की तस्वीर को बाईं ओर up के अनुसार घुमायें

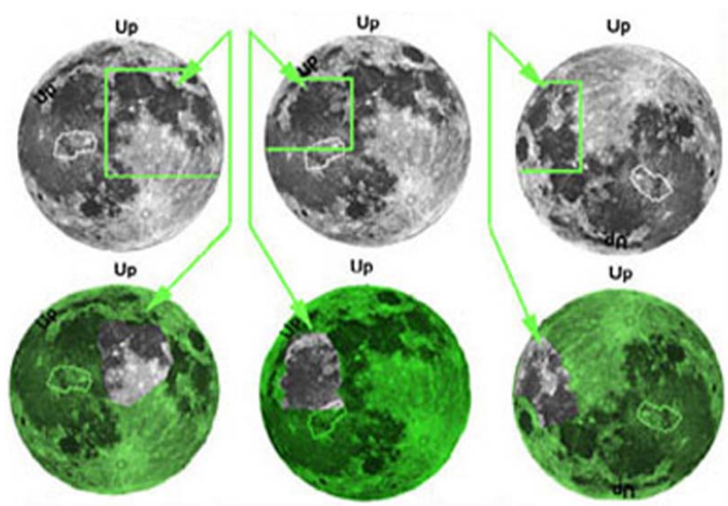

यह तस्वीरें पुस्तक (PICTORIAL ASTRONOMY) से प्राप्त की गईं हैं

Plate 15-3. Phase of the moon (page 60)

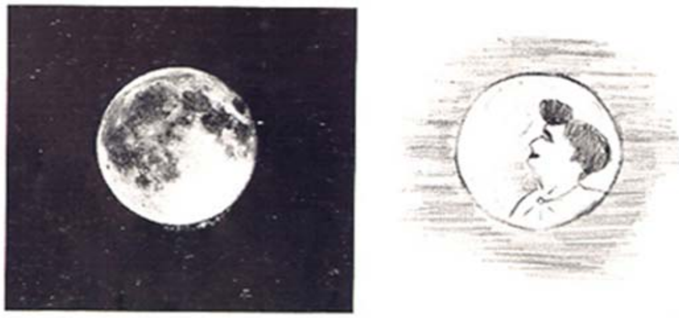

PLATE 15-4. The Lady in the Moon. If the page is held at arm's length, the drawing on the right will help you find the lady in the photograph of the moon on the left. To find her in the sky, look at the moon when it is full or during a few days before full moon. (Page 64)

PICTORIAL ASTRONOMY

by

DINSMORE ALTER, Ph.D., Sc.D.
Director

CLARENCE H. CLEMINSHAW, Ph.D.
Associate Director

GRIFFITH OBSERVATORY
CITY OF LOS ANGELES

by
DINSMORE ALTER and CLARENCE H. CLEMINSHAW

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form, except by a reviewer, without the permission of the publisher.

Library of Congress Catalog Card Number 56-7639

Manufactured in the United States of America

6 7 8 9 10

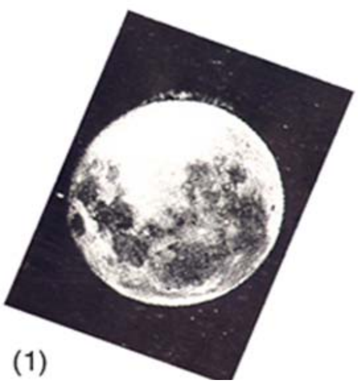

(1)

(2)

(3)

जब अमरीका में यह रहस्योद्‌घाटन हुआ कि चंद्रमॉं पर किसी एशियाई की तस्वीर है। जो हुलिया से मुसलमान नज़र आता है। तो उन्होंने तस्वीर का कोण (रूख़) परिवर्तित कर दिया, नं० 1, चंद्रमॉं की ओरिजनल तस्वीर है। नं० 2, तस्वीर भी चंद्रमॉं से ही संबंध रखती है। जिसमें उन्होंने कुछ परिवर्तन किया, सिर के ऊपर जो चेहरा और दाढ़ी थी उसे बराबर कर दिया गया। ताकि चेहरे की जगह बाल नज़र आयें, यह हुलिया क्लीनशेव आदमी का है, देखो तस्वीर नं० (3)। जिसे Dinsmore ने स्त्री के रूप में दिखाने की कोशिश की ताकि लोगों का ध्यान 'मॉं मेरी' (ह० मरियम) की ओर किया जाये।

विभिन्न मैग्ज़ीनों और कम्पनियों की ओर से प्रकाशित फोटो

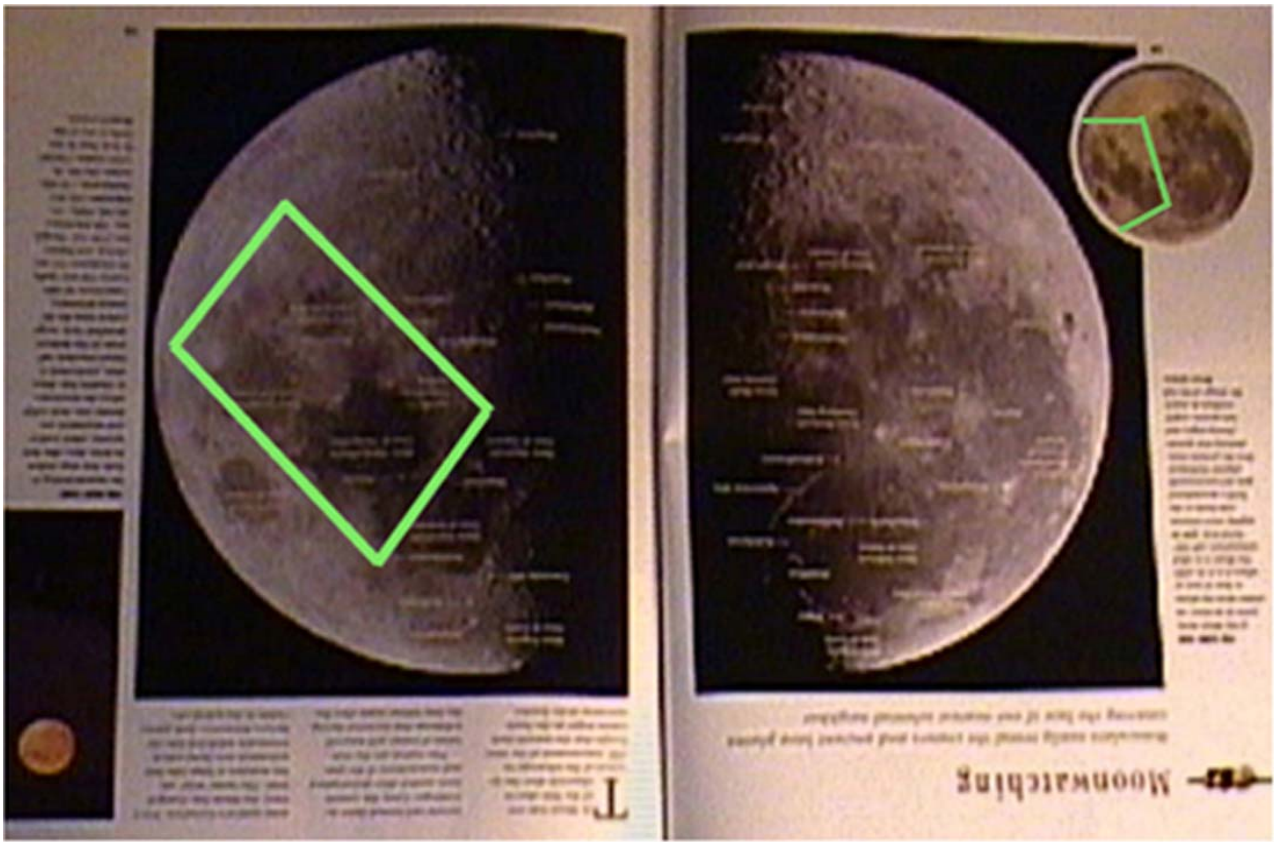

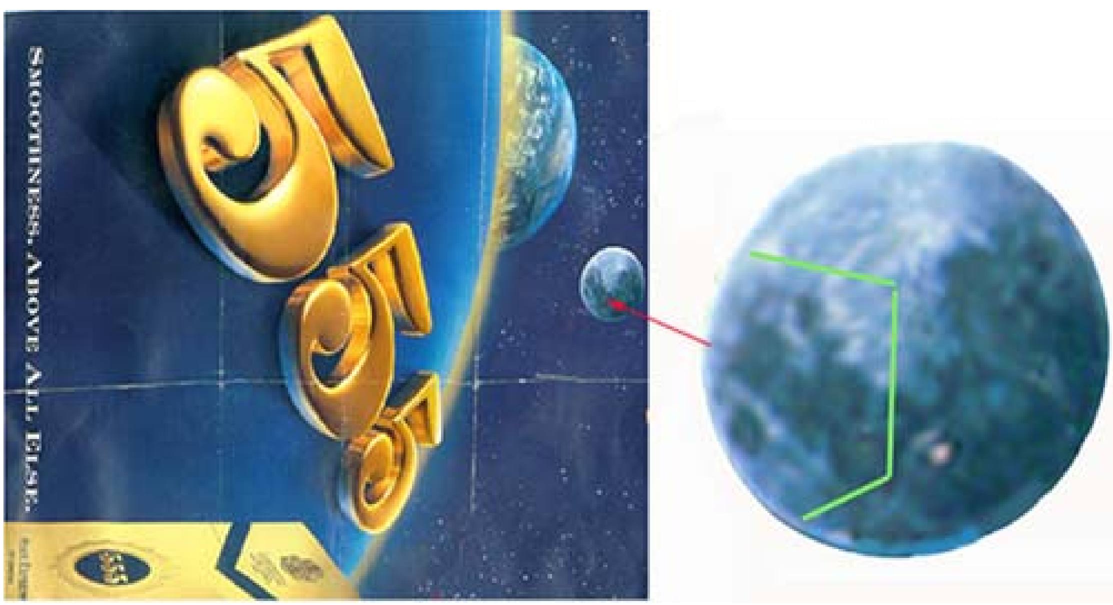

आप कहीं भी हों, पूर्व में या पश्चिम में अपने निजी कैमरे से चॉद की तस्वीरें खींचें, किसी भी कोण में ऐसी ही तस्वीरें नज़र आयेंगी, फिर उनके अनुसार चॉद को देखें

चंद्रमॉं की यह तस्वीर लंदन से प्रकाशित पुस्तक (SKY WATCHING) से प्राप्त की गई है

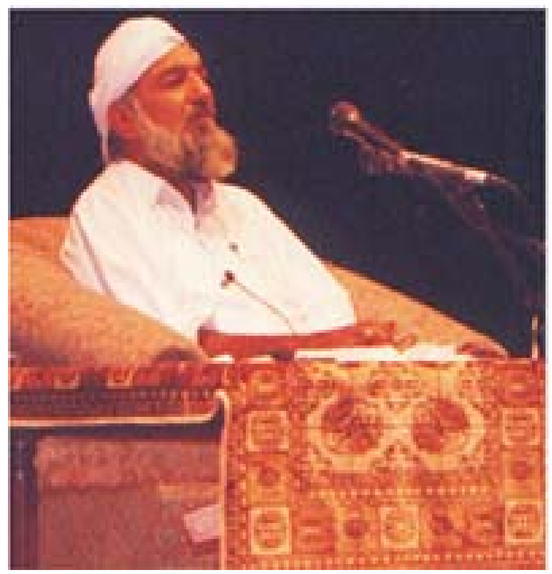

सत्पुरूष गोहर शाही

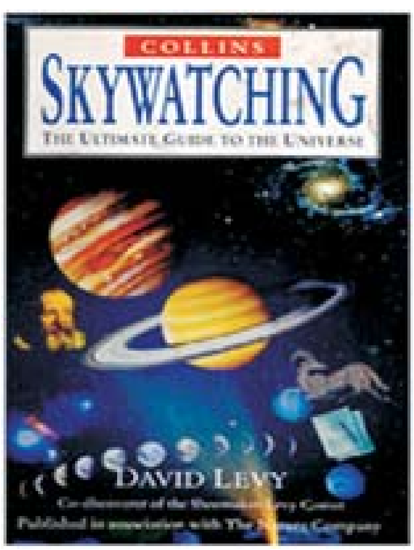

सूरज की यह तस्वीर नासा NASA की ओर से प्रकाशित हुई है

अत्यधिक जानकारी के लिये निम्न लिखित वेबसाइट पर संपर्क करें
http://thalia.gsfc.nasa.gov/~gibson/SPARTAN/sohof.html

सूरज की इन तस्वीरों को NORTH के अनुसार घुमाकर देखें

सूरज की तस्वीर

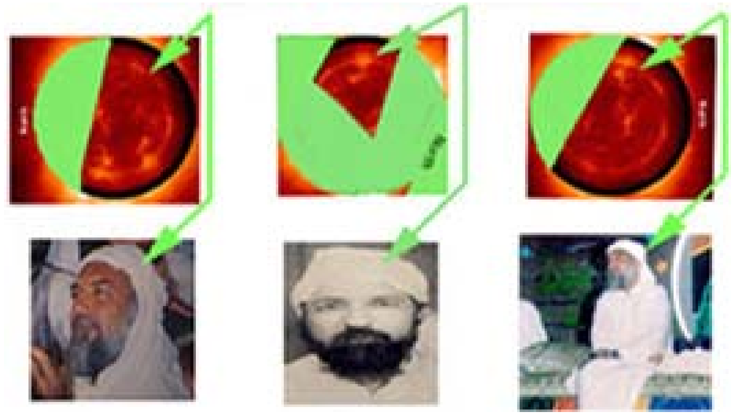

तस्वीरें परमपूज्य गोहर शाही की विभिन्न समयों में

नासा से प्राप्त सूर्य के इस चित्र में सत्पुरूष गोहर शाही का यह चेहरा भी अति स्पष्ट नज़र आता है

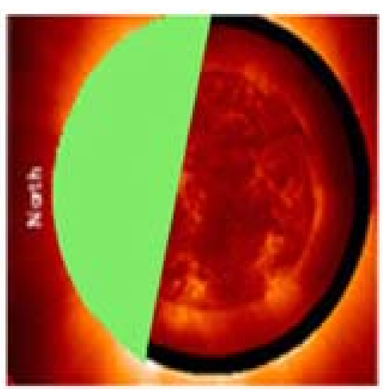

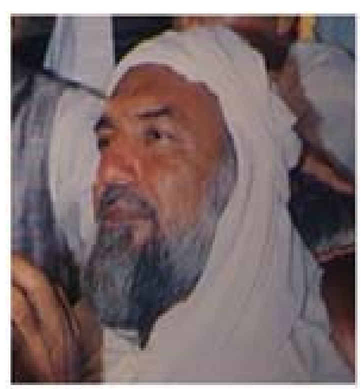

चाँद, सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गोहर
है सबूत-ए-हक़ तेरा इस दिल में आ जाने का नाम
यूनुस

NASA FINDS MASSIVE FACE IN SPACE!

NASA has released a shocking photograph that clearly shows a gigantic face floating in distant space!

The breathtaking photo was taken during the shuttle mission in late February — but experts admit they are baffled as to where the face originated.

By WHITNEY ASQUE

'It's as large as 150 suns!'

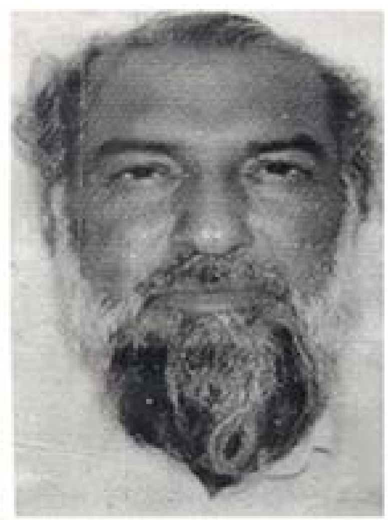

सत्पुरूष गोहर शाही

अट्लांटा के अंतरिक्ष यात्री आइज़ेक हाकिंग्ज़ ने कहा कि यह स्पष्ट रूप से किसी इंसान के चेहरे का प्रतिबिंब है। यह अपनी इच्छा से प्रकट और छुप जाने की निपुण्ता (सलाहियत) रखता है, नासा में उपस्थित प्रत्येक ने यह अनुभूत किया कि यह बहुत बड़ी अंतरिक्ष प्राप्ति है। हो सकता है कि यह चेहरा कई वर्षों से हमें देख रहा हो। हाकिंग्ज़ ने आगे कहा कि हमारी बुद्धियों से यह विचार भी गुज़रा है कि संभवतः यह ईश्वर का चेहरा हो, और कहीं भी इसका खण्डन नहीं है।

सद्गुरू गोहर शाही का यह दिव्य प्रतिबिंब वास्तव में वह आंतरात्मिक प्राणीवर्ग ''तिफ्ल-ए-नूरी'' है, जो कतिपय विशेष ईश्वरमित्रों के लिये विशिष्ट है और जिसका वर्णन ईश्वरमित्रों (अवलिया) की विभिन्न पुस्तकों में लिखित है

A human face is discovered on the black stone (Hijr - e - Aswad) in Makkah, Saudi Arabia.
Daily Parcham
Karachi,
Pakistan
26th May 1998
Sheikh Hamad bin Abdallah
Spiritualists in Makkah say that
this is the face of Imam Mehdi
(Al-Muntazar)
حجرِ اسود پر انسانی شبیہ

Computer Report from Pakistan
APTECH CENTRE
It is said amongst spiritual circles around the world that in addition to his facial images appearing on the sun and the moon, the face on the black stone (Hijr - e - Aswad) in Makkah, Saudi Arabia, is that of Riaz Ahmed Gohar Shahi of Pakistan.
دی گریٹ گاڈ
حجر اسود میں سیدنا گوہر شاہی کی شبیہ کا انکشاف

शिवलिंग (हज्र अस्वद) पर इंसानी तस्वीर उलमा में खलबली

विश्वस्नीय सूत्रों के अनुसार कराची के श्रेष्ठतम धर्म विद्वान (जैयद उलमा)
एक प्रसिद्ध विश्व विद्यालय में सिर जोड़ कर बैठे रहे

प्रतिबिंब का नज़र आना एक वास्तविक्ता है लेकिन शरीयतानुरूप किस प्रकार पुष्टि की जा सकती है?
उलमा अंतिम निर्णय पर सहमत न हो सके और दृष्टिकोणरूपेण दो गुटों में विभाजित हो गये

सऊदी उलमा का फतवा या परामर्श की प्रतीक्षा। अन्य देशों के
जैयद उलमा से परामर्श प्राप्त करने पर सहमति

حجر اسود پر انسانی شبیہ علمائے میں کھلبلی

باوثوق ذرائع کے مطابق کراچی کے جید علماء ایک معروف دار العلوم میں سر جوڑ کر بیٹھے رہے

شبیہ کا نظر آنا ایک حقیقت ہے لیکن شریعت کی رو سے کس طرح تصدیق کی جاسکتی ہے

علماء حتمی فیصلے پر متفق نہ ہوسکے اور نظریاتی طور پر دو گروہوں میں تقسیم ہوگئے

سعودی علماء کا فتویٰ یا آراء کا انتظار دیگر ممالک کے جید علماء سے آراء حاصل کرنے پر اتفاق

کراچی (نمائندہ خصوصی) امام کعبہ کے حوالے سے حجر اسود پر انسانی شبیہ ظاہر ہو رہی ہے نے ملک کے علماء میں کھلبلی مچادی باوثوق ذرائع کے مطابق کراچی کے جید علماء معروف دار العلوم میں سر جوڑ کر بیٹھے لیکن حتمی آراء پر متفق نہ ہوسکے اور نظریاتی طور پر دو گروہوں میں تقسیم ہوگئے علماء پریشان ہیں شبیہ کا نظر آنا تو ایک حقیقت ہے لیکن شریعت کی رو سے کس طرح تصدیق کی

7

جاسکتی ہے آخر میں چند اعتدال پسند علماء نے معاملے کی نزاکت کو سمجھتے ہوئے فیصلہ کیا کہ سعودی علماء کے فتوی یا آراء کا انتظار کیا جائے اور اس سلسلے میں دیگر ممالک کے جید علماء کی آراء بھی حاصل کی جائے تاکہ اس کی روشنی میں آئندہ کا لائحہ عمل متفقہ طور پر طے کیا جاسکے اس وقت اس بات کی تصدیق یا تردید نہ کی جائے یاد رہے کہ حجر اسود پر انسانی شبیہ کی خبر چند اخبارات نے شائع کی جبکہ ملک کے بڑے بڑے اخبارات نے علماء کی مخالفت کے ڈر سے یہ خبر اپنے اخبارات میں شائع نہیں کی لیکن یہ خبر تاحال عوام الناس میں توجہ کا مرکز ہے۔

پندرہ روزہ صدائے سرفروش حیدرآباد
SADA-E-SARFAROOSH Hyderabad
ایڈیٹر سید ظفر علی کاظمی
Tel: 783660-869990
جلد نمبر 7 | 16 تا 30 جون 98ء بمطابق 20 صفر تا 4 ربیع الاول 1419ھ | شمارہ نمبر 12

حجر اسود پر انسانی شبیہ نمودار | عالم اسلام میں سنسنی

یہ شبیہ اتنی واضح ہے کہ اسے کوئی بھی نہیں جھٹلا سکتا، بعض لوگوں کا کہنا ہے کہ یہ امام مہدی علیہ السلام کا چہرہ اور حلیہ مبارک ہے

حجر اسود پر انسانی شبیہ کے نمایاں اثرات پائے گئے ہیں جو دیکھنے میں بالکل الٹی سمت پر ہیں، شیخ حماد بن عبداللہ

نئے دور کا نیا اخبار ☆ قیمت میں سب سے کم ☆ خبروں میں سب سے آگے
Daily MAHASIB Karachi
روزنامہ محاسب کراچی
ایڈیٹر ظفر حجازی — قیمت 2 روپے
جلد نمبر 1 | بدھ 27 مئی 1998ء 29 محرم الحرام 1419ھ | شمارہ نمبر 290

کراچی (محاسب نیوز) سعودی عرب سے موصولہ ایک فیکس کے مطابق شیخ حماد بن عبداللہ نے مکہ المکرمہ سے ایک اعلامیہ جاری کیا ہے کہ اس مرتبہ حج سے قبل حجرہ اسود پر انسانی شبیہہ کے نمایاں آثار موجود پائے گئے جو دیکھنے میں بالکل الٹی سمت پر ہے جس کی وجہ سے کسی کو محسوس نہیں ہوتی نشاندہی ہونے کے بعد دیکھی جاسکتی ہے شیخ حماد بن عبداللہ نے کہا کہ دو باتیں ہو سکتی ہیں یہ شبہیہ قدرتی طور پر نمودار ہوئی ہو یا کسی نے خود بنائی ہو مگر حرم کی حدود میں سخت نگرانی اور ہر وقت خادمین حرمین اور حکومت کے پہرہ کے سبب کوئی شخص اپنے ہاتھ سے تصویر بنانے کی ہمت نہیں کر سکتا اگر یہ شبہیہ شروع سے تھی تو لوگوں کو کیوں نظر نہیں آئی تصویر اتنی واضح ہے کہ اسے جھٹلایا بھی نہیں جاسکتا انہوں نے کہا کہ مکہ المکرمہ کے فقیروں میں چند نے کہا ہے کہ یہ امام مہدی علیہ السلام کا چہرہ اور حلیہ مبارک ہے جو دنیا میں کہیں موجود ہیں تاکہ لوگ انہیں پہچان سکیں انہوں نے کہا کہ حکومتی اہلکار پریشان ہیں کہ اسے کس طرح ختم کیا جائے کیونکہ تصویر شریعت میں حرام ہے حاجی اور عمرہ کرنے والے لازماً "اس پتھر کو جھک کر چومتے ہیں اگر یہ کسی کی شرارت ہے تو شرک کا خدشہ بھی بڑھ رہا ہے شیخ حماد بن عبداللہ نے بتایا کہ حج کا سیزن آگیا تھا اس لئے لوگوں کے رش کو ملحوظ خاطر رکھتے ہوئے فی الحال کوئی خاص پیش رفت اس سلسلے میں نہیں کی گئی تھی اب اس مسئلہ پر سنجیدگی سے غور و فکر جاری ہے یہ مسئلہ پورے عالم اسلام کے لئے اہم اور سنگین نوعیت کا ہے اس لئے تمام ممالک کے اخبارات کو فیکس اور حکومتوں کو مطلع کیا جارہا ہے۔

शिक्षा विभाग, पंजाब सरकार की पब्लिश की हुई इस दीनियात की पुस्तक में हज्र अस्वद की तस्वीर में सद्‌गुरू गोहर शाही की तस्वीर स्पष्ट रूपेण नज़र आती है।

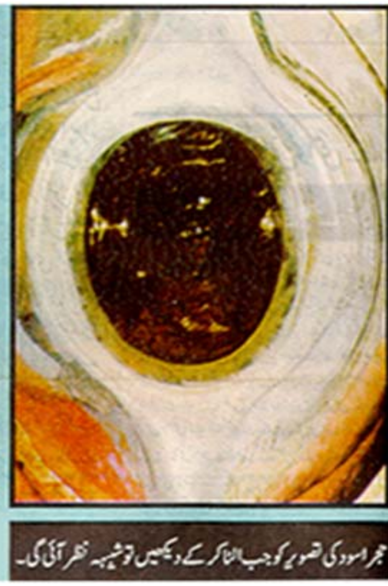

तीस वर्ष पूर्व मिर्ज़ा लाइब्रेरी अलहमरा गेट मक्का से प्रकाशित हज्र अस्वद का फोटो जिसमें एक छतरीधारी व्यक्ति को दिखाया गया है। इस फोटो को जब उल्टा करें तो तस्वीर स्पष्ट नज़र आयेगी।

हज्र अस्वद की तस्वीर को जब उल्टा करके देखें तो प्रतिबिंब नज़र आयेगा

हज्र अस्वद में ईश्वर की ओर से आने वाली तस्वीर का कम्प्यूट्राइज़्ड तहक़ीक़ के बाद छाया चित्र

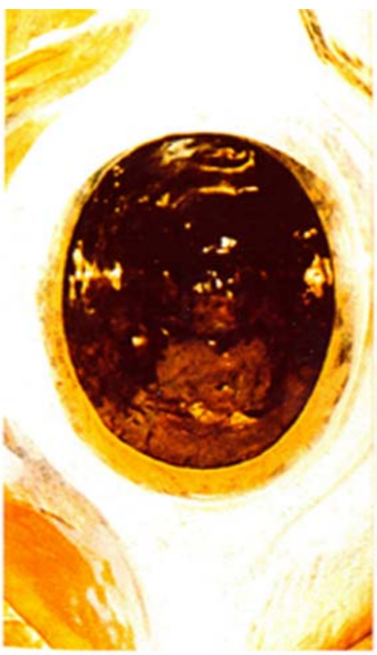

Sole Agent in Saudi Arabia
Mirza Library and Al-Harmain Library,
Al-Omra Gate,
Makkah.

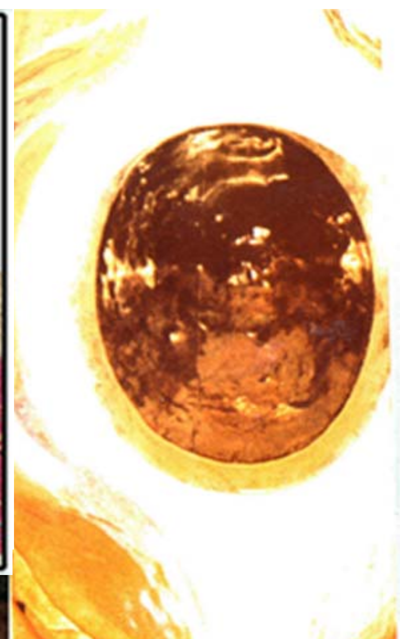

परमपूज्य गोहर शाही का वह फोटो जो शिवलिंग में प्रकट होने वाले दिव्य प्रतिबिंब से समतुल्यता रखता है।

मिर्ज़ा लाइब्रेरी मक्का से प्रकाशित

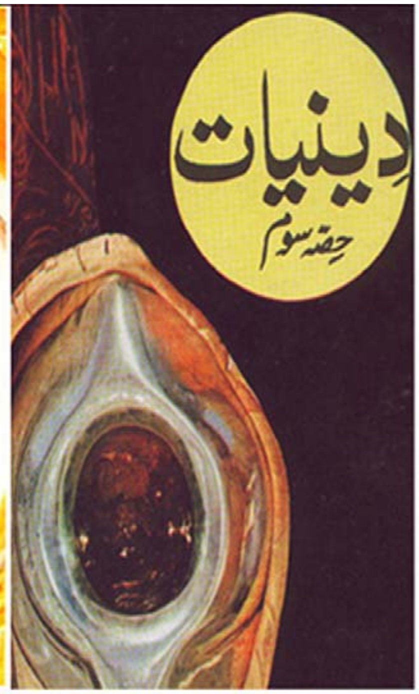

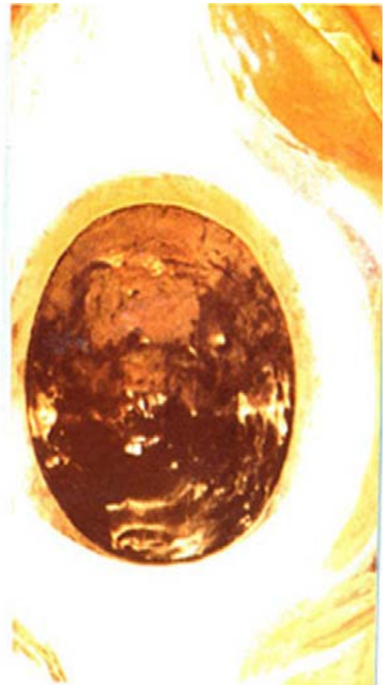

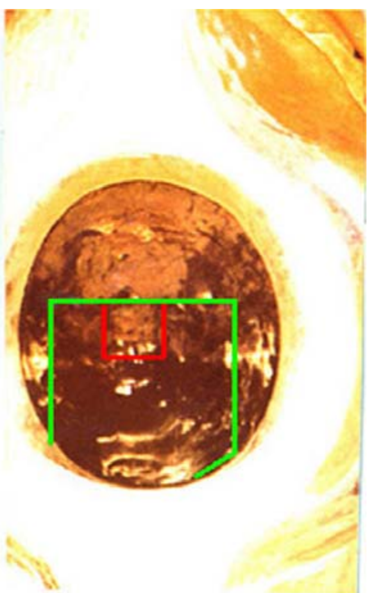

सत्पुरूष गोहर शाही
(युवावस्था)

इस तस्वीर की निशानदेही
रेखा द्वारा की गई है

25 वर्ष की ही आयु में ''जुस्सा-ए-गोहर शाही'' अर्थात- प्रतिशरीर को आंतरात्मिक सेना के सेनापति के पद से सम्मानित किया गया था। उस आयु और उस समय की निशानदेही, हज्र अस्वद (शिवलिंग) और साथ दी हुई तस्वीर में देखें।

यह तस्वीर वर्तमान समय ही में नेबुला Nebula नामक सूरजनुमा सितारे पर प्रकट हुई है, और नासा NASA ने ही प्रकाशित की है विवरणों के लिये निम्नलिखित वेबसाइट पर जायें।

http://www.spacedaily.com/spacecast/news/hubble-00b1.html

SPACE SCOPES

Hubble Brings "Eskimo" Nebula Alive

<../news/hubble-00b2.html>

Greenbelt - January 11, 2000 -
The Hubble Space Telescope has captured a majestic view of a planetary nebula, the glowing remains of a dying, Sun-like star. This stellar relic, first spied by William Herschel in 1787, is nicknamed the "Eskimo" Nebula (NGC 2392) because, when viewed through ground-based telescopes, it resembles a face surrounded by a fur parka.

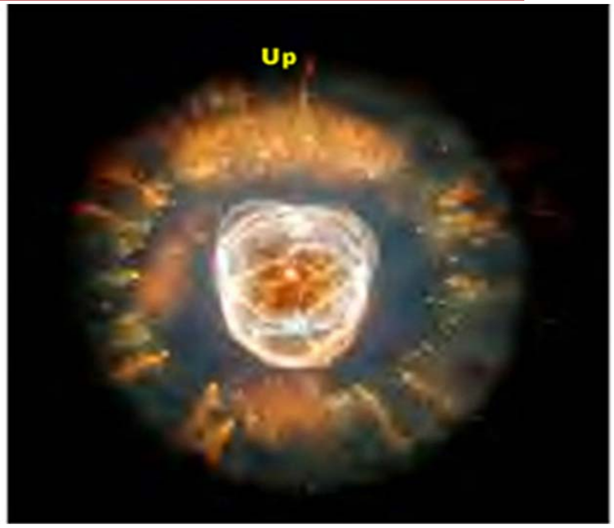

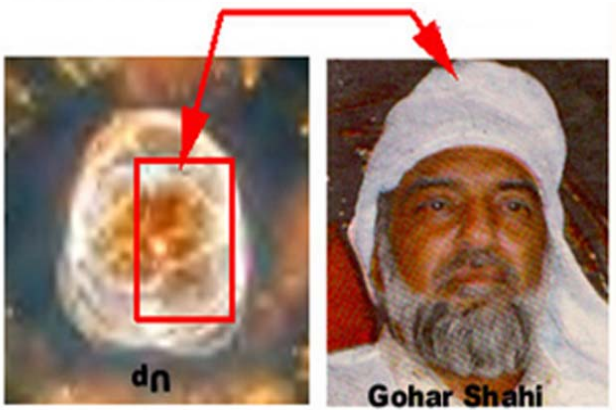

गोहर शाही

गोहर शाही

गोहर शाही

ऊपर वाली तस्वीर को up के अनुसार घुमाकर देखें, जिसके चेहरे पर कुछ लिखा हुआ है!

कुछ लोग कहते हैं यह कल्पना है। कल्पना, कल्पनाधारी तक सीमित होता है। कैमरों में नहीं आता। कुछ कहते हैं टेलीपैथी या मिस्मेरिज़्म है। इबादतगाहें और धरती एवं आकाश टेलीपैथी या जादू की लपेट में नहीं आ सकते। यदि ऐसा ही है तो फिर सत्य किधर है? कुछ लोगों का कहना है कि अमरीका ने पैसे लेकर कम्प्यूटर द्वारा यह तस्वीरें लगा दी हैं, क्या गोहर शाही अमरीका से अधिक धनवान है? यदि ऐसा संभव होता तो वह अपने किसी पोप Pope की तस्वीर लगाता ताकि उसके धर्म और राष्ट्र का उत्थान और लाभ हो।

* मंगलग्रह की पहेलियाँ *

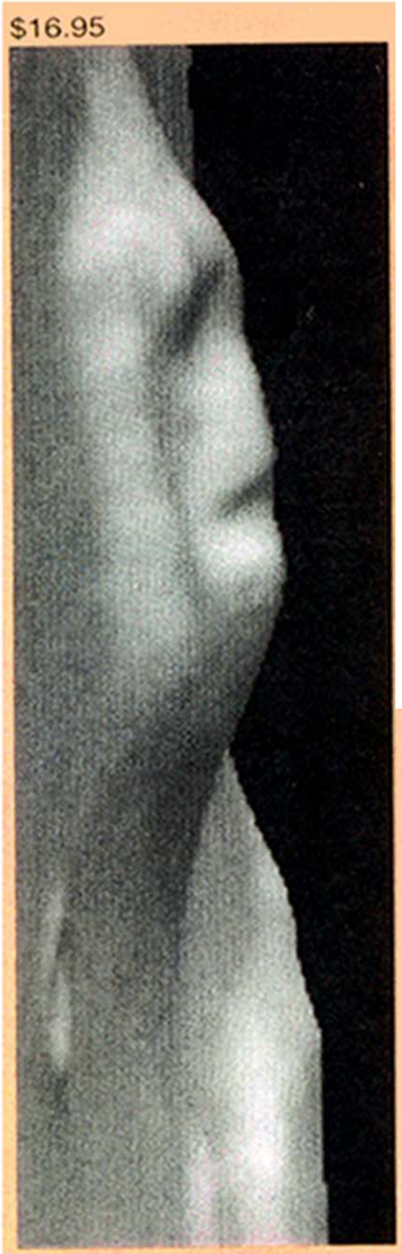

प्राचीनकाल से ही मंगलग्रह ने हमारी कल्पनाओं को झिंझोड़ रखा है। इस शताब्दी के द्वितीयार्ध तक यही समझा जाता था कि मंगलग्रह पृथ्वी की तरह है। किन्तु 1960 के अन्त में NASA ने मेरीनर प्रोब्ज़ Mariner Probes ने इस असत्य कल्पना को छिन्न-भिन्न करके यह कल्पना पेश किया कि मंगल अर्थात लालग्रह, हमारी पृथ्वी के चाँद जैसा है। जल निकलने के प्रमाण और अन्य प्राप्ति ने निःसंदेह इस आशा को शक्ति प्रदान की कि मंगल की सतह पर भी जीवन के लक्षण की उपस्थिति संभव है।

1975 ई० में 2 वाई किंग अंतरिक्षयान मंगलग्रह की ओर भेजे गये जिनमें से प्रत्येक एक आरबिटर (ग्रह की परिक्रमा करने वाला यन्त्र) और एक लैंडर (मंगल पर उतरने वाला यन्त्र) पर संयुक्त था। इनका प्रारंभिक मिशन यह था कि साफ्ट लैंड के द्वारा दो खोजी रोबोट को मंगल की सतह पर उतारा जाये कि वह जीवन के लक्षण मंगल की सतह पर तलाश कर पायें। जुलाई 1976 के अंत में अंतरिक्षयान के एक आरबिटर ने एक मनोरंजक तस्वीर भेजी जो कि एक मील लंबी इंसानी चेहरे पर संयुक्त थी और यूँ अनुभूत होता था कि वह चेहरा उत्तरी खण्ड जिसे साइडोनिया Cydonia कहा जाता है, से शून्य में घूर रहा है। मंगलग्रह पर पाये जाने वाले इंसानी चेहरे को नासा ने यह कह कर खण्डन कर दिया कि यह प्रकाश और प्रतिबिंब का धोखा है और मंगलग्रह पर इंसानी चेहरे वाली बात नासा ने फाइल में डाल कर भुला दी।

कई वर्षों के बाद दो इंजीनियर Gregory Molenaar और Vincent Di Pietro ने उसी चेहरे को पुनः ढूँढ लिया और उस खोज का केन्द्र एवं ध्रुव बन गये जिससे अगले 10 वर्षों में एक स्वतंत्र और अत्यधिक व्यवस्था वाली खोज का क्रम चल निकला। चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग, मैपिंग, गणित, मानव विज्ञान, निर्माण, कलाइतिहास, सिस्टम साइंस, ईश्वरज्ञान और दूसरे विभागों के व्यवसाइयों ने लगभग एक दर्जन मंगल की तस्वीरें खोजी हैं और उनपर तहक़ीक़ की जो उन कथित वर्णनों को (कि मंगल पर जीवन के लक्षण मिलने की संभावना नहीं) निरस्त और समाप्त करने के लिये एक प्रचण्ड चुनौती और प्रमाण सिद्ध हुई हैं।

मार्क जे० कार्लोटो की पुस्तक मार्शियन इनिग्मास, जिसमें वाई किंग अंतरिक्षयान से ली गई मंगलग्रह की विवादित तस्वीरों की स्टेट आफ आर्ट डिजिटल प्रोसीज़िंग पर आधारित रिपोर्ट है। डा० कार्लोटो इस पुस्तक में वह समस्त विधियों का विवरण बताते हैं जिनसे उन्होंने वाईकिंग की तस्वीरों को और अधिक स्पष्ट और साफ किया। उन्होंने मंगलग्रह पर उपस्थित अनेकों आश्चर्यजनक वस्तुओं की और चेहरे की त्रिकोणीय तस्वीरें और कम्प्यूटर फिल्म प्रस्तुत की। वह इस बात पर बहस करते हैं कि संभवतः यह प्रथम स्पष्ट और ठोस प्रमाण है जिनका वैज्ञानिकों को दशकों से प्रतीक्षा थी कि, पृथ्वी पर निवासित लोग अकेले नहीं हैं।

मार्क जे० कार्लोटो बोस्टन (अमरीका) की एक साइंसी फर्म (TASC) में डिविजिनल एनालीस्ट हैं। उन्होंने 1981 में Carneige-Mellon युनिवर्सिटी से Ph.D. की। 1981 से 1983 तक बोस्टन युनिवर्सिटी में असिस्टेन्ट प्रोफेसर रहे हैं। डा० कार्लोटो को Image Processing का और उससे संलग्न विभागों का दस वर्ष से अधिक अनुभव है। उन्होंने कम्प्यूटर विज़न, डिजिटल इमेज प्रोसीज़िंग और पैटर्न रिकग्नेशन के विषयों पर चालीस से अधिक मसौदे लिखे और प्रकाशित करवाये हैं। वह इंस्टीट्यूट आफ इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रोनिक इंजीनियरिंग के सीनियर मेम्बर हैं।

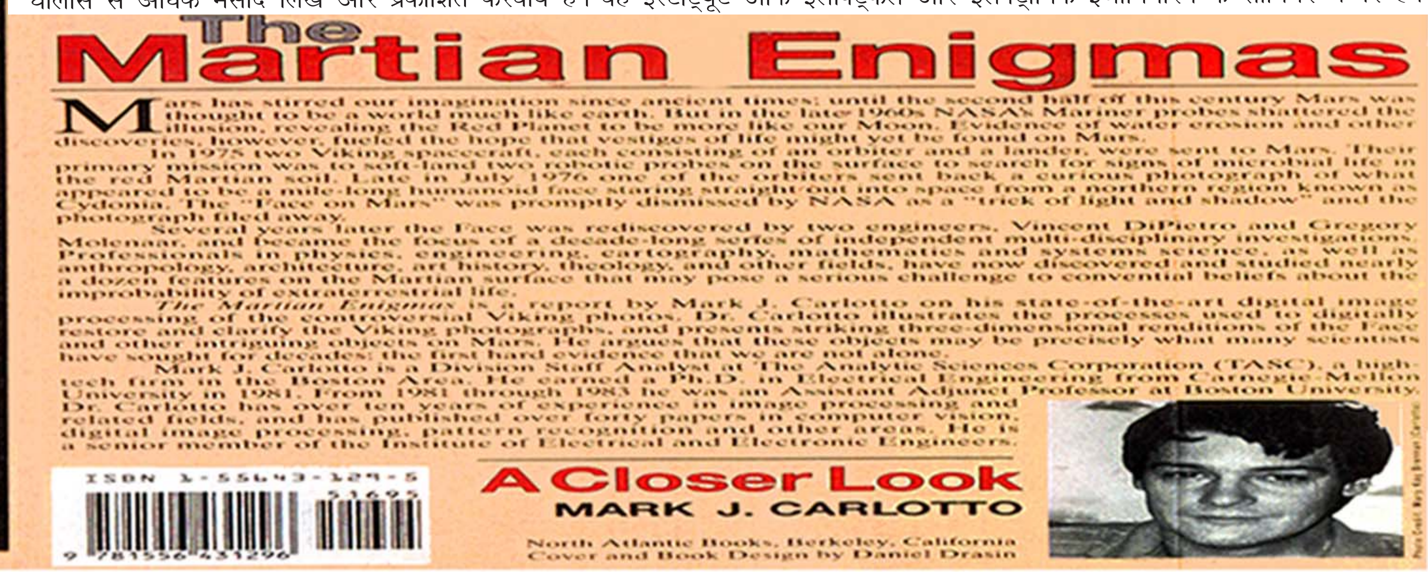

The Martian Enigmas

Mars has stirred our imagination since ancient times; until the second half of this century Mars was thought to be a world much like earth. But in the late 1960s NASA's Mariner probes shattered the illusion, revealing the Red Planet to be more like our Moon. Evidence of water erosion and other discoveries, however, fueled the hope that vestiges of life might yet be found on Mars.

In 1975 two Viking spacecraft, each consisting of an orbiter and a lander, were sent to Mars. Their primary mission was to soft-land two robotic probes on the surface to search for signs of microbial life in the red Martian soil. Late in July 1976 one of the orbiters sent back a curious photograph of what appeared to be a mile-long humanoid face staring straight out into space from a northern region known as Cydonia. The "Face on Mars" was promptly dismissed by NASA as a "trick of light and shadow" and the photograph filed away.

Several years later the Face was rediscovered by two engineers, Vincent DiPietro and Gregory Molenaar, and became the focus of a decade-long series of independent multi-disciplinary investigations. Professionals in physics, engineering, cartography, mathematics and systems science, as well as anthropology, architecture, art history, theology, and other fields, have now discovered and studied nearly a dozen features on the Martian surface that may pose a serious challenge to conventional beliefs about the improbability of extraterrestrial life.

The Martian Enigmas is a report by Mark J. Carlotto on his state-of-the-art digital image processing of the controversial Viking photos. Dr. Carlotto illustrates the processes used to digitally restore and clarify the Viking photographs, and presents striking three-dimensional renditions of the Face and other intriguing objects on Mars. He argues that these objects may be precisely what many scientists have sought for decades: the first hard evidence that we are not alone.

Mark J. Carlotto is a Division Staff Analyst at The Analytic Sciences Corporation (TASC), a high-tech firm in the Boston Area. He earned a Ph.D. in Electrical Engineering from Carnegie-Mellon University in 1981. From 1981 through 1983 he was an Assistant Adjunct Professor at Boston University. Dr. Carlotto has over ten years of experience in image processing and related fields, and has published over forty papers in computer vision, digital image processing, pattern recognition and other areas. He is a senior member of the Institute of Electrical and Electronic Engineers.

ISBN 1-55643-129-5

A Closer Look

MARK J. CARLOTTO

North Atlantic Books, Berkeley, California
Cover and Book Design by Daniel Drasin

इस चित्र में दो चेहरे दिखाई दे रहे हैं जब चित्र को 180 डिग्री कोण पर घुमाया जाये

1-साप्ताहिक समाचारपत्र पयाम मानचेस्टर में यह समाचार चित्रों समेत 15 अगस्त1997ई०को प्रकाशित हुई थी।
2- अर्ध मासिक समाचार पत्र सदा-ए-सरफ़रोश ने भी यह ख़बर सितंबर 1997 को छापी।
3- 28 सितंबर 1997 को BBC ने यह ख़बर GMR रेडियो (UK) से प्रसारित की।

ईशु मसीह और सत्पुरूष गोहर शाही की मुलाक़ात 1997 को न्यु मेक्सिको में हुई।

ह० गोहर शाही

www.goharshahi.com

मंगलग्रह की यह तस्वीरें नासा (NASA) ने विभिन्न स्थितियों और विभिन्न कोणों से खींची हैं देखिये वेबसाइट:-

Nasa has taken these photographs from different angles and different views. Visit the following website http://www.psrw.com/~markc/marshome.html

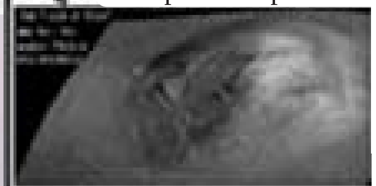

बोस्टन युनिवर्सिटी के प्रोफेसर मार्क जे० ने इन तस्वीरों की तहक़ीक़ और पुष्टि करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया है

Professor Mark J. of boston University having researched and verified these photographs published them in his book

सीधी तस्वीर में ईशु मसीह
और उलटी तस्वीर में सत्पुरूष ह० गोहर शाही

When Picture is straight the image of Jesus is visible and when turned upside down the image of Gohar Shahi is visible.

www.tlig.org/jesus.html

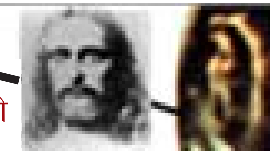

ईशु मसीह Jesus

www.jays-homepage.co.uk

Scince and Technology

In 1998, The Mars Global Surveyour took pictures of Mars. On the Surface of Mars there was a rock found which resombled the face of a human being. It was one mile long and 2000 feet high. It was made by beings who were similar to us and had lived there in the past.An astrologist Dr. Frania says "This is the proof of the one we have been waiting for, for a long time"

Published in the Sunday Magazine,The Jang,Pakstan on 18-3-01

People should research into this matter

साइंस और टेक्नोलोजी

जंग सण्डे मैग्ज़ीन 18 मार्च 2001 ई० अंतरिक्ष विज्ञान के कुशल डाक्टर बंजामन फ्रानिया के अनुसार अमरीकी अंतरिक्ष अंवेषण की संस्था नासा ने 1976 ई० में वाईकिंग आर्टर नामक यान और 1998 में मार्स ग्लोबल सर्वेयर नामक यान ने मंगल ग्रह का एक चित्र प्राप्त किया है जिससे प्रमाणित होता है कि वहाँ दो लाख वर्ष पूर्व इंसान आबाद थे। इस चित्र में मंगल की खुर्दरी सतह पर पत्थर का बना हुआ एक इंसानी चेहरा है जो अभ्यस्तों के अनुसार किसी इंसान ही की कृति हो सकती है। नासा की सरकारी रिपोर्ट में बताया गया है कि पत्थर का यह इंसानी चेहरा हमारी तरह के इंसानों ने तराशा है जो किसी युग में मंगल ग्रह पर आबाद थे मगर वहाँ के माहौल ने उन्हें विवश कर दिया कि वह पृथ्वी या किसी और तरफ प्रस्थान कर जायें। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि इस रहस्योद्घाटन को साधारण मनुष्य अति कठिन्ता से ही स्वीकार कर सकेगा। डा० फ्रानिया के अनुसार "यही वह प्रमाण है जिसकी हमें वर्षों से प्रतीक्षा थी"। एक मील लंबे और दो हज़ार फुट ऊँचे पत्थर के चेहरे जिसे लगभग दो लाख वर्ष पूर्व इंसानी हाथों ने मंगल की सतह पर तराशा था, इस बात की गवाही देदी है कि पृथ्वी पर इंसान की उपस्थिति से पूर्व मंगल ग्रह पर अत्यंत उन्नतशील सभ्यता उपस्थित थी। लोगों को चाहिए कि इस घटना की तहक़ीक़ करें

चित्र 73A35 की पहाड़ी। एक अद्भुत चट्टान नुमा ''मीसा'' जो 25-30 मीटर तक एक रोटी नुमा गढ़े (जिसका अस्तित्व सतह की बर्फ पिघलने और धरती फटने से निकलने वाले तत्वों से हुआ) से बुलंद होती है। होगलैंड कहते हैं कि पहाड़ी और चेहरा न केवल ऊँचाई में बराबर हैं बल्कि कोण और स्थान की दृष्टि से भी उनमें अनुपात पाया जाता है। इस पहाड़ी की बनावट और ढॉंचे से यह प्रमाण मिलता है कि पहाड़ी और पहाड़ी की नींव में उपस्थित गढ़े में स्पष्ट अंतर है। और यह कि यह पहाड़ी ''क्रैटिंग इम्पैक्ट'' के बहुत बाद बनी। इस मनोरंजक कल्पनाओं के पक्षधर कहते हैं कि यदि यह पहाड़ी पहले बनी होती तो निकलने वाला तत्व टीले के पूर्व दिशा में एकत्र होता और उस तत्व की सीमा पर छींटों की तरह के निशान होते और पहाड़ी की दूसरी ओर धमाका नुमा प्रतिबिंब बनता लेकिन गढ़े से संलग्न धरती एक मिट्टी के ढेर की सूरत में होने के बजाये यह अनुभूत होता है कि नीचे से खोखली और खाली हो। जो कि प्राकृतिक रूप से बनने वाले टीले से बिलकुल भिन्न है इन कारणों ने और इस बात ने कि पहाड़ी और गढ़े के मध्य उपस्थित धरती का ऐसे नज़र आना जैसे उसपर हल चला हो या उसे खोदा गया हो, इस दृष्टिकोण को हवा दी कि पहाड़ी के निर्माण के लिये मिट्टी एकत्र की गई थी।

The "Cliff" from 35A72. A peculiar, clifflike mesa that rises 25-30 meters above a pancake like "crater pedestal" (the surrounding ejecta blanket formed when the Martian permafrost was melted and ejected by the original cratering impact). Hoagland has demonstrated that the Cliff participates with the Face in solstice alignments and in several other angular and positional relationships. The Cliff's overall shape, surface texture and internal appears to differ markedly from that of the surrounding crater ejecta, which suggest that its formation post-dates the intence cratering impact. Supporters of the intelligence hypothesis theorize that if the object had pre-dated the impact ejecta material would have piled up on the east side of the Cliff, displaying peripheral splash patterns and formed a "blast shadow" on the opposite side. However, the adjacent terrain on the crater side, rather than being piled-up appears instead to have been hollowed-out the opposite result to the expected from natural forces. This and the striated or "plowed field" effect between the Cliff and the crater, have fueled speculations about the quarring of material for the Cliff's construction.

There appears to be a continious groove or path orignating in the hollowed-out area that rises ramp-like to the northeast end of the Cliff, turns and proceeds southward, then makes a final hairpin turn and terminates at the northwest end. This groove defines the elongated "nose" of what appears to be another set of facial characteristics. These are made more obvious here by artificial foreshortening that stimulates a view from the south at angle of about 70° from nadir.

27

सत्पुरूष ह० गोहर शाही और ईसा, दिये गये चित्र में आमने सामने

दिया गया मैटर अख़बार पाकिस्तान पोस्ट न्यूयार्क दिनांक 14/06/2001 से लिया गया खण्ड है। यह मैटर 29/06/2001 को नवा-ए-वक़्त इंग्लैंड में भी छपा था।

मंगलग्रह के अतिरिक्त भी नेबुला स्टार और चंद्रमॉं और अन्य स्थानों पर **सत्पुरूष गोहर शाही** की तस्वीरें आ चुकी हैं। देखिये वेबसाइटः www.goharshahi.com

प्रायः लोग पूछते हैं क्या यह हक़ीक़त है? यदि हक़ीक़त नहीं है फिर हम बहुत बड़े झूटे हैं (झूटों पर लानत)

* मंगल ग्रह और अन्य ग्रहों पर तस्वीर (प्रतिबिंब) का रहस्य *

ईशु मसीह (ह० ईसा) का अस्तित्व किसी परिचय का मुहताज नहीं क्योंकि वह ईश्वर के अति निकट हैं। उनकी तस्वीरें कई ग्रहों और कई स्थानों पर प्रकट हो रही हैं। वर्तमान काल के बहुत से लोग उनसे मुलाक़ात का श्रेय प्राप्त कर चुके हैं। जबकि दूसरी ओर गोहर शाही जो धरती पर उपस्थित हैं उनका कोई एक ठिकाना नहीं, पूरी दुनिया में घूमते रहते हैं। मंगलग्रह के अतिरिक्त अन्य ग्रहों में भी उनकी तस्वीरें देखी जा सकती हैं। और इंटरनेट (www.goharshahi.com) पर उनकी पुस्तकें पढ़ी जा सकतीं हैं। उनका संबंध पाकिस्तान से है। वह सूफ़ी मत से संबंध रखते हैं। परमपूज्य ह० गोहर शाही फ़रमाते हैं कि मैं अवतार नहीं हूं लेकिन मुझे मुहम्मद स० और ईसा और दूसरे अवतारों का सहयोग प्राप्त है। वह कहते हैं "यदि किसी का धर्म है परंतु उसके हृदय में ईश्वरप्रेम नहीं है, उससे वह श्रेष्ठ हैं जिनका कोई धर्म नहीं परंतु ईश्वरप्रेम है"।

मुस्लिम उलमा उनको कहते हैं कि तुम कहो कि मुसल्मान सबसे अच्छे हैं। परंतु वह कहते हैं "सबसे अच्छा वह है जिसके हृदय में ईश्वरप्रेम है चाहे वह किसी भी धर्म से हो"। मुस्लिम उलमा कहते हैं कलिमा-ए-मुहम्मदी पढ़े बिना कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता। वह कहते हैं इस शरीर को इधर ही रहना है, आत्माओं को स्वर्ग में जाना है। चमकती हुई आत्माएँ स्वर्ग में जाकर ही धर्ममंत्र (कलिमा) पढ़ लेंगी। वह कहते हैं कलिमे का मतलब किसी भी अवतार के कलिमे से अभिप्राय है। मुसलमानों का एक फ़िर्क़ा कहता है कि यह आध्यात्मवाद् और दिल की शिक्षा सब गुमराह (बातिल) है। परंतु वह कहते हैं कि हृदय की पवित्रता के बिना सबकुछ बातिल, व्यर्थ और छिलके जैसा है। मुस्लिम अक़ीदे में एक बार जन्म होता है। परंतु सत्पुरूष गोहर शाही ने पुस्तक दीन-ए-इलाही में लिखा है कि जीवात्मा (अरज़ी अरवाह) का जन्म कई बार होता है जबकि मात्र आकाशीय आत्मा का जन्म एक बार होता है। उनकी इन्हीं शिक्षाओं के कारण बहुत से मुसल्मान उनके शत्रु हो गये हैं इन ही आधार पर पाकिस्तान सरकार ने पुस्तक दीन-ए-इलाही पर पाबंदी लगा दी है। उन्हें कई बार बम के हमलों से उड़ाने की कोशिश की गई। मुस्लिम की कई संस्थाओं ने लाखों रूपये उनके सिर की कीमत रखी हुई है जबकि पाकिस्तान सरकार ने उन्हें धर्म अपमान के केस में लिप्त किया हुआ है। वह किसी धर्म का प्रचार नहीं करते बल्कि ईश्वरप्रेम और इश्क़ को दिलों में उतारने का तरीक़ा सिखाते हैं। वह कहते हैं कि जब तुम्हारा संबंध ईश्वर से जुड़ जायेगा तो वह स्वयं ही तुम्हें सत्यमार्ग (हिदायत) का पथ दिखायेगा। कई लोगों को अभ्यास के मध्य दिल पर अल्लाह लिखा नज़र आता है। वह कहते हैं जिस भाषा का भी शब्द ईश्वर (अल्लाह) की ओर इंगित करता है वह आदरणीय और लाभयोग्य है। हर धर्म के लोग उन्हें प्यार करते हैं बल्कि अमरीका, बर्तानिया, अफ्रीका, यूरोप, मध्यपूर्व और एशिया में कई चर्चों, गुरूद्वारों, मंदिरों और मस्जिदों में वह अभिभाषण (ख़िताब) कर चुके हैं। बहुत से बीमार लोग जिन्हें डाक्टरों ने असाध्य घोषित कर दिया था वह भी उनके दम के पानी से स्वस्थ हो चुके हैं। और वह इस ईश्वरप्रेम की शिक्षा को सर्वसाधारण करने और रोगियों के आध्यात्मिक चिकित्सा के लिये लंदन में आलफेथ स्प्रिच्युअल आर्गनाइज़ेशन के नाम से एक बहुत बड़ी संस्था मुफ़्त खोलने का प्लान कर चुके हैं जो इसी वर्ष विश्व व्यापी कार्य करना आरंभ कर देगा।

आपसे निवेदन है कि किसी भी धार्मिक, राष्ट्रीय और नस्लीय कट्टरपन के कारण ईश्वर की निशानियों को झुटलाने का साहस (जुरत) न करें।

संभवतः यह बंदा ईश्वर ने तुम्हारी शुद्धि और सहायता के लिये भेजा हो। उसे ढूँढें और व्यक्तिगत रूप से इसकी रिसर्च करें। यदि कोई गिरोह या संस्था इनके संबंध में जानकारी चाहता है तो हमसे संपर्क करें, हम न्याय पूर्वक संपूर्ण जानकारी मुफ़्त उपलब्ध करेंगे। यदि संभव हुआ तो उनसे मुलाक़ात की भी व्यवस्था करा देंगे। हमारी संस्था 7 वर्षों से बर्तानिया में उन शिक्षाओं को दुनिया के चप्पे-चप्पे में फैलाने का प्रयत्न कर रही है। जबकि संस्था आलफेथ स्प्रिच्युअल आर्गनाइज़ेशन आयरलैंड, सूफ़ी मोमेन्ट अमरीका और अंजुमन सरफ़रोशान-ए-इस्लाम पाकिस्तन (रजि०) भी हमसे संबद्ध हो चुके हैं।

* रैग्ज़ इंटर नेश्नल *

नासा ने बड़ी मुश्किल से, और कई राजनैतिकों के दबाव (इसरार) पर बड़े समय बाद मंगल ग्रह पर प्रतिबिंब को स्वीकारा है जबकि दूसरे ग्रहों के प्रतिबिंबों को छुपाये हुए है। अब इसी प्रकार अनुरूपता की पुष्टि के लिये बहानेबाज़ी कर रहा है।

Click here: Disturbing Controversies like the Cydonia region of Mars.
www.creation-science-prophecy.com/links.html

E-mail:
younus38@hotmail.com
amjadgohar75@yahoo.com

Contact:
+971(0)505922671 (UAE)
India: 9870188929

यह तस्वीरें मार्क जे० कार्लोटो की पुस्तक मार्शियन इनिग्माज़ से ली गईं हैं।

यह तस्वीरें प्रकाश और अंधकार में अनुपात के पाँच विभिन्न कक्षायें दिखाती हैं। यहाँ उपस्थित सर्वाधिक अनुपात रखने वाली तस्वीर की अनुरूपता नासा की उस तस्वीर 72A35 से है जो वाई किंग ने भेजी थी।

These pictures were taken from the book "Martian Enigmas" by Mark J. Carlotto

These prints illustrate five grades of contrast. The highest contrast represented here approximates that of NASA's print of Viking frame 35A72 in which the face orignally appeared.

चंद्रमॉ और शिवलिंग (हज्र अस्वद) में सत्पुरूष सैयदना रियाज़ अहमद गोहर शाही मद० की तस्वीर का रहस्योद्घाटन

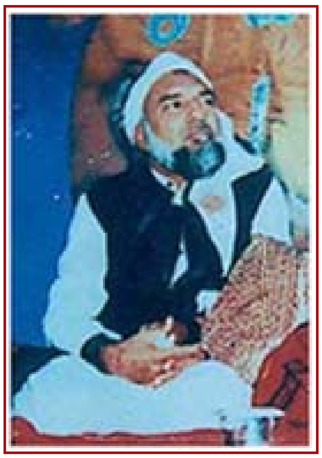

ग्वर्नमेन्ट आफ पाकिस्तान से

महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व सत्पुरूष सैयदना रियाज़ अहमद गोहर शाही मद० संस्थापक एवं निरीक्षक विश्व व्यापी आध्यात्मिक आन्दोलन अंजुमन सरफ़रोशान-ए-इस्लाम रजि० की

अपील

मैं पाकिस्तान सरकार और उसके कार्यकर्ताओं से अपील करता हूँ कि चॉंद और हज्र अस्वद पर तस्वीरों एवं प्रतिबिंबों से संबंधित पूरी तहक़ीक़ात करायें यदि यह सत्य सिद्ध हों तो मेरा पक्ष लेकर साथ दें ताकि पूरी दुनिया में ईश्वरप्रेम (अल्लाह की मुहब्बत) का प्रचार और समस्त धर्मों के दिलों को एक करने में सरलता हो और लोग भी एक दिशा का चयन कर सकें।

यदि ऊपर वर्णित घटनाऍं असत्य सिद्ध हों तो सरकार किसी भी दंड या प्रतिबंध की अधिकृत है।

स्वलेखनी स्वयं

रियाज़ अहमद गोहर शाही

उमरकोट के शिव मंदिर के पवित्र पत्थर पर गोहर शाही की तस्वीर
अगणित लोग श्रद्धा से इस प्रतिबिंब को देखने आ रहे हैं। दैनिक ''महरान'' हैद्राबाद

عمرکوٹ کے شومندر کے مقدس پتھر پر گوہر شاہی کی تصویر

لاتعداد لوگ عقیدت سے اس تصویر کو دیکھنے آرہے ہیں روزنامہ مہران حیدرآباد

हैद्राबाद (मुख्य पत्रकार), हैद्राबाद के प्रसिद्ध सिंधी दैनिक महरान ने अपनी 6 June 1998 के प्रकाशन में एक ख़बर प्रकाशित की जिसने रहस्योद्घाटन किया कि उमरकोट के निकट ''शिव मंदिर'' के पत्थर में सत्पुरूष ह० गोहर शाही की तस्वीर नज़र आ रही है। तस्वीर देखने के लिये आने वालों का ताँता लगा हुआ है। हिंदू श्रद्धा के लोग बहुत श्रद्धा और प्रेम से इस तस्वीर के दर्शन को जा रहे हैं। इस हवाले से यहाँ एक पंफ्लेट भी वितरित किया गया है। जिसके बाद ''शिव मंदिर'' लोगों के आकर्षण का केंद्र बन गया है। विशेषतः हिंदू बिरादरी में ह० रियाज़ अहमद गोहर शाही की तस्वीर नज़र आने पर अति प्रसन्नता प्रकट की जा रही है।

लंदन से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक ‘‘देश प्रदेश’’ में हिंदुओं की ओर से सद्‌गुरू गोहर शाही का परिचय

Amar Deep HINDI WEEKLY मूल्य 70 पैस 70 Pence

VOL. 28 No. 348. Wednesday 29.7.98 EST. 1971 ISSN 0264 1453

कल्युग के अवतार कल्गीदार आ चुके हैं।

Riaz Ahmed Gohar Shai

Given Hindi Text

کئی ہندوؤں کو خواب میں دم کرنے آنکھوں کی بینائی گونگوں کو گویائی حاصل ہوگئی

بھارت میں ہزاروں افراد گوہر شاہی کے روحانی فیض سے صحیتاب ہوگئے

ZEE T.V اور جالندھر T.V جلد گوہر شاہی کا انٹرویو نشر کریں گے انگلینڈ کے گلزار قادری

कई हिंदुओं को स्वप्न में दम करने ऑखों की रोशनी गूँगों को वाक्‌शक्ति प्राप्त हो गई

भारत में हज़ारों लोग सत्पुरूष गोहर शाही के आध्यात्मिक लाभ (फ़ैज़) से स्वस्थ हो गये

ZEE T.V और जालंधर T.V शीघ्र गोहर शाही का इंटरव्यू प्रसारित करेंगे इंग्लैंड के गुलज़ार क़ादरी

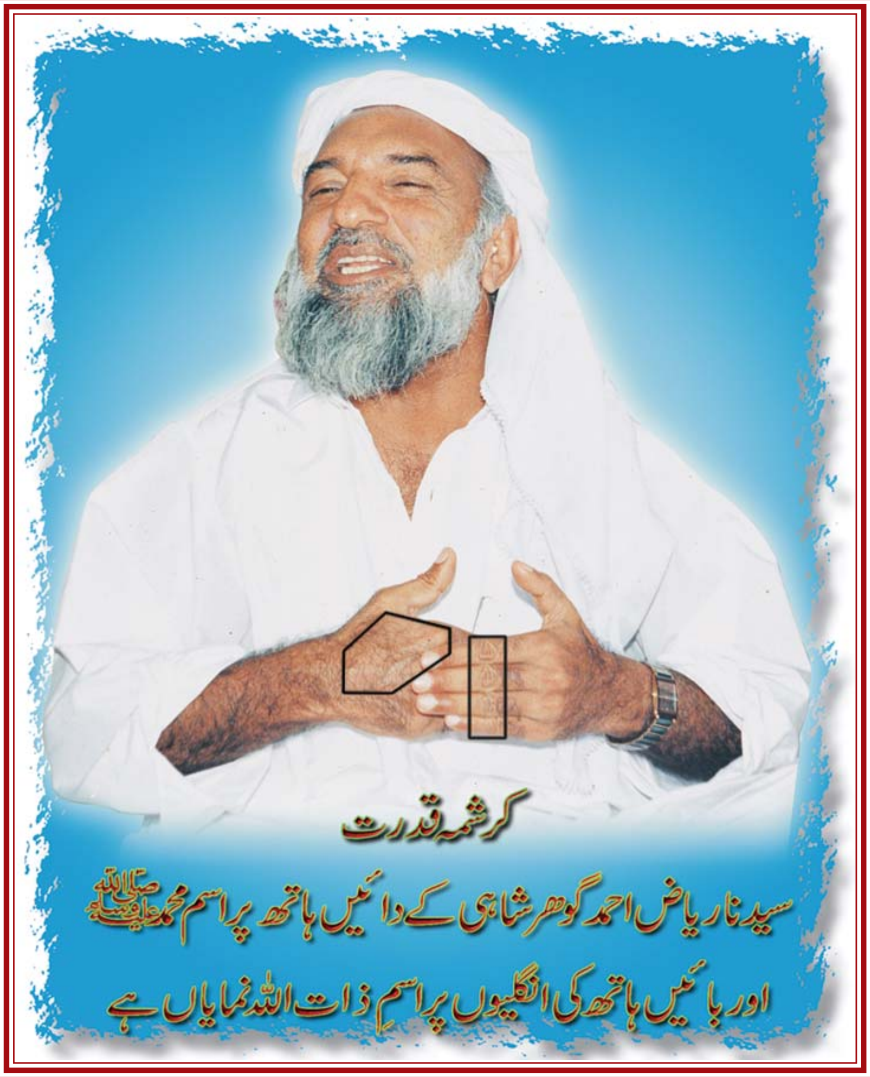

* ईश्वर का चमत्कार *

(करिश्मा–ए–कुदरत)

सत्पुरूष सै० ह० रियाज़ अहमद गोहर शाही

के दायें हाथ पर नाम ''मुहम्मद'' और बायें हाथ की उंगलियों पर नाम ''अल्लाह'' प्रकट है।

.....नोट.....

कुछ लोगों को आपत्ति है कि उलटे हाथ की उंगलियों पर नाम अल्लाह क्यों है ? यदि यह उंगलियाँ हमने बनाई हों या किसी भी प्रकार से हमने लिखवाया हो तो हम मुजरिम हैं, यह तो ईश्वर बेहतर जानता है कि यह संयोग (इत्तेफ़ाक़) है या कोई ईश्वर का चमत्कार!

* ईशु मसीह (ह० ईसा) का इस दुनिया में पुनः आगमन *

ईशु मसीह की सत्पुरूष रियाज़ अहमद गोहर शाही से अमरीका में

मुलाक़ात 28 जुलाई 1997 लंदन में दिये गये एक इंटरव्यू में सत्पुरूष गोहर शाही ने मुलाक़ात के भावनाओं को प्रकट किया

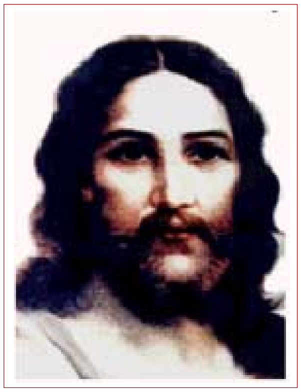

29 मई 1997 मैं एल माउंटे लाज ताऊस न्यू मेक्सिको अमरीका में ठहरा हुआ था। रात के दूसरे पहर मुझे अपने कमरे में किसी की उपस्थिति का अनुभव हुआ। कमरे में अपर्याप्त प्रकाश था। मुझे लगा कि मेरा कोई श्रद्धालु है जो बिना अनुमति कमरे में आ गया है। मैंने उस व्यक्ति से पूछा, क्यों आये हो? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया मैं आप से मिलने आया हूँ। मैंने उसी समय में कमरे की लाइट जला दी। मैंने देखा कि एक अति सुंदर नवयुवक मेरे सामने खड़ा है, जिसे मैं नहीं जानता था। उस व्यक्ति को देखकर मेरे अंदर की शक्तियॉं (लताइफ़) प्रसन्नता से झूम उठीं और ऐसी मत्तता (कैफ़ियत) उत्पन्न हो गई जैसी दिव्यलोक की सभाओं और अवतारों की उपस्थिति में होती है। मुझे अनुभव हुआ कि उस व्यक्ति को अनेकों भाषाओं पर पूर्ण ज्ञान प्राप्त है। उस नवयुवक ने मुझे बताया कि वह ईसा पुत्र मरियम है और इस समय अमरीका में है। मैंने उससे पूछा, तुम कहॉं रहते हो? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, न ही पहले मेरा कोई ठिकाना था और न ही अब है!

जब परमपूज्य, सद्‌गुरू सै० ह० रियाज़ अहमद गोहर शाही से मुलाक़ात के मध्य होने वाली और अन्य बातों की सविनय निवेदन की गई तो आपने फ़रमाया कि ईसा पुत्र मरियम और मेरे मध्य जो बातचीत हुई है वह अभी (फिलहाल) एक रहस्य है, परंतु निकट भविष्य में किसी उचित समय पर मैं उस रहस्य को खोलूंगा। सत्पुरूष गोहर शाही ने आगे फ़रमाया कि मैं कुछ दिनों बाद टूसान एरीज़ोना (अमरीकी राज्य) जाने का संयोग हुआ। यहॉं किसी ने मुझे एक तस्वीर दिखाई और कहा कि यह ईसा पुत्र मरियम हैं। मैंने तुरंत ही तस्वीर वाले नवयुवक को पहचान लिया। क्यों कि यह तस्वीर उसी नवयुवक की थी जो मेरे कमरे में ताऊस में आया था। मैंने तस्वीर के मालिक से उस तस्वीर की वृतांत पूछी। उसने मुझे बताया कि कुछ पवित्र स्थानों के दर्शन के लिये गये थे जहॉं उन्होंने तस्वीरें उतारीं। जब कैमरे की फिल्म develop की गई तो आश्चर्य जनक रूप से इस नवयुवक की तस्वीर आ गई हालॉंकि किसी ने भी इस नवयुवक को वहॉं नहीं देखा और न ही इसकी तस्वीर खींची। बहरहाल मैंने उस नवयुवक अर्थात- ईसा पुत्र मरियम की तस्वीर ले ली और चंद्रमॉं में प्रकट होने वाली कई तस्वीरों से उसको मिलाकर देखा। चंद्रमॉं में प्रकट होने वाली तस्वीरों में से एक तस्वीर उससे अनुरूपता रखती थी। मुझे यक़ीन हो गया और इस प्रकार मैंने पुष्टि कर दी कि यह ईसा पुत्र मरियम की वास्तविक तस्वीर है।

निकट समय ही में अमरीका में एक पत्रिका ने बाइबल के विद्वानों के उदाहरणों (हवालों) से ईसा पुत्र मरियम (ईशु मसीह) की दोबारा वापसी और निकट प्रलय में होने वाली घटनाओं से संबंधित लेख प्रकाशित किया। उस लेख में अनेकों बातों का वर्णन था। विशेष रूप से बाइबल से संबंधित रहस्य और भविष्यवाणियॉं थीं जिसको वेटीकिन (रोम इटली) ने जारी किया था। बाइबल के विद्वानों की यह भविष्य वाणियॉं सत्पुरूष ह० रियाज़ अहमद गोहर शाही की ईसा पुत्र मरियम की पुनः आगमन की घोषणा से मिलती जुलती हैं।

मित्रों ! ईश्वर ने इसी समय के लिये कहा था :

“हम तुम्हें अतिनिकट दिखायेंगे अपनी निशानियाँ धरती एवं
आकाश पर, यहाँ तक कि तुम्हारे अस्तित्व में भी”।

* गोहर शाही का उपदेश *

समस्त मनुष्यों की जीवात्मा (अरज़ी अरवाह) इस दुनिया में कई बार दूसरे शरीरों में जन्म लेती हैं। पवित्र लागों की आत्माएँ पवित्र शरीरों में, जबकि मुहम्मद स० की जीवात्मा को मेहदी अलै० (कालकी अवतार “मसीहा”) के लिये रोका हुआ था, जिस प्रकार मुहम्मद स० के शरीर के किसी भी अलग भाग, अर्थात- हाथ या पैर को भी आमिना का लाल कह सकते हैं, उसी प्रकार मुहम्मद स० के आकाशीय आत्मा के किसी अलग भाग को भी अब्दुल्लाह का पुत्र और आमिना का लाल कहा जा सकता है। अहल-ए-बैत की आत्माएँ भी अहल-ए-बैत में ही सम्मिलित हैं।

* एक महत्वपूर्ण बिंदु *

माहदी (Mahdi), का अर्थ........हिदायत वाला (सत्य मार्गदर्शक)

मेहदी (Mehdi), का अर्थ........चंद्रमाँ वाला

(जैसे : मेहनाज़ और मेहताब)

मु० यूनुस अलगोहर...लंदन, इंग्लैण्ड। (younus38@hotmail.com)

सद्गुरू गोहर शाही ने 1980 से उपदेश एवं शिक्षा देने का कार्य आरंभ किया। आपका संदेश ''ईश्वरप्रेम'' (अल्लाह की मुहब्बत) को बहुत ख्याति प्राप्त हुई। हर धर्म के लोग आपसे श्रद्धा और प्रेम करने लगे और अपनी-अपनी इबादतगाहों में गोहर शाही को अभिभाषणों के लिये निमंत्रण देकर नामदान (हृदयभजन) प्राप्त करने लगे। यह एक बहुत बड़ा चमत्कार (करामत) है जिसका इतिहास में सदृश (नज़ीर) नहीं मिलता कि

* गोहर शाही *

हर धर्म की इबादतगाह के स्टेज, मिंबर पर पहुँच जाते हैं,
यूँ तो अगणित करामतें और प्रोग्राम हैं लेकिन कुछ चुने हुए आपकी सांत्वना के लिये प्रस्तुत किये जा रहे हैं,

मुलाहिज़ा हों....

न्यूयार्क में क्रिश्चन कम्युनिटी के आमंत्रण पर दिनांक 2 अक्तूबर 1999 को सत्पुरूष गोहर शाही को होटल (न्युयार्कर) में आध्यात्मिक लेक्चर के लिये आमंत्रित किया गया

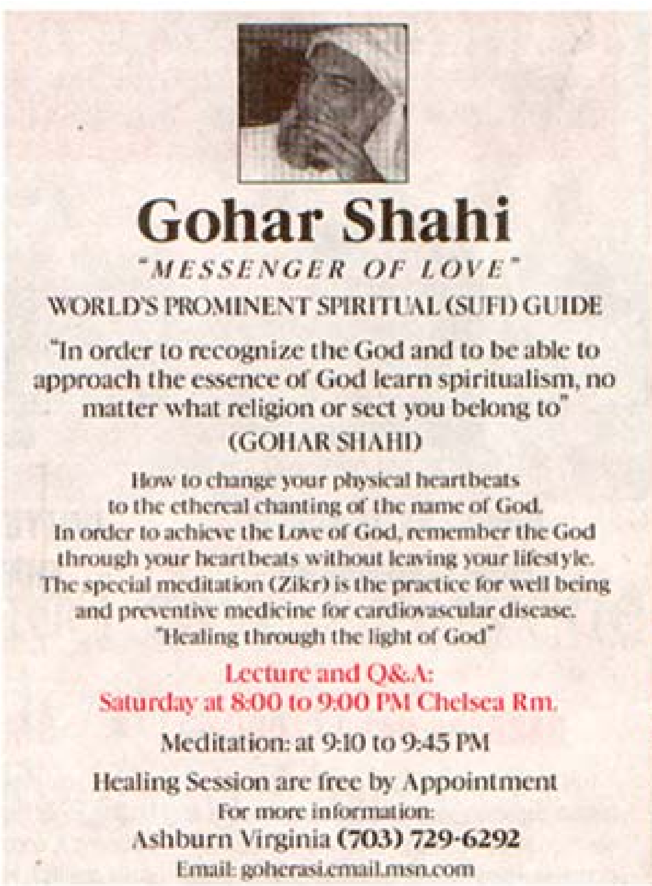

Gohar Shahi

"MESSENGER OF LOVE"

WORLD'S PROMINENT SPIRITUAL (SUFI) GUIDE

"In order to recognize the God and to be able to approach the essence of God learn spiritualism, no matter what religion or sect you belong to"

(GOHAR SHAHI)

How to change your physical heartbeats to the ethereal chanting of the name of God. In order to achieve the Love of God, remember the God through your heartbeats without leaving your lifestyle. The special meditation (Zikr) is the practice for well being and preventive medicine for cardiovascular disease. "Healing through the light of God"

Lecture and Q&A:
Saturday at 8:00 to 9:00 PM Chelsea Rm.

Meditation: at 9:10 to 9:45 PM

Healing Session are free by Appointment

For more information:
Ashburn Virginia (703) 729-6292
Email: goherasi.email.msn.com

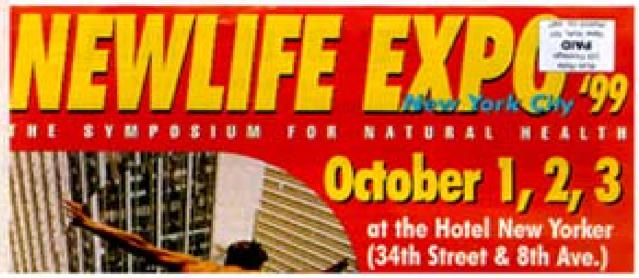

अमरीकी राज्य एरीज़ोना के शहर टूसान के केंद्रीय चर्च
(GRACE ST. PAUL'S EPISCOPAL CHURCH)
में सत्पुरूष गोहर शाही ईसाइयों से अभिभाषण (ख़िताब) कर रहे हैं

नीचे की तस्वीर, 11 अप्रेल 1996 के भव्य आध्यात्मिक संगोष्ठी मोचीगेट लाहोर की है जिसमें अधिक्तर हनफ़ी और शाफ़ई मुस्लिम व्यक्ति उपस्थित हैं।

अमरीका में सद्‌गुरू गोहर शाही यूनीट्रियन यूनीवर्सलिस्ट फेलोशिप प्रिस्काट, एरीज़ोना, यू० एस० ए०

July 1997, Unitarian Universal Fellowship, Prescott, Arizona, USA

साउथ अफ्रीका के शहर डर्बन में साईं बाबा (SAI BABA) के श्रद्धालुओं और अग्निपूजक हिंदुओं के मंदिर में सद्गुरू गोहर शाही का धर्मोपदेश।

नूर–ए–ईमान, इमाम बारगाह नाज़िमाबाद क्राची में शीया वर्ग से ह० गोहर शाही का ख़िताब

सद्गुरू गोहर शाही सिखों के झुर्मुट में

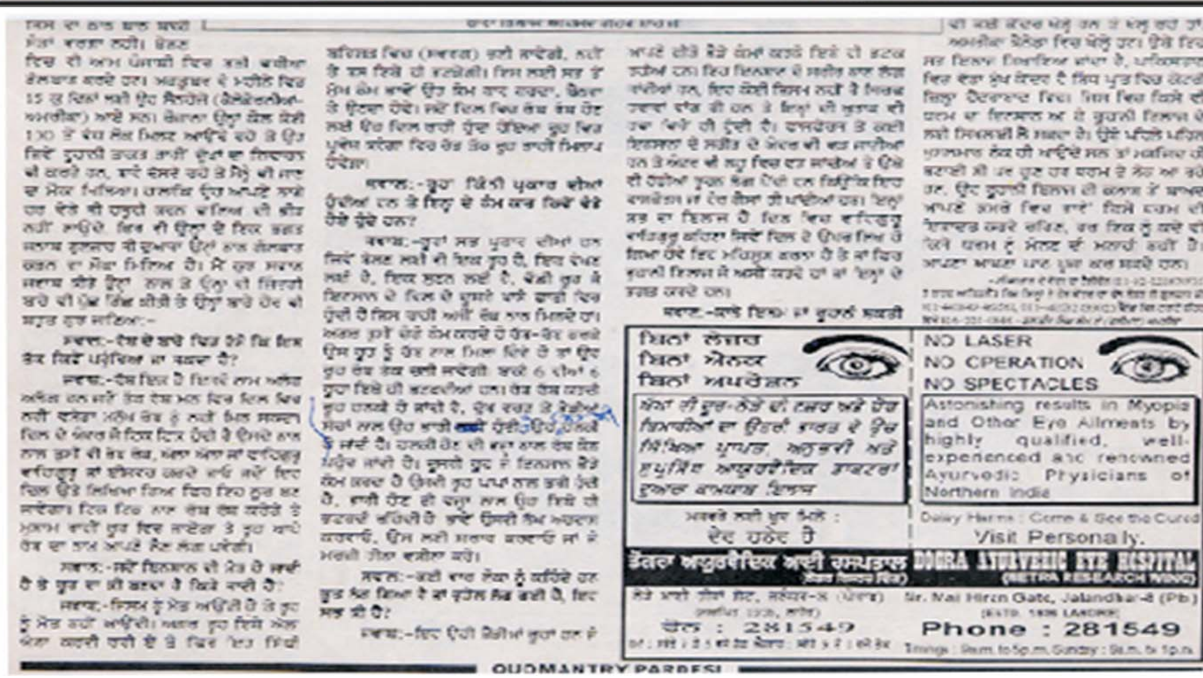

NO LASER
NO OPERATION
NO SPECTACLES

Astonishing results in Myopia and Other Eye Ailments by highly qualified, well-experienced and renowned Ayurvedic Physicians of Northern India

Visit Personally.

DOGRA AYURVEDIC EYE HOSPITAL

Sr. Mai Hiran Gate, Jalandhar-4 (Pb)

Phone : 281549

QUDMANTRY PARDESI

अमरीकी स्टेट एरीज़ोना के शहर फ़ेंक्स में गुरू नानक गुरूद्वारा आश्रम में सद्गुरू गोहर शाही सिखों को नामदान दे रहे हैं

सान्फ्रानसिस्को में सिखों की सोसाइटी ने दि० 7 अक्तूबर 1999 को सद्गुरू गोहर शाही को ईश्वरप्रेम, के विषय पर धर्मोपदेश (ख़िताब) के लिये आमंत्रित किया और उनकी इस पत्रिका ने परमपूज्य गोहर शाही के आध्यात्मिक लाभ और शिक्षा के बारे में सिक्खों के लिये लेख छापा कि ईश्वर को पाने के लिये यह सच्चा और सरल मार्ग है, इसे अपनाने की कोशिश की जाये।

.... नीचे पत्रिका का प्रतिच्छाया ....

December '99

ਦਿਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਰੱਬ ਨੂੰ ਮਿਲਾਉਣ ਵਾਲਾ-ਬਾਬਾ ਗੌਹਰ ਸ਼ਾਹ ਜੀ!

HAZRAT SAYEDNA RIAZ AHMED GOHAR SHAHI
FOUNDER OF A·S·I

...... कोमंत्री प्रदेशी .....

पंजाबी भाषा गुरूमुखी के समाचार पत्र में सद्गुरू गोहर शाही से किये गये इंटरव्यू का एक प्रतिच्छाया

सत्पुरूष ह० रियाज़ अहमद गोहर शाही के इस्मज़ात कांफ्रेन्स से अभिभाषण की एक झलक

7 अक्तूबर 1996 में आयोजित होने वाली इस्मज़ात कांफ्रेन्स की एक तस्वीर जिसमें विभिन्न संगठनों के लोगों ने भाग लिया

न्यूयार्क में ब्रूक्लीन की जामा मस्जिद तुर्क में हंबली और मालिकी मुस्लिम व्यक्तियों से सत्पुरूष गोहर शाही ख़िताब फ़रमा रहे हैं

''नोट''

सद्गुरू गोहर शाही के शायराना कलाम पर आधारित पद्यात्मक रचना ''तर्याक़-ए-क़ल्ब'' से कुछ विशेष कवितायें मुलाहिज़ा कीजिए। यह कुछ अल्हामी और कुछ इश्क़िया कलाम आपने कठिनतम् तपस्या काल (दौराने रियाज़त एवं मुजाहिदा) में लिखे-

''तर्याक़-ए-क़ल्ब''

कहाँ तेरी सनाअ् कहाँ यह गुनाहगार बन्दा
कहाँ लाहूत व ला मकाँ, कहाँ यह ऐबदार बन्दा
नूर सरापा है तू , मगर यह नुक़्सदार बन्दा
कितनी जुर्अत बन गया तेरे इश्क़ का दावेदार बन्दा
मगर इश्क़ तेरा दिन रात सताये, फिर मैं क्या करूँ
इश्क़ तेरा दश्त व जबल में रूलाये फिर मैं क्या करूँ
पाक है ज़ात तेरी, मगर यह बे अश्नान बन्दा
बादशाह है तू ज़माने का, मगर यह बे निशान बन्दा
मालिक है तू ख़ज़ाने का, मगर यह बे सरोसामान बन्दा
जतलाये फिर भी इश्क़ तुझसे यह अंजान बन्दा

नहीं हूँ सवाली, फ़क़ीरी मेरा धंदा नहीं है
दुनिया वालों ! इश्क़ खुदा है, इश्क़ बन्दा नहीं है
अर्सा से हूँ आवारा मैं, कोई अन्धा नहीं है
इश्क़ है यह अबदी, आहू या परिंदा नहीं है
पड़े हैं टीलों पे, यह बे आब व ग्याही
तअ़ज्जुब है क्या, यही है क़ाइदा-ए-फ़क़्राई
नींद गई लुक़्मा भी गया, यही है रज़ा-ए-इलाही
पड़े हैं मस्ती में नज़रें जमाए हुए गोहर शाही

आ गये किधर हम यह तो सख़ी शहबाज़ की चिल्लागाह है
वाह रे ख़ुश नसीबी, यह हमारी भी इबादतगाह है
वह तो कर गये परवाज़, अब हमारी इन्तेज़ारगाह है
इस भटके हुए मुसाफ़िर पर उनकी भी निगाह है
शहबाज़ की महफ़िल में जाकर भी याद तेरी सताए फिर मैं क्या करूँ
इश्क़ तेरा दश्त व जबल में रूलाये फिर मैं क्या करूँ !

हो गये क़ैदी हम जबलों के एक दिलदार की ख़ातिर
पी रहे हैं ख़ून-ए-जिगर, अन्देखे दरबार की ख़ातिर
सूली पर लटके गये, इश्क़ की तार की ख़ातिर
जान भी न निकले एक तेरे दीदार की ख़ातिर

पहन कर चोग़े व कलावे फ़कीर बन गये तो क्या
पढ़ कर किताबें तसव्वुफ़ की, पीर बन गये तो क्या
कर के याद हदीस, फ़िक़ा, मुल्ला बे तक़दीर बन गये तो क्या
अमल न किया कुछ भी फ़िरऔन बे तक़सीर बन गये तो क्या

रख के दाढ़ी ऐब छुपाया तो क्या मज़ा
रगड़ कर माथा, मुल्ला कहलाया तो क्या मज़ा
खा के ज़हर गर पछताया तो क्या मज़ा
लुटा के जवानी ख़ुदा याद आया तो क्या मज़ा

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम फिर तुझे और तमन्ना क्या
तब ही पूछेगा ख़ुदा ऐ बन्दे तेरी रज़ा क्या
ऐ बन्दे समझ, क्यों हुआ दुनिया में ज़हूर तेरा !
तू वह अज़ीमतर है, ख़ुदा भी हुआ मज़कूर तेरा
अ़श-अ़श करते करों बयाँ, देखते जब शिकस्ता सदूर तेरा
फ़ख़र होता है अल्लाह को, बनता है जब जिस्म सरापा नूर तेरा
कहते हैं फिर अल्लाह, ऐ मलाइकों मेरे बन्दे की शान देखो
हुआ था जिसपे इन्कार-ए-सिजदा, अब उसका ईमान देखो
जुंबिश पे है जिसका दिल, एक सिरा इधर एक ला मकाँ देखो
नाज़ है तुमको भी इबादत का, मगर इबादत क़ल्ब-ए-इंसान देखो

बनाया फिर बसेरा पहाड़ों में और तलाश-ए-यार हुए
बहुत ही मग़लूब थे हम, जो आज शिकन-ए-हिसार हुए
कर ले जब भी तौबा, वह मंज़ूर होती है
बंदा बशर है, जिससे ग़लती ज़रूर होती है
कहते हैं मूसा, अल्लाह को वही इबादत महबूब होती है
जिसमें गुनाहगारों की गिरयाज़ारी खूब होती है
कुफ़्लों वाले करेंगे कैसे यक़ीन हम पर
कि हो चुका है इतना मेहरबान, रब्बुल आलमीन हम पर
खोल चुका है असरार हूर व नाज़नीन हम पर
कि बस रहा है जुस्सा-ए-तौफ़ीक़-ए-इलाही ज़मीन हम पर

यह राज़ छुपाकर करेंगे क्या, अब तो दुनिया फ़ानी है
इन्तेज़ार था जिस क़यामत का, अनक़रीब आनी है
दज्जाल व रज्जाल पैदा हो चुके, यह भी एक निशानी है
ज़ाहिर होने वाला है मेहदी भी, यही राज़-ए-सुलतानी है

नमाज़ भी पढ़ा दी मौलाना ने, कुरान पढ़ना भी सिखा दिया
कलिमे भी पढ़ाये, हदीसें भी, बहुत कुछ मग़्ज़ में बैठा दिया
बता न सका दिल का रास्ता, बाक़ी सब कुछ पढ़ा दिया
यही एक ख़ामी थी, इब्लीस ने सब कुछ जला दिया

पूछा मूसा ने अल्लाह से, तुझे कोई पाये तो पाये कहाँ
मैं आता हूँ कोह-ए-तूर पर, वह जाये तो जाये कहाँ
गर हो कोई मश्रिक़ में पैदा, तो वह तूर बनाये कहाँ
आई आवाज़, हूँ ज़ाकिर के क़ल्ब में, ज़मीं पे हो या आस्माँ

मिला था क़तरा नूर का, करके तरक़्क़ी लहर बन गया
आई तुग़यानी, टकराया बह्र से और बह्र बन गया
न रही तमीज़ मन व तन की, दिल था दहर बन गया
बस गया इल्म इसपे इतना कि एक शहर बन गया
इस नुक़्ते की तलाश में कितने सिकंदर उमरें गवाँ बैठे
खुश नसीबी में तेरी शक क्या, घर बैठे ही यह राज़ पा बैठे

सूरज चढ़ा तो निकला पेट के जंजाल में
घर आया तो फँसा बीवी के जाल में
सोया तो वह भी बच्चों के ख़्याल में
उमर यूँ ही पहँच गई सत्तर साल में
हुआ जब काम से निकम्मा, लिया दीन का आसरा
अब कहाँ है ख़रीदार, बैठा जो हुस्न लुटा
बेशक कर नाज़ नख़रे और ज़ुलफ़ों को सजा
वक़्त था जो तेरा, वह तू बैठा गँवा
करके ज़िक्र चार दिन, बन गया ज़नजहानी है
धोका है तेरी अ़क़्ल का जो हो गई पुरानी है
अब कुछ तवक़्क़ो अल्लाह से, यह तेरी नादानी है
क़ाबिल तू नहीं, गर बख़्श दे उसकी मेहरबानी है
डूबने लगा फ़िरौन, वह भी ईमान ले आया था
करके दावा ख़ुदाई वह भी पछताया था
कर ली तौबा आख़िर में, वह वक़्त हाथ न आया था
जिस वक़्त का कुदरत ने बन्दे से वादा फ़रमाया था

यह तो वह अ़मल है आ़सियों को भी मुजीब मिल जाते हैं
होते हैं जो बे नसीब, उन्हें भी नसीब मिल जाते हैं
नहीं है फ़र्क़ ख़्वान्दः नाख़्वांदगी का कि ख़तीब मिल जाते हैं
ढूँढती है दुनिया जिनको सितारों में क़रीब मिल जाते हैं
पारस भी इसी में, कीमिया भी इसी में
वफ़ा भी, हया भी, शिफ़ा भी इसी में
रज़ा भी, बक़ा भी, लिक़ा भी इसी में
ख़ुदा की क़सम ! ज़ात–ए–ख़ुदा भी इसी में

पड़ा है बुत इधर, लटकी हुई है जान उधर
दे रहे हैं सिजदे इधर, वहम व गुमान उधर
लिखते हैं स्याही से, पड़ता है लहू का निशान उधर
बूद बाश इस जंगल में, ज़िंदगी का सामान उधर
टपके आँखों से आँसू दो-चार, बन गये दुर्रे ताबाँ उधर
फड़का जब दिल कबूतर की तरह, हो गये फ़रिश्ते हैरान उधर
आ गये रश्क में, काश हम भी होते इंसान उधर
यह तो वही ख़स्ताहाल था, जो हो गया सीना तान उधर
कहा बुत को कि चल इस दुनिया से, कि बन गया मकान उधर
यह तो एक धोका था, पड़ा है जो बे सरोसामान उधर

न कर शुब्हा, चोर भी अवताद व अख़ियार बन बैठे
आये पारस के हाथों, खुद ही सरकार बन बैठे
मारा नफ़्स को और हक़ के ख़रीदार बन बैठे
हक़ ने लिया गर, सूखे काँटे भी गुलज़ार बन बैठ

इस ज़िंदगी से गये पाया जब सुराग़-ए-ज़िंदगी
पाया फिर वसीला-ए-ज़फ़र, मिटाया जब दाग़-ए-ज़िंदगी
निकले फिर दुनिया के अंधेरे से, जलाया जब चिराग़-ए-ज़िंदगी
धोया आँसुओं से क़ल्ब को, बसाया जब बाग़-ए-ज़िंदगी
निकला उस चमन से तायेर लाहूती, और क्या नब्बाज़-ए-ज़िंदगी
हुए जब क़बर व घर यक्साँ, और क्या फ़ैयाज़-ए-ज़िंदगी
ज़िंदगी में ही देखा यौम-ए-महशर, और क्या बयाज़-ए-ज़िंदगी
पी बैठे ख़ून-ए-जिगर, ख़ातिर-ए-मौला, और क्या रियाज़-ए-ज़िंदगी

रखा तूने अर्सा तक, इस नेअ़मत से महरूम क्यों ?
नफ़्स हम से शाकी, जब यह नुक़्ता अदबिस्तान से पकड़ा
हो गये पाक सब जुस्से जलके, बुत के सिवा
रूठा बुत जो जलने से, उसको क़ब्रिस्तान से पकड़ा
अब आने लगी आवाज़ हर रग से अल्लाहू की
यह सकून हमने कुछ ज़मीन से कुछ आसमान से पकड़ा
क्या बताऊँ तुझे कि दिल की ज़िंदगी है क्या ?
डाल कर कमन्द हमने, इसको कहकशॉं से पकड़ा
बन बैठे आज हम भी तालिब-ए-मौला लेकिन
सुलझे थे, जब यह रास्ता एक इंसान से पकड़ा
हिदायत है इंसान को इंसान से ही ऐ कोर चश्म !
वसीला इंसान ने इंसान से, शैतान ने शैतान से पकड़ा

सोचा था एक दिन हमने, यह वजह-ए-तनज़्ज़ुल क्या है?
रहते हैं सरगरदॉं हरदम, यह ज़िंदगी बे मंज़िल क्या है?
कौन सी ख़ामी है वह, रहते हैं परेशान हरदम?
सुधर जाये जिससे दीन व दुनिया, वह अ़मल क्या है?
झॉंका जो गिरेबान को नज़र आईं हज़ारों ख़ामियॉं
रोये बहुत आया जो समझ में, मक़सद असल क्या है?
निकले फिर ढूँढने रहनुमा को इस अंधेर में
भटकते रहे बरसों, समझ न थी पीर अक्मल क्या है?

कर बैठा इश्क़ एक बे परवाह से अंजान यह
तड़पता रहेगा भट्टी में बरसों यह ख़ाक़ान-ए-दिल
आ जाये बाज़ ज़िद से नहीं है मुम्किन ऐ रियाज़
दे चुका है तहरीर समेत गवाहॉं यह जलालान-ए-दिल

जिस हाल पे रखे तू , उसी पे हैं शादॉ हम
दिखता रहे फ़क़त नाम तेरा, हुए जिसपे कुर्बान हम
रूल के इस मिट्टी में होगा न ज़ुबॉं को शिकवा तेरा
हो गये नाम लेवाओं में तेरे, इसी पे नाज़ॉं हम
न कर शुब्हा ऐ आस्मान इन गेसुओं पर हमारे
तमन्ना नहीं कुछ, उसी के दीदार को गिरयॉं हम
खा न ग़म तू , देख के ख़ून-ए-जिगर को हमारे
यही पियाला है, बैठे हैं देने को जिसे तरसॉं हम
क़सम है तुझे शहबाज़ क़लंदर की ऐ लाल बाग़
गवाह रहना, बैठे हैं अर्से से बे गोर व कफ़ॉ हम
रिस चुका होगा पत्ते-पत्ते में तेरे सोज़-ए-इश्क़
रखना संभाल के अमानत, बनायेंगे कभी गोर-ए-लरज़ॉं हम
समझेगा क्या मेरी दाद व फ़रियाद को यह ज़माना
यह तो एक इज्ज़ था, कर बैठे जिसे अफ़शॉं हम
आता न था दिल को चैन कभी न कभी ऐ रियाज़
यह भी एक मर्ज़ था, बना बैठे क़लम को राज़दॉं हम

पहले तो पकड़ इस जासूस को कहते हैं जिसे नफ़्स
आ न सकेगा गिरिफ़्त में, न कर फ़क़ीरी में उमर तबाह
इधर तो चाहिये इल्म व हिल्म और दिल कुशादा जानी
फिर सब्र व रज़ा और मुर्शिद जो हो राहों से आगाह

न छेड़ क़िस्सा बाद-ए-निकहत का वीराने में, ऐ दीवाना-ए-दिल
ढूँढ न शहर-ए-ख़मूशाँ में वह शहनाइयाँ, ऐ मस्तान-ए-दिल
रख न तमन्ना कुछ इन लाशों से सितारों के अलावा
था बेशक ख़ाकी तू , हो गया अब जो अ़र्शियाना-ए-दिल
न रखा उम्मीद हमसफ़र से कुछ ऐ महबूबा
था जो कभी शैदाई तेरा, था वह पुराना दिल
न रखा तू भी आस कोई ऐ मेरी जन्नत
पाला था आग़ोश में, हो गया वह बेगाना दिल
बना के लहद मेरी रो लेना दो-चार दिन
था जो सपूत तेरा, मिट गया वह फ़साना-ए-दिल
कर देना भरती यतीमख़ाने में भी इनको
मर गया बाप उनका, ढूँढते-ढूँढते ख़ज़ाना-ए-दिल

* दीन-ए-हुसैन (हुसैनधर्म) के प्रति *

मिला जिससे ईमान कुछ, गिरा वह साक़िब-ए-शहाब था
लरज़ी मिट्टी जिसके ख़ून से वह मुहाफ़िज़ नूर-ए-किताब था
अट गया फिर धूल में उसका मुर्ग़-ए-लाहूती
कर न सका परवाज़ फिर, तिशना दुनिया व मआब था
हो गये फिर पेवस्त उसके बैज़ै ख़ाक में
हुआ फिर ताएर भी ख़ाकस्तर, जो शोला आफ़ताब था
समाई उसमें वह बू , आई फिर वह ख़ू
भूला सबक़ वह लाया जो टुकड़ा निसाब था
ढूँढ के आसान हीला, मज़हब में तरमीम की
निकले फिर हीले कई, मुल्ला व मुफ़ती बे हिसाब था

न तासीर-ए-गुफ़तार, न ताक़त-ए-रफ़तार, न उरूज-ए-किरदार तेरा
न ख़ौफ़-ए-क़बर, न याद-ए-खुदा, तेरी यह मुसलमानी क्या है ?
पढ़ के काफ़िर एक ही बार लाइलाह इल्लल्लाह हो गया खुल्दी
नहीं असर धड़ाधड़ ला इलाओं से, यह ना तवानी क्या है ?
माल मस्त, हाल मस्त, ज़ाल मस्त, बन न सका लाल मस्त
बैठे हो आड़ में दीन की यह सबक़-ए-बेईमानी क्या है ?
शब बेदार तू , परहेज़गार तू , न हक़दार तू
समझता है ख़ुद को मोमिन और नादानी क्या है ?

रखा था जिसने भी सब्र, उसका मुक़ाम इंतेहा होता है
कि नहीं है जिनका आसरा कोई, उनका ख़ुदा होता है
हुआ गर बर्बाद राह-ए-हक़ में, वक़्त-ए-जवानी
वही है बायज़ीद, जो पुतला-ए-वफ़ा होता है
मारा गर हवस व शहवत को रहके दुनिया में
वही ताल-ए-क़िस्मत जो एक दिन बाख़ुदा होता है
की गिर्याज़ारी गुनहगार ने किसी वक़्त-ए-पशेमानी
कभी न कभी वह काबे में सिजदा गिराँ होता है

हम इश्क़ में बर्बाद, वह बर्बाद हमारे जाने के बाद
हुई इश्क़ को तसल्ली कितनी जानें रूलाने के बाद
आये याद बच्चे, आया सब्र फिर आँसू बहाने के बाद
न रही ताक़त-ए-गुफ़तार अब यह दुखड़ा सुनाने के बाद

कहा इक़बाल ने दर्द-ए-दिल के वास्ते आया आदमी
समझे थे हम शायद इक़बाल से कुछ भूल हुई
घूमते रहे हम भी कुछ अर्सा तक इन गिरदाबों में
हुआ जब दिल को दर्द फिर ज़िंदगी कुछ हुसूल हुई
यह हीला-ए-नफ़्स था, बुत में भी हमारे
समझा नफ़्स को, दिलको ताज़गी क़ुबूल हुई
आ गये थे अव्वल रूजअ़त में पाकर यह सबक़
समझाया जो हक़ बाहू ने, कुछ अ़क़्ल दख़ूल हुई
न ख़िदमत से न ही सख़ावत से हुआ कोई तग़य्युर
हुआ जब ज़िक्र क़ल्ब जारी कुछ रोशनी हलूल हुई

MFI United Kingdom
younus38@yahoo.com, younus38@hotmail.com
mfi_emergency24hours@yahoo.com, mmk_general_secretary@yahoo.com
MFI United Arab Emirates
shahi_gulam@yahoo.com, amjadgohar75@yahoo.com
MFI United States of America
mfi_america@yahoo.com, mfi_usa@yahoo.com
MFI Thailand
mmk_thailand@yahoo.com
MFI Sri lanka
mfi_srilanka@yahoo.com
MFI Canada
mfi_canada@yahoo.com

MFI India
mfi_india@yahoo.com, KalkiAvatar_foundation@yahoo.com,
mfi_delhi@yahoo.com, mfi_bombay@yahoo.com
mfi_chennai@yahoo.com, mfi_kerala@yahoo.com, mfi_kolkatta@yahoo.com
Mob: Waseem Gohar, Parvez Gohar 9870188929, Tel: Rizwan Gohar 05466-228260

* पुस्तक के परिचय के लिये कुछ उद्धरण *

1- यदि आप किसी धर्म में हैं परंतु ईश्वर के प्रेम से वंचित हैं, इनसे वह बेहतर हैं जो किसी धर्म में नहीं परंतु ईश्वरप्रेम रखते हैं।

2- प्रेम का संबंध दिल से है, जब दिल की धड़कन के साथ अल्लाह-अल्लाह मिलाया जाता है, तो वह ख़ून द्वारा नस-नस में पहुँच कर आत्मा को जगाता है। फिर आत्माएँ ईश्वर के नाम से तृप्त हो कर ईश्वरप्रेम में चली जाती हैं।

3- ईश्वर (रब्ब) का कोई भी नाम चाहे किसी भी भाषा में हो आदरणीय है परंतु ईश्वर का अस्ली नाम सुरयानी भाषा में अल्लाह है जो कि आकाश वासियों की भाषा है, इसी नाम से फ़रिश्ते उसे पुकारते हैं और हर अवतार के धर्ममंत्र के साथ संलग्न है।

4- जो भी व्यक्ति सच्चे दिल से ईश्वर की खोज में जल एवं थल में है वह भी आदरणीय है।

5- इस दुनिया में एक ही समय में भिन्न-भिन्न स्थलों में कई आदम (शंकर) आये। समस्त आदम दुनिया में दुनिया की ही मिटटी से बनाये गये, जबकि अंतिम आदम (शंकर जी) जो अरब में दफ़न हैं स्वर्ग की मिट्टी से एक बनाये गये, इनके अतिरिक्त किसी और आदम को फ़रिश्तों ने सिजदा नहीं किया। इब्लीस इसी आदम (शंकर जी) की संतानों का शत्रु हुआ।

6- मनुष्य के शरीर में सात प्रकार के प्राणी हैं, जिनका संबंध भिन्न-भिन्न आकाशों, भिन्न-भिन्न स्वर्गों और मनुष्यों के शरीर में भिन्न-भिन्न कार्यों से है। यदि इनको नूर की ताक़त पहुँचाई जाये तो यह उस मनुष्य के रूप में एक ही समय में अनेकों स्थानों यहाँ तक कि संतों, अवतारों (वलियों, नबियों) की सभा और रब्ब से बातचीत या दर्शन तक पहुँच सकते हैं।

7- प्रत्येक मनुष्य के दो धर्म होते हैं, एक शरीर का धर्म जो मृत्योपरान्त समाप्त हो जाता है, दूसरा आत्माओं का धर्म जो कि सृष्टिकाल में था अर्थात- ईश्वरप्रेम, इसी के द्वारा मनुष्य का पद (मरतबा) ऊँचा होता है।

8- समस्त धर्मों से उच्चतर ईश्वर का इश्क़ है और सब आराधनाओं (इबादात) से उच्चतर ईश्वरदर्शन है।

9- मनुष्य, पशुओं, वृक्षों, और पत्थरों से संबंधित जानकारियाँ, कि यह किस प्रकार अस्तित्व में आये और क्यों कोई हराम और कोई हलाल हुआ।

10- आत्माओं और फ़रिश्तों के ईश्वराज्ञा (अमर-ए-कुन) से भी पहले कौन से प्राणी (मख़लूक़) थे? वह कौन सा कुत्ता था जो हज़रत क़तमीर बनकर स्वर्ग में जायेगा? और वह कौन से लोग हैं जिनकी आत्माओं ने सृष्टिकाल में ही धर्ममंत्र (कलिमा) पढ़ लिया था?

वह कौन से बंदे का रहस्य है जो इस पुस्तक में वर्णित नहीं है?
जानकारी और तहक़ीक़ात के लिये इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

For Internet version, please visit us on: http//www.goharshahi.com